Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५८
१

॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

ITIHÁS TIMIRNÁŚAK.

A HISTORY OF INDIA,

IN THREE PARTS

BY

RAJÁ SIVAPRASÁD, C.S.I.

तीन खण्डों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब
लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार
राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

दूसरा खण्ड

PART II.

प्रगट रहे कि पश्चिमोत्तरदेश के श्रीयुत साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक
इन्स्ट्रक्शन बहादुर की आज्ञा के बिना, सन् १८४७ ई०
के क़ानून २० के अनुसार किसी को अधिकार नहीं है
कि इस पुस्तक वा इसके आशय को छापे ॥

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया
सन् १८७४ ई०

3rd Edition 15,000 Copies,
Price per Copy, 4 Annas.

तीसरी बार १५,००० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ।) आने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

ITIHÁS TIMIRNÁSAK.

A HISTORY OF INDIA,

IN THREE PARTS

BY

RAJÁ SIVÁPRASÁD, C.S.I.

तीन खण्डों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब
लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार
राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (३) ने बनाया

दूसरा खण्ड

PART II.

प्रगट रहे कि पश्चिमोत्तरदेश के श्रीयुत साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक
इन्स्ट्रक्शन बहादुर की आज्ञा के बिना, सन् १८४७ ई०
के क़ानून २० के अनुसार किसी को अधिकार नहीं है
कि इस पुस्तक वा इसके आशय को छापे ॥

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया
सन् १८८५ ई०

3rd Edition 15,000 Copies,
Price per Copy, 4 Annas.

तीसरी बार १५,००० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ।) आने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

ITIHÁS TIMIRṆÁSAK.

A HISTORY OF INDIA,

IN THREE PARTS,

RAJÁ SÍVAPRASÁD, C.S.I.

तीन खण्डों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब

लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (३) ने बनाया

दूसरा खण्ड

PART II.

प्रगट रहे कि पश्चिमोत्तरदेश के श्रीयुत साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन बहादुर की आज्ञा के बिना, सन् १८४७ ई० के क़ानून २० के अनुसार किसी को अधिकार नहीं है कि इस पुस्तक वा इसके आशय को छापे ॥

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया

सन् १८७५ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

6418
Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

333
A2510

Price Rs. 14/=

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

PREFACE

In this I have endeavoured (a thing nearly impossible) to unite fulness of information with brevity of narrative, and I trust that from it may be derived a tolerably clear idea of the origin and progress of the British Empire in India.

S. P.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

No.———
JAMMU

इतिहास तिमिरनाशक

दूसरा खण्ड

आगे अंगरेज़ों को यहां आने के लिये समुद्र का रास्ता मालूम न था जहाज़ी तिजारत यहां से केवल ईरान अरब और मिसर अथवा चीनवालों के साथ जारी थी अर्थात् ये लोग अपने जहाज़ अरब और बंगाले ही की खाड़ी के अन्दर चलायो करते थे समुद्र को असीम और अपार समझ कर कदापि उन खाड़ियों के बाहर न जाते और यह तो कब उनका हियाव हो सकता था कि हिन्द के समुद्र से निकल कर अफ़्रीका के पश्चिम अटलांटिक समुद्र में पहुंचते लेकिन जो सब चीज़ें हिन्दुस्तान से जहाज़ों पर मिसर और बसरे को जाती थीं और फिर वहां से खुश्की और तरी की राह फ़रंगिस्तान में पहुंचती थीं उनकी तिजारत में इस क़दर फ़ाइदा उठता था कि फ़रंगिस्तानवाले यहां की सीधी राह पाने के लिये निहायत बेचैन थे और हर तरफ़ से उसकी ढूंढ खोज कर रहे थे कोई * यह समझ कर कि पृथ्वी गोल है हिन्दुस्तान आने के लिये अपना जहाज़ सीधा पश्चिम को चलाता और अमरीका के किनारे जा अटकता कोई † यह समझ कर कि पुराने महाद्वीप के चारों ओर समुद्र है किनारे किनारे उत्तर को ले जाता और वहां उत्तर समुद्र के जमे हुए बर्फ़ में फंस रहता और कोई ‡ यह समझ कर कि अफ़्रीका के पूर्व हिन्दुस्तान है उसके गिर्द घूमने को निकलता पर आधी दूर जाके मारे तूफ़ान के पीछे मुड़ आता और उस जगह का नाम तूफ़ानी अंतरीप रखता यहां तक कि सन्

* कोलम्बस् ॥ † डच और अंगरेज़ ॥ ‡ बार्थोलोम्यू डिआज़् ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१४६७ में पुर्टगाल के बादशाह इमानुअल ने वास्कोडिगामा को तीन जहाज़ लेकर दक्खन की राह हिन्दुस्तान जाने का हुक्म दिया उसने न कुछ तूफ़ान का ख़याल किया न तूफ़ानी अंतरीप का चलते चलते प्राय ग्यारह महीने के अर्से में अफ़्रीका घूम कर मलीबार के किनारे कल्लीकोट में लंगर आ डाला उस समय वहां के राजा का नाम पुर्टगालवालों ने शमोरिस् लिखा है वह तो इनकी ख़ातिर्दारी करना चाहता था लेकिन अरबवालों ने डाह खाके उसका दिल इन से फेर दिया वास्कोडिगामा ने जब यह दर्याफ़्त किया फ़ौरन् लंगर उठा के पाल अपने मुल्क की तरफ़ उड़ाया दूसरे साल पुर्टगाल के बादशाह ने १३ जहाज़ रवाना किये और उन पर आठ पादरी और १२०० सिपाही भी भेजे अलवारिज् काब्रल उनका अफ़सर था छ जहाज़ इन में से कल्लीकोट पहुंचे राजा इसकी भीड भाड़ देखकर दबदबे में आ गया जिन हिन्दुओं को वास्कोडिगामा जाते वक़्त यहां से पकड़ ले गया था और अब अलवारिज् काब्रल वापस लाया था उन्हों ने पुर्टगाल का बहुत बढ़ावे के साथ बयान किया निदान राजा ने पुर्टगालवालों को कल्लीकोट में कोठी रखने की इजाज़त दी और फिर धीरे धीरे इन्हों ने और भी जगह कोठी खोलनी शुरू की सन् १५१० में विजयपुरवालों से गोवा छीन लिया और तब से बराबर वही उनका यहां दारुल्हुकूमत बना रहा ॥

पुर्टगालवालों की देखा देखी डच और फ़रासीसवाले भी अपने जहाज़ इधर लाने लगे फिर यह कब हो सकता था
१५९९ ई० कि अंगरेज़ चुपचाप बैठे रहें सन् १५९९ में इंगलिस्तान के कुछ आदमियों ने साझा करके तीस लाख रुपये की पूंजी इकट्ठी की और उस वक़्त की मलिका क्वीन अलीज़ेबथ से इस मज़मून की एक सनद लेली कि पन्दरह बरस तक बे उनकी इजाज़त कोई दूसरा आदमी उनके मुल्क का पूरब में तिजारत न करने पावे साझियों को अंगरेज़ी में कम्पनी कहते हैं इसी लिये इन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साझियों का नाम ईस्ट इंडिया कम्पनी * पड़ गया इनका जलसा जो साल में चार बार अर्थात् सिमाहीवार हुआ करता था कोर्ट आफ़ प्रोप्राइटर्स अर्थात् मालिकों की कचहरी कहलाया उस में जो पांच हज़ार रुपये और उस से ऊपर के हिस्सेदार थे उन्हें राय देने का इख़्तियार था और आईन क़ानून बनाना और नफ़े का तकसीम करना भी इन्हीं के हाथ था बाक़ी सब काम के लिये यह अपने दर्मियान से साल के साल चौबीस आदमी कारबारी मुक़र्रर कर देते थे इस चौबीसों का नाम कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स रहा बीस हज़ार से कम का हिस्सेदार डैरेक्टर नहीं हो सकता था और उनका मीरमजलिस चेअरमैन कहलाता था हिन्दुस्तान में होते होते तीन इहाते हो गये अर्थात् कलकत्ता बम्बई मंदराज और तीनों में तीन प्रेसिडेंट अथवा गवर्नर अपनी अपनी कौंसल समेत रहने लगे उस समय मुल्की साहिब लोगों के कुल चार दर्जे थे पांच बरस तक मुतसद्दी पांच से आठ तक कोठीवाले आठ से ग्यारह तक छोटे सौदागर और ग्यारह बरस हिन्दुस्तान में रहने के बाद बड़े सौदागर कहलाते थे इन्हीं बड़े सौदागरों में से पुराने साहिबों को चुनकर कौंसल का मिम्बर बनाते थे ॥

निदान सन् १६०९ में सर हिनरी मिडल्टन इस कम्पनी १६०९ ई० का भेजा हुआ तीन जहाज़ लेकर सूरत में आया लेकिन ख़रीद फ़रोख़्त के बाब में हाकिम से तकरार हो जाने के बाइस उस वक़्त वहां कोठी खोलने की इजाज़त नहीं मिली सन् १६१३ में १६१३ ई० जहांगीर ने इन्हें सूरत घोघा खंभात और अहमदाबाद में और फिर थोड़े ही दिनों बाद शाहजहां ने सिंध और बंगाले में भी कोठियां खोलने की इजाज़त दी महसूल साढ़े तीन रुपया सैकड़ा ठहरा यह उस समय किस के ख़याल में था कि इसी कम्पनी के नौकर उसकी औलाद और उसके जानशील को क़ैद करके रंगून लेजावेंगे और सारे हिन्दुस्तान में अपना सिक्का चलावेंगे ॥

* मश्रिक़ी हिन्दुस्तान के साझी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१६३९ ई० सन् १६३९ में इन्हों ने चंद्रगिरि के राजा से जो विजय-नगरवालों की औलाद में से था इजाज़त लेकर मंदराज बसाया
१६६८ ई० और वहां सेंटजार्ज क़िला बनाया सन् १६६८ में इंगलिस्तान के बादशाह दूसरे चार्लस ने बम्बई का टापू जो उसने पुर्टगाल-वालों से दहेज़ में पाया था सौ रुपये साल ख़राज पर कम्पनी को दे डाला कलकत्ता भी उन दिनों केवल एक गांव सा था छोटानटी और गोविन्दपुर इन दोनों गांवों के साथ उसकी सनद दिल्ली के बादशाह से हासिल करके वहां इन्हों ने फ़ोर्ट विलियम क़िला बनाना शुरू कर दिया ॥

१७१५ ई० सन् १७१५ में कलकत्ते के प्रेसिडेंट ने कुछ तुहफ़े तहाइफ़ के साथ दो साहिबों को एल्चियों के तौर पर फ़र्रुख़सियर के दर्बार में भेजा बादशाह उन दिनों बीमार था मर्ज़ी भगवान की इन्हीं एल्चियों के साथ हमिल्टन नाम जो डाक्टर था उसी के इलाज से चंगा हुआ हुक्म दिया इनआम मांग जो मांगेगा मुंह मांगा पावेगा इसने अपने लिये तो कुछ न मांगा पर अर्ज़ किया कि अगर जहांपनाह ख़ुश हैं तो कम्पनी को बंगाले में अड़तीस गांव की ज़मींदारी ख़रीदने की इजाज़त मिले और कलकत्ते के प्रेसिडेंट की दस्तक से जो माल रवाना हो महसूल के लिये उसकी तलाशी न ली जावे सच पूछो तो डाक्टर हमिल्टन ने बड़ी हिम्मत का काम किया अपना नुक़सान सहके अपने मुल्कवालों का फ़ाइदा चाहना हक़ीक़त में बड़ी हिम्मत का काम है बादशाह ने दोनों बात मंज़ूर कीं उन दिनों में हिन्दुस्तान से छींट और सूती कपड़ा इंगलिस्तान को बहुत जाता था अंगरेज़ों का इरादा था कि कलकत्ते के गिर्द ज़मींदारी लेकर इतने जुलाहे बसावें कि फिर कपड़ों की तलाश गांव गांव न करनी पड़े क्या अपरम्पार महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि यहां के जुलाहे तो जुलाहे ही बने रहे और इंगलिस्तानवाले जहाज़ भर भरकर अब यहां सूती कपड़े पहुंचाने लगे निदान ज़मींदारी तो उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वक़्त बंगाले के सूबेदार ने अंगरेज़ों के हाथ नहीं लगने दी ज़मींदारों को बेचने की मनाही कर दी लेकिन इनके माल पर महसूल मुआफ़ हो जाने से उसे बहुत नुक़सान पहुंचा प्रेसिडेंट ने सारा माल अपनी दस्तक के ज़रिए से मंगाना और रवाना करना शुरू किया अर्थात् जो माल कम्पनी का नहीं था उसको भी अपने और दूसरे साहिबों के फ़ाइदे के लिये दस्तक देकर महसूल की तलाशी से बचा दिया ॥

इस अर्से में फ़रासीसियों ने पटुच्चेरी को मज़बूत कर लिया १७४४ ई० था जब सन् १७४४ में इंगलिस्तान और फ़रासीस के दर्मियान दुश्मनी पैदा हुई तो उन्हों ने हज़ार दो हज़ार सिपाही भेजकर मंदराज का मुहासरा कर लिया अंगरेज़ वहां उस वक़्त ३०० से अधिक न थे पांच दिन घिरे रह कर फ़रासीसियों के क़ौल क़रार पर दर्वाज़ा खोल दिया और जो कुछ था उनके हवाले किया लेकिन थोड़े ही दिनों बाद कुछ अंगरेज़ी जंगी जहाज़ आगये तो इन्हों ने मंदराज में भी क़ब्ज़ा किया और पटुच्चेरी जा घेरा पर महीने भर बाद बरसात आजाने के कारन घेरा उठा लेना पड़ा ॥

तनजोर का राजा प्रतापसिंह नाबालिग़ था उसके भाई साहूजी ने अंगरेज़ों से कहा कि तनजोरवाले प्रतापसिंह से नाराज़ और मुझ से राज़ी हैं यदि गद्दी दिला दो देवीकोटे का क़िला और ज़िला तुम्हारे हवाले करूं अंगरेज़ी फ़ौज चढ़ गई क्लाइव तब लेफ़्टिनेंट था धावा इसी के नाम से हुआ क़िला टूटने पर प्रतापसिंह ने देवीकोटा अंगरेज़ों को दे दिया और साहूजी के खाने को कुछ सालाना मुक़र्रर कर दिया अंगरेज़ इस बात से राज़ी हो गये ॥

पटुच्चेरी का फ़रासीसी गवर्नर डूप्ले अंगरेज़ों से बड़ी लाग रखता था जो बात इस मुल्क में अब अंगरेज़ों को है वह उसे फ़रासीसियों के लिये हासिल किया चाहता था सन् १७४८ में दक्खन के सूबेदार १७४८ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आसिफ़जाह के मरने पर * जब उसके बेटे पोतों में तकरार हुई डूप्ले ने उसके पोते मुज़फ़रजंग को मदद दी इसलिये जब मुज़फ़रजंग गद्दी पर बैठा डूप्ले को कृष्णा से कुमारी अंतरीप तक की हुकूमत दे दी और कर्नाटक का नव्वाब भी अर्काट में उसी के दोस्त चन्दा साहिब को जो पहले नव्वाबों से कुछ रिश्ता रखता था बना दिया आसिफ़जाह के बनाये नव्वाब अनवरुद्दीन का बेटा मुहम्मदअली तिरुच्चिनापल्ली का हाकिम बना रहा अंगरेज़ मुहम्मदअली के तरफ़दार थे जब चन्दा साहिब ने फ़रासीसियों से मदद लेकर तिरुच्चिनापल्ली पर चढ़ाई की क्लाइव ने २०० गोरे और ३०० सिपाहियों से जाकर अर्काट लेलिया चन्दा साहिब के आदमियों ने क्लाइव को ५० दिन तक अर्काट में घेर रक्खा और उसे वहां से निकालने की तदबीर में कोई दक़ीक़ा बाक़ी न छोड़ा यह १०००० सवार पियादों की भीड़ भाड़ रखते थे और १५० फ़रासीसी इनके साथ थे लेकिन क्लाइव ने ऐसी बहादुरी दिखलाई और उनके दांत खट्टे किये कि सब के सब नाकाम फिरे कहते हैं कि क़िले में जब रसद कम होने पर आई सिपाहियों ने क्लाइव से कहा कि साहिब भात गोरों के लिये ले लो हम हिन्दुस्तानी उसके माड़ से गुज़ारा कर लेंगे इसी एक बात से समझ लो कि क्लाइव कैसा मिहर्बान अफ़सर था और अपने आदमियों को कैसा राज़ी और ख़ुश रखता था सच है जब ऐसा था तभी उस से ऐसा काम भी बनता था॥

यद्यपि चन्दा साहिब एक तंजोरी जरनैल मानकजी के हाथ से जो मुहम्मदअली का मददगार था मारा गया पर जब तक डूप्ले पटुच्चेरी का गवर्नर रहा अंगरेज़ और फ़रासीसियों की तकरार न मिटी कहीं न कहीं किसी न किसी बहाने से लड़ाई होती रही अगर डूप्ले रहता न जानें फ़रासीसियों की अमल्दारी इस मुल्क में कहां तक पहुंचाता पर फ़रासीसियों ने उसकी कुछ भी क़दर न की बदल दिया और अंगरेज़ों से दबकर चारों

* यह १०४ बरस का होकर मरा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्कार की हुकूमत छोड़कर जो उनके एक उहदेदार बस्सी ने दक्खन के सूबेदार सलामतजंग से हासिल की थी सन् १७५४ में सुलह का अहद पैमान कर लिया मुहम्मदअली बड़ी धूम धाम से अर्काट में गद्दी पर बैठा अंगरेज़ों की बदौलत सारे करनाटक का नव्वाब बन गया यद्यपि सलामतजंग को दक्खन की सूबेदारी हासिल करने में बस्सी से बहुत बड़ी मदद मिली थी लेकिन इन दिनों कई कारन से वह उस से नाखुश हो गया था और फ़रासीसियों के बदल अंगरेज़ों को अपने यहां रक्खा चाहता था केवल बंगाले में बखेड़ा हो जाने के सबब उसे उस वक्त मंदराज से अंगरेज़ी सिपाह न मिल सकी ॥ १७५४ ई०

सन् १७५६ में नेकनाम अलीवर्दीख़ां के मरने पर उसके भतीजे का बेटा और उसका नाती सिराजुद्दौला बंगाले बिहार और उड़ेसे का सूबेदार हुआ वह निहायत तुंदमिज़ाज़ बदनीयत और ज़ालिम था अंगरेज़ों से दिली नफ़रत रखता था जब सुना कि उसके चचा के दीवान ने अपना सब मालमता और घरबार के लोगों को उसके पंजे से बचाने के लिये अपने लड़के किशनदास के साथअंगरेज़ों की हिमायत में कलकत्ते भेज दिया तुरन्त एक आदमी रवाना किया कि उसको अंगरेज़ों से मांग लावे वह आदमी कलकत्ते बिसातियों के भेस में पहुंचा सेठ अमीचंद के मकान पर ठहरा अमीचंद ने उसे अंगरेज़ों से मिलाया अंगरेज़ों ने इस में अमीचंद की साज़िश समझी और उसकी बात को कुछ ख़याल में न लाये फिर सिराजुद्दौला ने एक आदमी से यह कहला भेजा कि तुम कलकत्ते में क़िले की मज़बूती मत करो इस बात पर भी अंगरेज़ों ने कुछ ध्यान न दिया तब तो सिराजुद्दौला का खून जोश में आया और गुस्से की आग भड़की लड़ाई का बहाना बहुत अच्छा पाया पहले तो क़ासिमबाज़ार में जो अंगरेज़ों की कोठी थी उसे ज़ब्त कर लिया और फिर उन्हें कलकत्ते के क़िले में जा घेरा गोरेसिपाही जंगी उस वक्त वहां सो भी मौजूद न थे क़िले के बचने की कोई भी उमेद दिख- १७५६ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाई न दो बहुत से अंगरेज़ तो ड्रेक साहिब गवर्नर के साथ जहाज़ और किश्तियों पर सवार होके वहां से टल गये और जो बेचारे बेख़बरी में क़िले के अन्दर रहे वह दूसरे दिन सिराजुद्दौला की क़ैद में आये जब उनके अफ़सर हालवेल साहिब को मुश्कें बांधकर उसके साम्हने लाये उसने फ़ौरन् उसकी मुश्कें खुलवा दीं और कहा कि ख़ातिर जमा रक्खो तुम्हारा कुछ नुक़सान न होने पावेगा लेकिन रात को जब क़ैदियों के रखने के लिये कोई मकान न मिला तो सिराजुद्दौला के आदमियों ने १४६ अंगरेज़ों को एक कोठरी में जो सिर्फ़ १८ फ़ुट लम्बी और १४ फ़ुट चौड़ी थी बंद कर दिया इस कोठरी का नाम अंगरेज़ी में ब्लैकहोल अर्थात् कालीबिल रक्खा गया है जो कुछ उन क़ैदियों के जी पर रात को बीती उन्हीं का जी जानता होगा बहुतेरे घायल थे बहुतेरे शराब के नशे में गर्मी की शिद्दत थी प्यास निहायत थी सुबह को जब दर्वाज़ा खुला कुल २३ जीते निकले सो शकल उनकी भी मिसल मुर्दों के बन गई थी हालवेल साहिब को सिराजुद्दौला के साम्हने ले गये उसने इसकी कुछ भी दाद फ़र्याद न सुनी यही पूछता रहा कि बतलाओ अंगरेज़ों ने ख़ज़ाना कहां गाड़ा है और उसके और दो और अंगरेज़ों के पैरों में बेड़ियां डलवा कर इन तीनों को तो एक खुली किश्ती पर क़ैद रहने के लिये मुर्शिदाबाद भेजा और बाक़ी को रिहा कर दिया मुर्शिदाबाद में अलीवर्दीख़ां की बेगम ने इन तीनों को भी सिराजुद्दौला से सिफ़ारिश कर के रिहा करा दिया जब यह ख़बर मंदराज में पहुंची वहांवालों ने ९०० गोरे और १५७० सिपाही देकर क्लाइव को जो अब इंगलिस्तान से लेफ़्टिनेंट कर्नल हो आया था १० जहाज़ों पर कलकत्ते रवाना किया

१७५७ ई० दूसरी जनवरी सन् १७५७ को क्लाइव ने कलकत्ता लिया तीसरी फ़ेब्रुअरी को सिराजुद्दौला ४०००० आदमियों की भीड़ भाड़ लेकर कलकत्ते के क़रीब पहुंचा लेकिन क्लाइव ने क़िले से निकल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर उस पर एक ऐसा हल्ला किया कि यद्यपि उस हल्ले में क्लाइव को ५२० गोरे १०० सिपाही और दो तोपें खोकर फिर क़िले में पनाह लेनी पड़ी पर सिराजुद्दौला ने २२ अफ़सर और ६०० आदमियों के मारे जाने से घबरा कर इस शर्त्त पर सुलह कर ली कि जो कुछ कम्पनी का माल असबाब लूट और ज़ब्ती में आयाथा सब लौटा दिया जावे कम्पनी के आदमी कलकत्ते में क़िला चाहे जैसा मज़बूत बनावें टकसाल अपनी जारी करें अढतीसों गांव पर जिनकी सनद १७१७ से उन्हों ने पाई थी अपना क़ब्ज़ा रक्खें और महसूल की मुआफ़ी के वास्ते उसकी दस्तक काफ़ी समझी जावे इस में शक नहीं कि यह शर्त्त सिराजुद्दौला ने सिर्फ़ भुलावा देने और काबू पाने के लिये कर ली थी जी में उसके दग़ा थी वह अंगरेज़ों से दिली नफ़रत रखता था और फ़रासीसियों की पच्छ करता था बरन उन्हें नौकर भी रखने लगा था क्लाइव ने ख़ूब समझ लिया था कि इस मुल्क में या तो अंगरेज़ ही रहेंगे और या फ़रासीसी, दोनों का हर्गिज़ गुज़ारा नहीं एक मियान में दो तलवारों का रहना कभी होता नहीं पस जब सिराजुद्दौला ने फ़रासीसियों का सहारा ढूंढा तो क्लाइव को ख़ाहमख़ाह उसका इलाज करना पड़ा सिराजुद्दौला से सब नाख़ुश थे उसके ज़ुल्म से लोग तंग आगये थे हर एक को उसके हाथ से अपनी इज्ज़त का ख़ौफ़ था हर एक अपने जी में उसका ज़वाल चाहता था निदान उसके बख़शी अलीवर्दीखां के दामाद मीर-जाफ़र और उसके दीवान राय दुल्लभ और इस ग्रंथकर्त्ता के परदादा के चचेरे भाई जगतसेठ महताबराय ने अपनी जान माल और इज्ज़त आबरू उस ज़ालिम के हाथ से बचाने को मुर्शिदाबाद के रज़ीडंट वाट्स साहिब की मारफ़त क्लाइव के पास यह पयाम भेजा कि अगर आप सिराजुद्दौला की जगह पर मीरजाफ़र को सूबेदार बनाओ तो हम सब आप के मददगार हैं क्लाइव ने कहला भेजा कि "ख़ातिर्जमा रक्खो मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५००० आदमी लेकर आता हूं जिन्हों ने आज तक कभी पीठ नहीं दिखलाई अगर तुम सिराजुद्दौला को गिरफ़ार न करसको हम लोग ज़रूर उसे मुल्क से निकाल सकेंगे" और फिर साथ ही उन शर्तों पर जो सिराजुद्दौला के साथ ठहरी थीं मीरजाफ़र से एक अहदनामा लिखवा लिया लेकिन उस में इतना और बढ़ाया गया कि फ़रासीसियों का जो कुछ हो वह अंगरेज़ों का और फ़रासीसी हमेशा के लिये बंगाले से निकाल दिये जावें और मीरजाफ़र की तरफ़ से करोड़ रुपये कम्पनी को पाचास लाख कलकत्ते के अंगरेज़ों को बीस लाख हिन्दुस्तानियों को सात लाख अर्मनियों को पचास लाख सिपाही और जहाज़ियों को और दस लाख कौंसल के मेम्बरों को नुक़सानी के तौर पर मिलें और कलकत्ते से दक्खन कल्पी तक कम्पनी की ज़मींदारी समझी जावे ॥

सेठ अमीचन्द का कलकत्ते में चार लाख रुपय लूटा गया था और कुछ और भी नुक़सान हुआ था वह सिराजुद्दौला के ज़रा मुंह लग गया था और इस बाइस वाट्स साहिब का भी उस से बहुत काम निकलता था वाट्स साहिब ने अमीचन्द को भी इस मशवरे में शरीक किया लेकिन अमीचन्द को लालच ने घेरा कहा कि जो कुछ अंगरेज़ों को ख़ज़ाने से मिले ५) सैकड़ा मुझे दो नहीं तो मैं अभी सिराजुद्दौला से यह सारा भेद खोल दूंगा वाट्स ने क्लाइव को लिखा क्लाइव ने देखा कि अमीचन्द तो हम सब को आफ़त में डाला चाहता है नाचार दो काग़ज़ों पर दो तरह का अहदनामा लिखा लाल काग़ज़ पर जो अहदनामा लिखा उस में तो अमीचन्द को ५) सैकड़ा देने का इक़रार था औ सफ़ेद काग़ज़ पर जो लिखा उस में उसका नाम ही न था इन दोनों काग़ज़ों पर जब कौंसलवालों के दस्तख़त होने लगे अडमिरल अर्थात् अमीरुल बह्र ने लाल काग़ज़ पर दस्तख़त करने से इन्कार किया लेकिन कौंसिलवालों ने उसका दस्तख़त आप बना लिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानो फ़ार्सी मसल पर काम किया "गर ज़रूरत बुवद रवा बाशद" ॥

निदान क्लाइव तीन हज़ार आदमी और ६ तोप लेकर कलकत्ते से निकला सिराजुद्दौला भी पचास हज़ार सवार पियादे और ४० से ऊपर तोपें लेकर पलासी तक आया चालीस पचास फ़रांसीसी भी उसके साथ थे तेईसवीं मई को उसी जगह लड़ाई हुई सिराजुद्दौला ने पगड़ी उतार कर मीरजाफ़र के पैरों पर रख दी और कहा कि अब मुआफ़ कीजिये लेकिन उसने यही सलाह दी कि आज लड़ाई मौक़ूफ़ रखिये फ़ौज पीछे हटा लीजिये कल लड़ेंगे; और राय दुल्लभ ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर का मुर्शिदाबाद ही तशरीफ़ ले चलना बिहतर है ॥

निदान सिराजुद्दौला की फ़ौज का मुड़ना था और अंगरेज़ों का चीतों की तरह हिरनों पर लपकना सिराजुद्दौला की फौज भागी अंगरेज़ों ने छ मील तक पीछा किया यही पलासी की फ़तह मानो हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी अमलदारी का नेव जमी ॥

सिराजुद्दौला के पैर मुर्शिदाबाद में भी न जमे भरोसा तो उसे किसी का था ही नहीं और भरोसा उसे तब हो सक्ता जब उसने किसी के साथ कुछ भलाई की होती एक बेगम और एक ख़ोजा साथ लेकर भागा लेकिन राजमहल के नज़दीक एक फ़क़ीर ने उसे पहचान लिया सिराजुद्दौला ने किसी ज़माने में उसके नाक कान कटवाये थे फ़क़ीर ने तुरन्त वहां के हाकिम से ख़बर कर दी वह मीरजाफ़र का भाई था सिराजुद्दौला को बांध कर मुर्शिदाबाद भेज दिया मीरजाफ़र को कुछ किसी क़दर रहम आया लेकिन उसका बेटा मीरन निरा पत्थर था बे अपने बाप का इत्तिला के उसे क़तल करवा डाला सिराजुद्दौला की उमर तब तक बीस बरस की भी नहीं हुई थी ॥

ख़ज़ाने की जब मौजूदात ली गई डेढ़ करोड़ रुपया शुमार में आया तो भी अहदनामे के बमूजिब सब के देने को काफ़ी न था तब यह ठहरा कि आधा तो चुका दिया जावे और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आधा तीन क़िस्त में तीन साल के दर्मियान दिया जावे क्लाइव को मीरजाफ़र ने अहदनामे के सिवा सोलह लाख रुपया और दिया अमीचन्दजी फूले हुए थे उन्हों ने अपने हिसाब से अपना हिस्से का रुपया तीस पैंतीस लाख जोड़ रक्खा था जब अहदनामा पढ़ा गया और इन्हों ने अपना नाम न सुना घबराये और बोल उठे कि साहिब वह तो लाल काग़ज़ पर था क्लाइव ने जवाब दिया कि ठीक लेकिन यह सफ़ेद काग़ज़ है वह लाल काग़ज़ सिर्फ़ आप को सब्ज़ बाग़ दिखलाने के लिये था आप को इस में से एक पैसा भी नहीं मिलेगा अमीचन्द ग़श खाके ज़मीन पर गिर पड़ा नौकर पालकी में डाल के घर ले गये डेढ़ बरस के अन्दर पागल होके मर गया अफ़सोस है कि क्लाइव ऐसे मर्द से ऐसी बात ज़हूर में आवे पर क्या करें ईश्वर को मंज़ूर है कि आदमी का कोई काम बे ऐब न रहे इस मुल्क में अंगरेज़ी अमल्दारी शुरू से आज तक मुआमले की सफ़ाई और क़ौलक़रार की सचाई में मानो धोबी की धोई हुई सफ़ेद चादर रही है केवल इसी अमीचन्द ने उस में यह एक छींटासा लगा दिया है ॥

उधर दक्खन में अंगरेज़ और फ़रासीसियों की लड़ाई न
१७५८ ई० मिटी कौंट लाली ने भी जो १७५८ में फ़रासीसियों की तरफ़ से यहां का गवर्नर जनरल होकर आया था डूप्ले की तरह अंगरेज़ों को उखाड़ना और फ़रासीसियों की अमल्दारी को फैलाना चाहा यहां तक कि अंगरेज़ों ने मौसलीपट्टन उन से छीन कर दक्खन के सूबेदार सलाबतजंग से उसकी और कई और ज़िलों की अपने नाम सनद लिखवाली और यह भी उस से इक़रार ले लिया कि वह फ़रासीसियों से भी कुछ सरोकार न रक्खे और सन् १७६१ में सिवाय कल्लीकोट और सूरत की कोठियों के और कुछ भी फ़रासीसियों के क़ब्ज़े में न छोड़ा कहते हैं कि जब अंगरेज़ों ने पटुच्चेरी लिया और उस पर अंगरेज़ी निशान चढ़ाया क़िले और जहाज़ों पर की तोपें सलामी से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानो कान बहरे करती थीं हज़ार तोपों की सलामी कुछ हंसी ठट्ठा न थी ॥ लाली बुरी तरह से फ़रासीस में क़तल किया गया और फिर तभी से फ़रासीसियों ने निरास होकर यहां अपनी अमल्दारी जमाने का ख़याल बिलकुल छोड़ दिया ॥ हिन्दुस्तान के दिन अच्छे थे क्योंकि अंगरेज़ी अमल्दारी में अगर हज़ार ऐब हों तो भी फ़रासीसी अमल्दारी से करोड़ दर्जे बिहतरी है फ़रासीसियों की जहां कहीं ग़ैर मुल्क में अमल्दारी हुई सिवाय लूट क़तल और रअय्यत की तबाही के और कुछ भी सुनने में नहीं आया और अंग्रेज़ों ने जिस जगह कब्ज़ा किया दिन पर दिन उसकी उन्नति होती गई जिन लोगों ने फ़रासीस की तवारीख़ पढ़ी है और वहांवालों के स्वभाव से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कदापि हमारे इस लिखने पर अंगरेज़ों की ख़ुशामद का शुबहा न करेंगे ॥

सन् १७५९ में दिल्ली के वलीअहद आलीगुहर ने अपने बाप १७५९ ई० बादशाह आलमगीर सानी से नाराज़ होकर अवध के सूबेदार की बहकावट से बिहार पर चढ़ाव किया लेकिन क्लाइव मीरजाफर की मदद को पहुंच गया इसलिये वलीअहद को भागना पड़ा बादशाह ने जो ज़मीदारी कम्पनी को दी थी उसकी मालगुज़ारी तीस लाख रुपये के क़रीब जगतसेठ की सिफ़ारिश से जागीर के तौर पर ख़िताब के साथ देकर क्लाइव को अपने अमीरों में शुमार कर लिया और शुक्का भी लिखा कि वलीअहद को गिरफ़्तार करो ॥

सन् १७६० में क्लाइव इंगलिस्तान को गया और वहां अपने १७६० ई० बादशाह से बड़ा आदर और लार्ड का ख़िताब पाया इस क़दर दौलतमन्द होकर आज तक कभी कोई यहां से फ़रंगिस्तान को नहीं लौटा वलीअहद अपने बाप के मारे जाने पर जब बादशाह हुआ शाहआलम अपना लक़ब रक्खा फ़ौज लेकर बिहार पर चढ़ा पटने के साम्हने आ पड़ा अंगरेज़ों ने उसे फिर शिकस्त दी और पीछा किया मीरन भी साथ था डेरे पर बिजली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिरने से मरगया मीरजाफ़र के दामाद क़ासिमअलीख़ां की नीयत बिगड़ी उसने बर्दवान मेदनीपुर और चटगांव ये तीन ज़िले और पांच लाख रुपये कम्पनी को और बीस लाख कौंसल वालों को देने का क़रार करके अंगरेज़ों को इस बात पर राज़ी कर लिया कि मीरजाफ़र को तो वह सूबेदारी से माज़ूल करें और क़ासिमअलीख़ां को उसकी जगह मसनद पर बिटाएं बादशाह से भी चौबीस लाख रुपया साल अदा करने के इक़रार पर सनद हासिल हो गई क़ासिमअलीख़ां का इरादा मीरजाफ़र की जान लेने का था लेकिन वह कलकत्ते में जा रहा इस से बचगया बहाने अंगरेज़ों के पास मीरजाफ़र की माज़ूली के बहुत थे अव्वल वह क़िस्तों का रुपया बिलकुल अदा नहीं कर सका था दूसरे बादशाह से लिखा पढ़ी करता था तीसरे डच लोगों से साज़िश रखता था॥

उन दिनों में कम्पनी के नौकरों को तिजारत की कुछ मनाही न थी तनख़्वाह से अधिक तिजारत में फ़ाइदा उठाते थे पान सुपारी तमाकू इत्यादि सब चीज़ की तिजारत करते थे जब कम्पनी की तरह कम्पनी के नौकरों ने भी माल पर महसूल देना बन्द किया बरन जो लोग कम्पनी के नौकर नहीं थे उनके माल को भी अपने नाम से बे महसूल चलाने लगे क़ासिमअलीख़ां घबराया अपनी आमदनी का एक बड़ासा हिस्सा उड़ जाता देखा कौंसिलवालों को लिखा लेकिन कौंसिलवाले भी तो तिजारत करते थे अपने माल पर महसूल देना किसे अच्छा लगता है क़ासिमअलीख़ां का लिखना कुछ भी ख़याल में न लाये क़ासिमअलीख़ां ने गुस्से में आकर परमिट बिल्कुल मौक़ूफ़ कर दी यह बात सुनकर कि अब किसी के माल पर कुछ महसूल न लिया जायगा अंगरेज़ों के छक्के छूट गये क्योंकि फिर फ़रक़ क्या बाक़ी रहा जिस भाव इनका माल पड़ता था उसी भाव औरों का भी पड़ गया अंगरेज़ों ने क़ासिमअलीख़ां से कहा कि तुम सिवाय हम लोगों के और किसी का माल बे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महसूल मत जाने दो और जब उसने इनका यह ग़ैरवाजिब कहना न मानकर कमर मुक़ाबले पर बांधा इन्हों ने उसकी माज़ूली और मीरजाफ़र की बहाली का इश्तिहार दे दिया मीरजाफ़र ने इन्हें तीस लाख रुपया नक़द देने और बारह हज़ार सवार और बारह हज़ार पियादों का ख़र्च चलाने के लिये इक़रारनामा लिख दिया चौबीसवीं जुलाई को अंगरेज़ी फ़ौज मुर्शिदाबाद में दाख़िल हुई और क़ासिमअलीख़ां वहां से पटने की तरफ़ भागा रास्ते में उसकी फ़ौज से और अंगरेज़ों से गढ़िया और उधवानाले में दो लड़ाइयां हुईं क़ासिमअलीख़ां की तरफ़ से समरू जो साबिक़ फ़रासीसियों के यहां सार्जन्ट था ख़ूब लड़ा लेकिन फ़तह अंगरेज़ों की रही इस ख़ौफ़ से कि जगतसेठ अंगरेज़ों का मददगार है क़ासिमअलीख़ां ने उसे हवालात में अपने साथ रक्खा जब मुंगेर से आगे बढ़ा जगतसेठ महताबराय और उसके भाई सरूपचन्द को रास्ते में अपने हाथ से क़त्ल कर डाला साम्हने खड़ा करके तीरों से मारा उनके साथ सिर्फ़ उनका नमकहलाल ख़िदमतगार चुन्नी रह गया था बहुतेरा समझाया लेकिन साथ न छोड़ा जब क़ासिमअलीख़ां तीर चलाता वह साम्हने आकर खड़ा हो जाता जब वह मरकर गिरगया है तब दोनों भाइयों को तीर लगा है पटने पहुंचकर उस दुष्ट ने प्रायः दो सौ अंगरेज़ों को जिन्हें उसने क़ैद कर रक्खा था कटवा डाला॥

अंगरेज़ों ने करमनासा नदी तक उसका पीछा किया निदान वह इलाहाबाद में बादशाह के पास जाकर नव्वाब वज़ीर शुजा-उद्दौला अवध के सूबेदार को कुछ फ़ौज के साथ चढ़ा लाया और पटने में अंगरेज़ों से लड़कर और शिकस्त खाकर फिर भागा अंगरेज़ों ने फिर पीछा किया बक्सर में शुजा-उद्दौला से एक अच्छी लड़ाई हुई उसके साथ पचास साठ हज़ार सिपाह की भीड़ भाड़ थी और अंगरेज़ों के साथ केवल ८५७ गोरे और ७२१५ हिन्दुस्तानी सवार और पियादे लेकिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शुजाउद्दौला को शिकस्त खाकर भागना पड़ा उसके दो हज़ार आदमी इस लड़ाई में काम आये। बादशाह ने अंगरेज़ों को इस फ़तह की मुबारकबाद दी और लिखा कि खूब हुआ जो मैं अपने वज़ीर की क़ैद से छूटा और फिर वह उस तारीख से अंगरेज़ों की हिमायत से चला आया अंगरेज़ी फ़ौज बनारस तक आई और रास्ते में चनारगढ़ के क़िले को भी घेरा॥

१७६५ ई० सन् १७६५ के आरंभ में मीरजाफ़र परलोक को सिधारा और उसके भाई नजमुद्दौला को अंगरेज़ों ने मसनद पर बिठाया इस से यह क़रार हो गया कि नाइब सूबेदार अंगरेज़ों की सलाह से मुक़र्रर हुआ करे और वे उनकी मंज़ूरी के मौक़ूफ़ न किया जावे॥

तीसरी मई को लार्ड क्लाइव गवर्नर और कमांडरइन चीफ़ होकर फिर कलकत्ते में पहुंचा और इंतिज़ाम की दुरुस्ती के लिये राय दुल्लभ और जगतसेठ खुशहालचन्द को मुहम्मदरज़ाखां नाइब सूबेदार के शामिल किया। जिस रोज लार्ड क्लाइव कलकत्ते में पहुंचा उसी रोज़ शुजाउद्दौला कोड़े में अंगरेज़ों से शिकस्त खाकर और सिवाय अंगरेज़ों पर भरोसा रखने के और कुछ इलाज न देखकर जेनरल कार्नाक के पास चला आया अंगरेज़ों ने उसकी बहुत ख़ातिरदारी की और पचास लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च और इलाहाबाद और कोड़ा लेकर सुलह कर ली बनारस का राजा बलवन्तसिंह बक्सर की लड़ाई में अंगरेज़ों से मिल गया था बरन कहते हैं कि नव्वाब वज़ीर का जो मोरचा इसके सुपुर्द था इसने उस में अंगरेज़ी लशकर चला आने दिया और यही नव्वाब वज़ीर की शिकस्त का बड़ा कारन हुआ इसी लिये इन्हों ने सुलहनामे में यह भी लिखवा लिया कि शुजाउद्दौला बलवन्तसिंह को किसी तरह पर कुछ न छेड़े॥

बादशाह से इस वादे पर कि छब्बीस लाख रुपया सालाना जिसका क़ौल क़रार मीरज़ाफ़र से हुआ था अब बराबर पहुंचा चला जायगा लार्ड क्लाइव ने कम्पनी के लिये बंगाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिहार और उड़ेसा तीनों सूबों की दीवानी का फ़र्मान लिखवालिया निज़ामत नजमुद्दौला को रही लेकिन उस से यह अह्द पैमान होगया कि सिवाय पचास लाख रुपया सालाना लेने के और कुछ सरोकार मुल्क से न रक्खे मुल्क का काम सब अंगरेज़ों के हाथ में रहे लार्ड क्लाइव लिखता है कि नजमुद्दौला इस बात से निहायत खुश हुआ और रुख़सत के वक़्त कहने लगा "अल्हम्दु लिल्लाह अब तो जितने चाहेंगे महल बनायेंगे" सन् १७६६ में नजमुद्दौला मरगया और उसका १७६६ ई० भाई सैफ़ुद्दौला उसकी जगह बैठा" सन् १७६७ में लार्ड क्लाइव १७६७ ई० इंगलिस्तान को चला गया ॥

सन् १७६३ में जब इंगलिस्तान और फ़रासीस के दर्मियान सुलह हुई यह भी शर्त ठहरगई कि सन् १७४९ में यहां जो सब फ़रासीसियों की कोठियां थीं उसके हवाले करदी जावें लेकिन बंगाले की सूबेदारी के इलाक़े में न वह कुछ फ़ौज रक्खें और न कोई क़िला बनावें हिन्दुस्तान में इस गई बला को फिर जगह देना इंगलिस्तानवालों ने दानाई का काम नहीं किया ॥ सन् १७६५ में दक्खन के सूबेदार निजामअली ने जो सन् १७६१ में अपने भाई सलाबतजंग को क़ैद करके मस्नद पर बैठा था कर्नाटक के मुल्क पर चढ़ाव किया लेकिन मुहम्मदअली की मदद पर अंगरेज़ी फ़ौज को मैदान में देख कर पीछे हटा लार्ड क्लाइव ने मुहम्मदअली को बादशाह से कर्नाटक की जुदा सनद दिलवादी और गंटूर छोड़कर शिमाली सर्कार * की वैसी ही एक सनद कम्पनी के नाम लेली परंतु मंदराज की गवर्नमेंट ने ख़ौफ़ में आकर निज़ामअली को बरसौड़ी कर देने का क़रार कर लिया और यह भी लिख दिया कि अंगरेज़ी फ़ौज निज़ामअली की मदद करेगी ॥ इस ज़माने में मैसूर के राज पर हैदरअली का इख़्तियार होगया।

* गंजाम बिजिगापट्टन राजमहेन्द्री मछलीबन्दर और गंटूर यह पांचों ज़िले शिमाली सरकार कहलाते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था इस का बाप सिरे के नव्वाब की चाकरी में पियादे से फ़ौजदार बनगया था और यह खुद मैसूर के दीवान नन्जी राज की फ़ौज में रहते रहते और शूरता और पराक्रम के काम करते करते ऐसा बड़ा कि वहां के राजा के लिये तो खाने को पिंशन मुकर्रर कर दिया और आप सारे मुल्क का मालिक हो गया बिदनौर में दफ़ीना भी पाया चारों तरफ़ अपनी अमल्दारी बढ़ाने लगा॥ सन १७६७ में निज़ामअली ने मैसूर पर चढ़ाव किया अंगरेजी फ़ौज भी इक़रार के मुआफ़िक़ उसके साथ हुई तीसरी सिप्तम्बर को हैदरअली ने अंगरेज़ी फ़ौज से लड़कर शिकस्त खाई हैदरअली निज़ामअली से मिल गया दोनों ने अंगरेज़ों का मुक़ाबला किया उनकी भीड़ भाड़ सत्तर हज़ार आदमियों की थी और इनकी तरफ़ कुल बारह हज़ार लेकिन दुश्मनों ने शिकस्त खाई और उनकी ६४ तोप अंगरेज़ों के हाथ आई निदान निज़ामअली ने तो कुछ दे दिलाकर अंगरेज़ों से सुलह करली और हैदरअली लड़ता रहा कभी उसका कुछ नुक़सान हो जाता कभी अंगरेज़ों का कभी इनका कोई क़िला उसके हाथ चाला जाता और कभी उसका इनके हाथ आजाता
१७६८ ई० यहां तक कि सन १७६८ में हैदरअली ने भी अंगरेज़ों से सुलह की इन्हों ने उसकी जगहें उसे लौटा दी उसने इनका इन्हें दे दीं दोनों ने आपस में बचाव के लिये एक दूसरे की मदद करने का करार किया॥

१७७० ई० सन् १७७० में सैफ़ुद्दौला के मरने पर उसका भाई मुबारकुद्दौला बंगाले का सूबेदार हुआ नाबालिग़ था कम्पनी ने कहा कि उसके वास्ते सिर्फ़ सोलह लाख रुपया साल देना काफ़ी है इस से अधिक देना कुछ ज़रूर नहीं चौंतीस लाख किफ़ायत
१७७३ ई० में आवे सन् १७७३ में जब इंगलिस्तान की पार्लीमेंटवालों ने देखा कि कम्पनी लालच में आकर और अपने नौकरों को कम तनख़ाहें देकर मुल्क का इंतज़ाम बिगाड़ती है और क़र्ज़ भी बढ़ाती जाती है एक क़ानून ऐसा जारी किया कि जिस से

6418.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अढ़ाई लाख रुपये साल पर एक गवर्नर जनरल मुक़र्रर हो और उसकी कौंसल में चार मिम्बर अस्सी अस्सी हज़ार रुपये सालाने के रहें कम्पनी को गवर्नर जेनरल के मुक़र्रर करने का इख़्तियार मिले लेकिन मंजूरी उसकी बादशाह के हाथ रहे पांचवें साल गवर्नर जेनरल बदला जाय और कलकत्ते में एक सुप्रिमकोर्ट क़ाइम की जाय उसके तीनों जज्ज बादशाह के हज़ूर से मुक़र्रर होते रहें ॥

पहला गवर्नर जेनरल जो यहां मुक़र्रर हुआ वारन् हेस्टिंग्ज़् था यह सन् १७५० में नौकर होकर आया था और इस वक़्त बंगाले की गवर्नरी के ओहदे पर था ॥

वारन् हेस्टिंग्ज़् ने जब देखा कि क्लाइव की तजवीज़ बमूजिब नव्वाब और कम्पनी की शराकत में हुकूमत रहने से कभी इन्तिज़ाम दुरुस्त न होगा ज़िले ज़िले में अंगरेज़ी हाकिम भेजकर कलकत्ते में बोर्ड आफ़ रेवन्यू और सदर निज़ामत और सदर दीवानी की अदालतें मुक़र्रर कर दीं इस में शक नहीं कि हिन्दुस्तानी फिर भी अंगरेज़ी ओहददारों के शरीक रहे लेकिन नौकर सब कम्पनी के होगये कलक्टरी और दीवानी के हाकिम का शरीक एक दीवान रहता था फ़ौजदारी के हाकिम के साथ ज़िले का क़ाज़ी मुफ़्ती और मौलवी बैठता था बोर्ड आफ़ रेवन्यू में एक हिन्दुस्तानी राययान के ख़िताब से था ॥

अब ज़रा हाल शाहआलम बादशाह का सुनो इसके दिल में फिर दिल्ली के दर्मियान तख़्त पर बैठ ने की हविस समाई अंगरेज़ों ने कुछ सहायता न की इसने तुक्काजी हुल्कर और महाजी सेंधिया के पास पयाम भेजा उन मरहठों ने सन् १७७१ में इसे दिल्ली लेजाकर तख़्त पर बैठा दिया और इलाहाबाद और कोड़े का इलाक़ा उस से ज़बर्दस्ती अपने नाम लिखवा लिया अंगरेज़ों ने इस बहाने कि अब तो आप हमारे दुश्मनों से अर्थात् मरहठों से मिल गये इलाहाबाद और कोड़ा दोनों ज़ब्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करके पचास लाख पर शुजाउद्दौला के हाथ बेच डाला और लार्ड क्लाइव ने जो तीनों सूबों की दीवानी के बाबत छब्बीस लाख रुपया साल देने का क़रार लिख दिया था वह बिलकुल मानो पानी से धो डाला ॥

शुजाउद्दौला मुद्दत से फ़िकर में कि रुहेलखंड रुहेलों
१७७४ ई० से छीन ले क़ाबू न पाता था अब लड़ाई का ख़र्च और चालीस लाख रुपया नक़द देना क़बूल करके अंगरेज़ों को उन पर चढ़ा ले गया बेचारे रुहेले शिकस्त खाकर तीन तेरह हो गये सिर्फ़ फ़ैज़ुल्लाहख़ां उनके सर्दारों में से बच रहा शुजाउद्दौला ने उसे भी तंग किया और निचोड़ा लेकिन फिर रुहेलखंड में उसके लिये पंदरह लाख की जागीर मुक़र्रर करदी ॥

१७७५ ई० सन् १७७५ के शुरू में शुजाउद्दौला परलोक को सिधारा और उसकी मसनद पर उसका बेटा आसिफ़ुद्दौला बैठा कौंसल-वालों की यह राय ठहरी कि शुजाउद्दौला से जो अहद पैमान हुए थे वह उसी की ज़िन्दगी भर के लिये थे आसिफ़ुद्दौला के साथ तब बहाल रहेंगे जब वह बनारस का इलाक़ा कम्पनी को नज़र करे और अंगरेज़ी फ़ौज का ख़र्च बढ़ाकर दो लाख साठ हज़ार रुपया महीना कर दे लाचार आसिफ़ुद्दौला को बनारस का इलाक़ा भी देना पड़ा और फ़ौज का ख़र्च भी बढ़ाना पड़ा मसल मशहूर है ज़बर्दस्त का ठेंगा सिर पर ॥

बालाजीराव पेशवा के मरने पर उसका भाई रघुनाथराव जिसे राघोबा भी कहते हैं उसके बेटे नारायणराव पेशवा को मारकर आप पेशवा बन बैठा था परंतु जब सुना कि नारायणराव की रानी को लड़का हुआ और संधिया और हुल्कर उसकी पच्छ पर हैं डरकर गुजरात की ओर भाग गया और बम्बई में अंगरेज़ों से मदद चाही बम्बईवालों ने सालसिट का टापू और उसके पास बस्सीन का बन्दर जो उस वक़्त मरहठों के क़ब्ज़े में था कम्पनी के नाम लिखवाकर कुछ फ़ौज दे दी परंतु कलकत्ते के कौंसलवालों ने यह बात नामंज़ूर की और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपना अजंट पुना भेजकर सन् १७७६ में नारायणराव के लड़के १७७६ ई०
से जो रघुनाथराव के भागने पर पेशवा हो गया था केवल सालसिट का टापू लेकर सुलह कर ली और बस्सीन का दावा बिलकुल छोड़ दिया ॥

सन् १७७८ में पेशवा के मंत्रियों में विरोध पड़ा नान्हा १७७८ ई०
फडनवीस ने तो पेशवा की तरफ़ रहकर सेंधिया से मदद ली और बाबू सखाराम ने रघुनाथराव की तरफ़ होकर अंगरेज़ों से मदद मांगी जब अंगरेज़ी फ़ौज से पूना कुल आठ कोस रह गया कर्नेल इजर्टन और कर्नेल कोबर्न उसके अफ़सरों ने तोपें तालाब में डालकर फ़ौज को पीछे हटने का हुक्म दिया और जब दूसरे दिन वरगांव में पेशवा की फ़ौज ने आ घेरा सालसिट पेशवा को और भड़ोंच सेंधिया को देकर कम्पनी की ओर से अहदनामा लिख दिया कोर्ट आफ़ डाइरेक्टर्स ने दोनों अफ़सरों को इस क़सूर में मौक़ूफ़ किया बम्बई के गवर्नर ने उस अहदनामे को जो उन्हों ने वरगांव में लिखा था बिलकुल नामंज़ूर किया और गवर्नर जेनरल ने भी यही उचित समझा क्योंकि उन अफ़सरों ने अहदनामा लिखते समय यह भी साफ़ ज़ाहिर कर दिया था कि हमको अहदनामा लिखने का पूरा इख़्तियार हासिल नहीं है। निदान इसी बात पर फिर लड़ाई शुरू हुई उस अंगरेज़ी फ़ौज ने जो जनरल गोडार्ड के तहत में कलकत्ते से मदद के वास्ते बम्बई गई थी अहमदाबाद में दख़ल कर लिया और सेंधिया और हुल्कर ने उस से ऐसी शिकस्त खाई कि अपना सारा डेरा डंडा अंगरेज़ी बहादुरों के लिये छोड़ भागे ॥ १७८० ई०

गोहद के राना का कम्पनी के साथ अहदनामा हो गया था अब सेंधिया उसके इलाक़े के तरफ़ झुका तो उसने भी अंगरेज़ों से मदद चाही कप्तान पोफ़म ने जो कुछ थोड़ी सी सिपाह के लिये जनरल गोडार्ड की फ़ौज से शामिल होने को जाता था गवर्नमेंट का हुक्म पाकर तुरंत मरहठों को गोहद के इलाक़े से मार हटाया और फिर उनका लहार का क़िला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़तह करता हुआ ग्वालियर का क़िला जा घेरा यह क़िला मज़बूती में मशहूर है खड़े पहाड़ पर बना है वहांवाले समझे हुए थे कि यदि दस आदमी भी क़िले में केवल पत्थर लुढ़काने को हों हमला करके दुश्मन कदापि उस तक न पहुंच सकेगा चाहे वह लाखों फ़ौज क्यों न लावे और अब तो सेंधिया के एक हज़ार सिपाही चुने हुए लड़ाई के सब सामान समेत उसके अन्दर मौजूद थे पोफ़न हैरान था किस ढब उस पहाड़ पर चढ़े संयोग से एक चोर उसे ऐसा मिल गया कि जो क़िले में चोरी करने के लिये एक छुपी हुई पगडंडी से उस पहाड़ पर चढ़ जाया करता था पोफ़न ने यह रास्ता उस से दर्याफ़्त कर लिया दूसरे दिन सूर्योदय से पहले आगे आप हुआ और पीछे फ़ौज सीढ़ियां लगाकर रस्से लटका कर खूंटियां गाड़कर घास की जड़ें पकड़कर यह उस समय नहीं मालूम होता था कि आदमी हैं या बन्दर सब के सब बात की बात में उसी राह पहाड़ों पर पहुंच दीवारोंको डांक क़िले के अन्दर दाख़िल हो गये महरठों ने जो यकायक आंख मलते हुए अपने बिस्तरों से उठकर दुश्मनों को क़िले के अन्दर मौत की तरह सिर पर पाया छक्के छूट गये उसी दम क़िला छोड़ भागे उधर गोडार्ड ने बस्सीन लिया और बम्बई की फ़ौज ने कङ्कन में पेशवा के सिपाहियों को भगाया इधर बंगाले की फ़ौज ने सिरोंज में सेंधिया के लश्कर को एक और शिकस्त दे दी लेकिन दक्खन में बखेड़ा बढ़ता देखकर और कौंसलवालों को अपना
१७८२ ई० बिरोधी पाकर गवर्नर जेनरल ने सेंधिया से तो इस शर्त पर सुलह कर ली कि सिवाय उस इलाक़े के जो गोहद के राना को दिया गया था बाक़ी जो कुछ जमना पार अंगरेज़ों के हाथ लगा था सेंधिया को लौटा दिया जाय और पेशवा से इस शर्त पर सुलह कर ली कि बस्सीन समेत जो कुछ अंगरेज़ों ने पुरन्दर में सुलहनामा लिखे जाने के बाद फ़तह किया सब पेशवा को लौटा दिया जाय और पेशवा कर्नाटक में उन सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इलाकों को जो हैदरअली ने दबा लिये थे उस से अंगरेज़ों को दिलवा देवें और सिवाय पुर्टगेजों के और किसी फ़रंगी को अपने मुल्क में कुछ कार बार न करने दे क्योंकि अंगरेज़ों को खटका फ़रासीसियों का था भडोंच संधिया के क़ब्ज़े में रहने दें और यदि रघुनाथराव संधिया की अमल्दारी में रहे तीन लाख रुपया साल उसे पेशवा के यहां से गुज़ारे को मिला करे ॥

सन् १७७८ में फ़रासीस और इंगलिस्तान के दर्मियान लड़ाई शुरू हो जाने के कारन अंगरेज़ों ने यहां से फ़रासीसियों को बिल्कुल बेदख़ल कर दिया बंगाले की फ़ौज ने चन्दरनगर पर क़ब्ज़ा किया मंदराज की फ़ौज ने पटुच्चेरी लेकर उसका क़िला ढाह डाला और कारिकाल और मछलीबन्दर और माही भी छीन लिया ॥

हैदरअली से अंगरेज़ों का जो सुलहनामा हुआ था उस में शर्त थी कि बचाव के लिये दोनों एक दूसरे की मदद करें लेकिन जब मरहठों ने हैदरअली पर चढ़ाव किया तो अंगरेज़ों ने उसे कुछ भी मदद न दी इस बात की उसके जी में बड़ी लाग थी सन् १७८० में एक लाख फ़ौज लेकर चढ़ आया और अंगरेज़ी अमल्दारी में हर तरफ़ लूट मार मचा दिया जो सब फ़रासीसी इत्यादि फ़रंगी और जगहों से निकाले गये थे अक्सर इसने अपनी फ़ौज में भरती कर लिये थे उन्हीं का बड़ा बल था और तोपख़ाना भी उसका सौ तोपों का अच्छा सिजिल था अंगरेज़ी फ़ौज जो मंदराज के पास इकट्ठी हुई कुल पांच हज़ार थी पहली ही लड़ाई में फ़ौज शिकस्त खाई जो बचे मंदराज चले आये बड़ी घबराहट पड़ी लेकिन कलकत्ते से रुपये और सिपाह की मदद बहुत जल्द पहुंची तब तक हिंदू सिपाही जहाज़ पर नहीं चढ़ते थे इसी लिये सारी राह ख़ुश्की गये इनके पहुंचने पर सात हज़ार की जमाअत हो गई कुछ फ़ौज मदद के लिये बम्बई से भी आई अंगरेज़ों को अपने क़िले और शहर बचाने की फ़िकर थी और दुश्मन को उनके लेने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की ग़रज़ खूब लड़ाइयां हुईं दोनों तरफ़ के बहादुरों ने अपनी अपनी बहादुरियां दिखलाईं कभी एक का कोई क़िला या शहर या गांव दूसरे के क़ब्ज़े में चला जाता कभी वह उसी को अपने क़ब्ज़े में ले आता या दूसरे का क़िला शहर और गांव जा दबाता कभी एक की फ़ौज देखकर या उसकी आमद सुनकर या रसद चुक जाने पर दूसरे की फ़ौज खुद-बखुद हट जाती कभी थोड़ी होने पर भी जी खोलकर ऐसी लड़ती कि या तो फ़तह पाती या उसी जगह कट जाती सन् १७८१ में पहली जुलाई को कड़ालूर की राह में आठ हज़ार अंगरेज़ी फ़ौज ने अस्सी हज़ार दुश्मन की फ़ौज को ऐसी शिकस्त दी कि उसके दस हज़ार आदमी खेत रहे इनके घायल मिलाकर भी तीन सौ आदमी काम न आये सत्ताईसवीं सितम्बर की लड़ाई में हैदरअली ने अपना तोपखाना बचाने को जान बूझकर अपने पांच हज़ार सवार कटवा दिये मानो किसी खेत की मूली थे ॥

दिसम्बर में अस्सी बरस के ऊपर पहुंचकर हैदरअली परलोक को सिधारा और उसका बेटा टीपू उसकी जगह मसनद पर बैठा टीपू का अर्थ उस मुल्क की ज़ुबान में शेर
१७८४ ई० है लड़ाई कुछ दिन और भी हुआ की लेकिन ग्यारहवीं मई को सुलह हो गई जिसने जिसका जो कुछ लिया था उसे वापस दे दिया आगे के लिये अहदनामा लिख गया ॥

इस अर्से में फ़रासीस और इंगलिस्तान के दर्मियान भी सुलह हो गई थी कहीं कुछ लड़ाई बाक़ी नहीं थी ॥

सन् १७७५ से अर्थात् जब से आसिफ़ुद्दौला ने बनारस का इलाक़ा कम्पनी को दे दिया राजा चेतसिंह बनारस का राजा सरकार कम्पनी अंगरेज़ बहादुर के आधीन हुआ यह राजा बलवन्तसिंह का बेटा था परंतु विवाहिता रानी से न था अंगरेज़ ने बाईस लाख रुपया साल कर मुक़र्रर करके उस इलाक़े की बहाली का अहदनामा राजा चेतसिंह के नाम लिख दिया सन्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१७७८ तक राजा चेतसिंह ने बराबर वह रुपया अदा किया वारन हेस्टिंग्ज़ के दिल में राजा चेतसिंह की तरफ़ से रंज आ गया था और उसका कारन यह था कि जिन दिनों में वारन हेस्टिंग्ज़ को कौंसल के कई मिम्बरों ने यहां से निकालना चाहा था और आप कुल मुख़्तार हो गये थे राजा चेतसिंह का वकील उन मिम्बरों के पास जाया करता था निदान हेस्टिंग्ज़ ने लड़ाइयां पेश होने के सबब फ़ौज ख़र्च के लिये राजा से पांच लाख रुपया साल तलब किया राजा ने बहुतेरा कहा कि बाईस लाख का अहदनामा हो गया है लेकिन निबल की कौन सुनता है राजा को उस साल पांच लाख देना ही पड़ा दूसरे साल इसकी तलबी के लिये सरकारी सिपाह आई राजा को पांच लाख रुपये के सिवाय सिपाह का ख़र्च भी देना पड़ा तीसरे साल राजा ने इसकी मुआफ़ी के लिये दो लाख रुपया हेस्टिंग्ज़ को कलकत्ते में अपने वकील के हाथ तुहफ़ा के तौर पर भेजा हेस्टिंग्ज़ ने वह भी रक्खा पांच लाख भी लिया और लाख रुपया जुर्माने के नाम से वसूल किया सन् १७८१ में पांच लाख के सिवाय पहले तो दो हज़ार लेकिन फिर एक ही हज़ार सवार तलब किये राजा ने आधे सवार आधे बंदूकची पियादे तयार किये पर जब हेस्टिंग्ज़ इस पर भी राज़ी न हुआ राजा ने बीस लाख नज़राना दाखिल करने का पैग़ाम भेजा हेस्टिंग्ज़ ने पचास लाख तलब किया और बनारस की तरफ़ तरी की राह से रवाना हुआ राजा ने बकसर में पहुंचकर पैरों पर पगड़ी रख दी लेकिन हेस्टिंग्ज़ का दिल इस पर भी न पसीजा बनारस पहुंचकर शिवाले पर अर्थात् जहां राजा ठहरा था दो कम्पनी तिलंगों का पहरा भेज दिया राजा ने इस पर भी कुछ सिर न उठाया लेकिन राजा के नौकर अपने मालिक का क़ैद होना सुनकर शिवाले के गिर्द घिर आये इस हुजूम की ख़बर पाकर हेस्टिंग्ज़ ने दो कम्पनी तिलंगों की और भेज दीं राजा के आदमियों ने इनको अंदर जाने से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोका कप्तान ने तोप सर की, बलवा हो गया तलवारें चलने लगीं एक सरकारी चोबदार चेतराम ने राजा से बड़ी बेअदबी की कहने लगा कि यहां एक २ सिपाही गवर्नर जेनरल है अगर तुम्हारा कोई आदमी ज़रा भी चूं करेगा तुम्हारे और तुम्हारी रानियों के पैरों में रस्सियां बांधकर सरेबाज़ार खींचता हुआ लार्ड साहिब के साम्हने ले जाऊंगा राजा ने पैर फैला दिया कि भाई ला रस्सी और बांध देर क्यों करता है राजा के चचेरे भाई बाबू मनियारसिंह के मुंह से यह निकल गया कि किस-का मक़दूर है जो राजा के पैर में रस्सी बांधे चेतराम बोला कि चेतसिंह और चेतराम की गुफ़्गू में दूसरा कौन मसख़रा दख़ल देता है मनियारसिंह होंठ काटकर चुपका हो रहा जब बाहर बलवा हुआ चेतराम अपनी मौत से अचेत उछल कर राजा से जा लिपटा और तिलंगों को पुकारा जब तिलंगे तलवार लेकर राजा की तरफ़ दौड़े राजा के सथियों ने झट पहरे में से अपने हथियार उठा लिये बाबू मनियारसिंह के बेटे नन-कूसिंह ने एक ही तलवार में चेतराम का काम तमाम किया भीतर भी लड़ाई शुरू हो गई तिलंगों के पास कारतूस न था सब के सब मारे गये अगर राजा मनियारसिंह की सलाह मानता और अपनी सिपाह समेत उस समय माधोदास के बाग़ में जहां हेस्टिंग्ज़ का डेरा था और बे फ़ौज वह अकेला रह गया था जाकर उसे अपने क़ाबू में कर लेता और फ़िर विनय और नम्रता से पेश आता अपना मन वांछित फल पाता लेकिन राजा ने सदानन्द बख़्शी की सलाह पसन्द की और खिड़की का राह पगड़ियों के वसीले से उतर क़िश्ती पर सवार हो गंगा पार रामनगर चला गया और फिर वहां से कुछ दिन अपने क़िलों में ठहर कर जब सरकार की हर तरफ़ फ़तह और अपने सिपाहियों की शिकस्त सुनी ग्वालियर को भाग गया हेस्टिंग्ज़ ने बलवन्तसिंह के नवासे राजा महीपनरायनसिंह को बनारस के राज पर बिठाया मानो हक़ हक़दार को पहुंचाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन बेचारे चेतसिंह के निकालने से जैसा बिचारा था वैसा कुछ ख़ज़ाना हाथ न लगा कहते हैं कि राजा चेतसिंह का दीवान बाबू औसानसिंह अपने मालिक से बिगड़कर हेस्टिंग्ज़ से जा मिला था और उसी ने उसके कान भरे थे कि राजा के पास करोड़ों रुपये का ख़ज़ाना है ज़रा सी धमकी में देदेगा ॥

सन् १७८५ में हेस्टिंग्ज़ इस्तोफ़ा देकर इंगलिस्तान को १७८५ ई० चला गया और मेक्फ़र्सन जो कौंसल का बड़ा मिम्बर था गवर्नर जेनरल के उहदे का काम अंजाम देने लगा ॥

उधर इंगलिस्तान में सन् १७८४ के दर्मियान पार्लीमेंट के हुक्म से एक महकमा बोर्ड आफ़ कंट्रोल का मुक़र्रर हो गया था उस में बादशाही कौंसल के छ वज़ीर बैठते थे और वह कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स से बालादस्त थे तिजारत के सिवाय हिन्दुस्तान के सारे कामों पर उनको पूरा इख़्तियार था और कोर्ट-आफ़ डैरेक्टर्स को सब काम उनकी मर्ज़ी के बमूजिब करना पड़ता था गवर्नर और गवर्नर जेनरल भी उन्हीं की मंज़ूरी से मुक़र्रर होता था निदान बोर्ड आफ़ कंट्रोल के मुक़र्रर होने से यहां के कामों में बड़ा फ़र्क़ आ गया अब तक यहां वालों को निरी कम्पनी अर्थात् सौदागरों की एक जमाअत से काम था और अब इंगलिस्तान के बादशाही वज़ीरों से काम पड़ा दुश्मनों का बल घटा और रऐय्यत का भरोसा बढ़ा ॥

सन् १७८६ में लार्ड कार्नवालिस गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हो १७८६ ई० कर आया ॥

त्रिवाङ्कोड़ू के राजा से अंगरेज़ों का अहदनामा हो गया था इसी लिये जब सन् १७८९ में टीपू ने नाहक़ तकरार बढ़ाकर १७८९ ई० त्रिवाङ्कोड़ू पर चढ़ाव किया अंगरेज़ों को राजा के बचाव के लिये टीपू पर चढ़ाव करना पड़ा लार्ड कार्नवालिस हैदराबाद के नव्वाब निज़ामुल्मुल्क और पेशवा से आपस की मदद का क़ौल क़रार लेकर खुद मंदराज गया और टीपू के मुल्क मैसूर पर चढ़ाव कर दिया बम्बई से भी कुछ अंगरेज़ी फ़ौज आई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी ज़िले ज़िले घाटे घाटे और क़िले क़िले लड़ाई होने लगी जब टीपू के कई मज़बूती में मशहूर पहाड़ी क़िले सरकार के कब्ज़े में आ गये और सरकारी फ़ौज लड़ती भिड़ती फ़तह के
१७९२ ई० निशान उड़ाती सन् १७९२ में टीपू की राजधानी श्रीरंगपट्टन के अन्दर जा पहुंची और क़रीब था कि क़िले पर जिस में टीपू घुसा हुआ था हमला करे टीपू ने अपने दोनों लड़कों को ओल में लार्ड कार्नवालिस के पास भेज दिया और तीन करोड़ तीस लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च और आधा मुल्क अंगरेज़ और नव्वाब और मरहठों को देकर आपस में सब के साथ सुलह रखने का अहदनामा लिख दिया उस आधे मुल्क से जो टीपू ने दिया अंगरेज़ों के हिस्से में मलीबार कुड़ग दिन्दीगल और बारह महाल आया ॥

१७९३ ई० सन् १७९३ में अंगरेज़ों की फ़रासीसियों से फिर लड़ाई छिड़ जाने के कारण पटुच्चेरी इत्यादि उनके इलाक़ों में सरकार ने अपना क़ब्ज़ा कर लिया और लार्ड कार्नवालिस इंगलिस्तान को सिधारा बंगाले और बनारस में ज़मीदारों के साथ इस्तिमरारी बंदोबस्त इसी ने किया जब तक रहेगा उसकी कीर्ति इस देश में बनी रक्खेगा लार्ड कार्नवालिस की जगह पर सरजानशोर जो कौंसल का अव्वल मिम्बर था गवर्नर जेनरल हुआ ॥

१७९५ ई० सन् १७९५ में कर्नाटक का नव्वाब मुहम्मदअली मर गया उसका बड़ा बेटा उमदतुलउमरा उसकी जगह पर बैठा ॥

१७९७ ई० सन् १७९७ में नव्वाब वज़ीर आसिफ़ुद्दौला मर गया वज़ीरअली उसकी जगह पर बैठा लेकिन पीछे से सरकार को मालूम हुआ कि वह उसका असली लड़का नहीं है तब वज़ीरअली को मस्नद से उठाकर आसिफ़ुद्दौला के भाई सआदतअलीख़ां को मस्नद पर बिठाया सआदतअलीख़ां ने अंगरेज़ों को अवध में दस हज़ार फ़ौज रखने के लिये छिहत्तर लाख रुपया साल ख़र्च देने का अहदनामा लिख दिया और इलाहाबाद का क़िला भी उनके हवाले किया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १७६८ में सरजानशोर ने इंगलिस्तान जाकर लार्ड टेन-मैाथ का ख़िताब पाया और यहां उसकी जगह पर अर्ल आफ़-मार्निंगटन जो फिर पीछे से ख़िताब पाकर मार्क्विस आफ़ विलिज़्ली कहलाया गवर्नर जेनरल होकर आया ॥ १७६८ ई०

यद्यपि टीपू ने संकट के समय अंगरेज़ों से सुलह करली थी परंतु लाग की आग से उसकी छाती बराबर जलती रही मार्निंगटन को साबित होगया कि वह फ़रासीसियों से ख़त किताबत रखता है और उनके मुल्क से मदद मांगने की फ़िकर करता है यह बड़ा ज़बर्दस्त गवर्नर जेनरल था झट पट मंदराज में फ़ौज जमा होने का हुक्म दे दिया और टीपू को लिख भेजा कि या तो मलीबार की ओर समुद्र के तटस्थ सब इलाक़े देकर और फ़ौज जमा होने में जो ख़र्च पड़े उसे चुकाकर आगे को अहदनामा लिख दो कि फ़ारासीसियों से कभी किसी तरह का कुछ संबंध न रक्खोगे जो फ़रासीसी तुम्हारी अमल्दारी में हों तुरन्त निकाल बाहर करो और सरकारी रज़ीडंट को अपने यहां रहने की जगह दो नहीं तो सरकार को अपना दुश्मन समझो जब टीपू ने इसका कुछ जवाब न दिया मंदराज और बम्बई दोनों ओर से अंगरेज़ी फ़ौज ने उस के मुल्क पर चढ़ाव किया हैदराबाद के नव्वाब की फ़ौज भी अंगरेजों के साथ थी पेशवा सेंधिया की बहकावट से अलग रहा श्रीरंगपट्टन से बीस कोस इधर अंगरेज़ों की टीपू से लड़ाई हुई टीपू शिकस्त खाकर पीछे हटा और यह सोच कर कि अंगरेज़ी फ़ौज उसी राह से आवेगी जिस से पहले आई थी बिलकुल घास और चारा जो उस में था नाश करवा दिया लेकिन जब सुना कि अंगरेज़ों ने दूसरी राह ली उसका जी बिल्कुल टूट गया और अपने सिपाहियों से साफ़ कहा कि अब मेरे दिन आन पहुंचे उन्हों ने यही जवाब दिया कि आप के साथ हम भी कट मरेंगे निदान अंगरेज़ों ने जाकर श्रीरंगपट्टन घेर लिया नव्वाब और पेशवा की फ़ौज तो तमाशा देखती थी लेकिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गवर्नर जेनरल सिपाहियों का काम करता था चैाथी मई को
१७९९ ई० क़िले पर हमला हुआ और अंगरेज़ी निशान फहराया टीपू की लाश हाथ लगी लड़के उसके हाज़िर हो गये ९२९ तोप एक लाख बंदूक साज़ सामान समेत और एक करोड़ एक लाख के क़रीब नक़द और जवाहिर अंगरेज़ों के हाथ लगा क़ाइदे के बमूजिब टीपू का सारा मुल्क सरकार और नव्वाब के दर्मियान बट जाना चाहिये था लेकिन गवर्नर जेनरल ने मुनासिब न समझा कि नव्वाब की अमल्दारी ज़ियादा बढ़ाई जाय इसी कारन कुछ तो आपस में तक़सीम कर लिया और बाक़ी मैसूर के पुराने राजा के वारिसों में से जिसे हैदरअली ने वहां से बेदख़ल कर दिया था चुनकर उसके हवाले किया और शर्त यह कर ली कि हिफ़ाज़त के लिये फ़ौज उस में सरकारी रहेगी ख़र्च सात लाख साल ज़िम्मे राजा के और जब ज़रूरत पड़े तो इन्तिज़ाम भी मुल्क का सरकार अपने तौर पर करे ॥

तंजौर का राजा तुलजाजी निस्संतान होने के कारन एक दस बरस के लड़के सर्वोजी को गोद लेकर मर गया था उसके भाई अमरसिंह ने गद्दी का दावा किया सरकार ने बहुत तहक़ीक़ात के बाद गद्दी सर्वोजी को दी लेकिन मुल्क की आमदनी से उसके लिये एक अच्छा सा पिंशन मुक़र्रर करके दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार आप ले लिया ॥

सूरत के नव्वाब के मरने पर यही हाल वहां का भी किया गया और कर्नाटक के नव्वाब उमदतुलउमरा के मरने पर जब उसके बेटे अलीहुसैन ने इन शर्तों से इनकार किया तो उसके
१८०१ ई० चचेरे भाई अज़ीमुद्दौला को इन्हीं शर्तों पर नव्वाब बना दिया ॥

वज़ीरअली अवध से निकालकर बनारस में रक्खा गया था जब मालूम हुआ कि काबुल के बादशाह ज़मांशाह से ख़त किताबत रखता है और फ़साद उठाया चाहता है तो उसे कलकत्ते जाने का हुक्म मिला वह इस बात से जलकर एक दिन सुबह को चेरी साहिब अजंट के यहां जब चाय पीने को गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बातों ही बात में उन्हें काट डाला कप्तान कानवे साहिब और मेहम साहिब को भी क़तल किया फिर वहां से झपट कर डेविस साहिब जज की कोठी * पर पहुंचा यह कोठी दुमंज़िली है साहिब एक बर्छा लेकर इस जवांमर्दी से सीढ़ी पर आ खड़े हुए कि कोई क़दम न बढ़ा सका इसी अर्से में फ़ौज आ गई डेविस साहिब बच गये वज़ीरअली भागा जयपुर चला गया वहां के राजा ने उसे पकड़कर अंगरेज़ों के हवाले कर दिया लेकिन इतना क़रार कर लिया कि न वह मारा जाय न उसके पैर में बेड़ी डाली जाय अंगरेज़ों ने उसे कलकत्ते लेजाकर क़िले में ऐसी एक कोठरी के अंदर क़ैद किया कि उसको पिंजरा ही कहना चाहिये अभी मौजूद है ॥

सआदतअलीख़ां फ़ौजख़र्च न अदा कर सका इसी कारन सरकार ने फ़ौजख़र्च के लिये दुआबे का मुल्क और रुहेलखंड उस से ले लिया इस इन्तिज़ाम से फ़र्रुख़ाबाद का नव्वाब भी सरकारी पिंशनदार बन गया ॥

टीपू पर फ़तह पाने के इनाम में गवर्नर जेनरल को मार्क्विस का ख़िताब मिला इसी अर्से में फ़रासीसियों के हमले से मिसर १८०२ ई० को बचाने के लिये गोरों के साथ कुछ हिन्दुस्तानी फ़ौज भी यहां से जहाज़ों पर भेजी गई थी और बड़ा नाम पैदा कर आई ॥

पेशवा अब तक गवर्नर जेनरल के कहने से बाहर रहा था लेकिन जब जस्वन्तराव हुल्कर ने बड़ी धूम धाम से उस पर चढ़ाव किया तो उसने घबराकर गवर्नर जेनरल के कहने बमूजिब इस बात का अहदनामा लिख दिया कि किसी क़दर सरकारी फ़ौज उसके मुल्क में रहा करे और उसका ख़र्च उसी के मुल्क से लिया जावे इधर तो यह अहदनामा लिखा गया उधर पूना के बाहर हुल्कर से शिकस्त खाकर पेशवा को समुद्र की ओर भागना पड़ा अंगरेज़ों ने उसे अपने जहाज़ में

* यह वही कोठी है जो अब महाराजाधिराज काशी नरेश बहादुर की है और नंदेसर की कहलाती है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पनाह दी और फिर बहुत सी फ़ौज इकट्ठा करके पूना में
१८०३ ई० पहुंचाया हुल्कर ने सरकारी सिपाह का मुक़ाबला न किया अपने मुल्क की ओर चला आया गवर्नर जेनरल ने बहुतेरा चाहा कि पेशवा की तरह सेंधिया और बराड़ अर्थात् नागपुर के राजा से भी अहदनामे हो जावें लेकिन जब देखा कि यह लोग सीधी तरह से न मानेंगे तो अपने भाई जेनरल विलिज़्ली को जो फिर पीछे से ऐसा नामी इंगलिस्तान का सेनापति डूक आफ़ वलिङ्गटन हुआ दक्खन की ओर से और लार्ड लेक कमांडरइंचीफ़ को उत्तर की ओर से इन दोनों के मुल्क पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया दक्खन में अहमदनगर सरकारी फ़ौज के हाथ आजाने से गोदावरी पार सेंधिया का बिल्कुल अमल जाता रहा और उसी महीने में भड़ोंच भी सरकार के क़ब्ज़े में आ गया इधर लार्ड लेक ने क़नौज से कूच करके अलीगढ़ में सेंधिया की फ़ौज को जो पीरन साहिब फ़रासीसी के तहत में थी शिकस्त देकर दिल्ली की ओर क़दम बढ़ाया पीरन सेंधिया की नौकरी छोड़कर अंगरेज़ों की हिमायत में चला आया दिल्ली में भी सेंधिया की फ़ौज एक फ़रासीसी के तहत में लड़ी और तीन हज़ार आदमी काम आने के बाद खेत छोड़ भागी यहां लार्ड लेक ने नाम के बादशाह अंधे शाहआलम से मुलाक़ात की वह एक फटे पुराने छोटे से शामियाने के नीचे बैठा था लार्ड लेक को बहुत लंबा चौड़ा ख़िताब इनायत किया और उस बेचारे के पास देने को बाक़ी क्या रहा था निदान कर्नल अक्टरलोनी साहिब को जिन्हें अक्सर यहांवाले लोनी अख़्तर भी कहते हैं कुछ सिपाहियों के साथ दिल्ली में छोड़कर लार्ड लेक ने आगरा मरहठों से जा लिया और फिर लसवारी * में पहुंचकर मरहठों की फ़ौज को ऐसी फ़ाश शिकस्त दी कि सात हज़ार मारे गये और दो हज़ार क़ैद में आये गोया सेंधिया की कमर तोड़ डाली उधर दक्खन में सरकारी फ़ौज ने

* अथवा लसवाड़ी आगरे से ७३ मील वायु कोन है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अहमदनगर लेने के बाद असाई की लड़ाई में मरहठों के बड़ी भारी शिकस्त देकर बुर्हानपुर और असीरगढ़ का मशहूर क़िला ले लिया और फिर अरगांव की लड़ाई जीतकर और गाविलगढ़ का मज़बूत क़िला क़ब्ज़े में लाकर नागपुर के राजा की बाईं पचा दी निदान नागपुर के राजा ने कटक का इलाक़ा देकर सरकार से सुलह कर ली और साथ ही सेंधिया ने भी अहमदनगर और भडोंच से दस्तबर्दार होकर अहदनामा लिख दिया कि फिर कभी किसी फ़रासीसी के नौकर न रक्खे पेशवा के बुंदेलखंड पर दावा था इसलिये सरकार ने वह इलाक़े जो दक्खन और गुजरात में उस से पाये थे बुंदेलखंड के बदले उसे लौटा दिये ॥

अब केवल एक जस्वन्तराव हुल्कर इन्दौर का राजा बाक़ी १८०४ ई० रह गया कि जिसने सरकार के साम्हने सिर नहीं झुकाया वह अक्सर सरकारी इलाक़ों को लूटा किया और कोई वकील भी अपनी तरफ़ से नहीं भेजा इसलिये उस पर चढ़ाव हुआ पहले कुछ थोड़े से सिपाही कर्नेल मानसन साहिब के तहत में उसके मुक़ाबले को गये और टोंक का क़िला दर्वाज़ा उड़ा कर फ़तह कर लिया लेकिन मुकंदरे के घाटे में यह सरकारी फ़ौज का टुकड़ा धोखे में आकर बेतरह हुल्कर की फ़ौज से घिर गया और बड़ी बड़ी मुश्किलों से वहां से निकल कर लड़ता भिड़ता गर्मी और बरसात के कारन सैकड़ों तकलीफ़ें उठाता और नुक़सान सहता छिन्न भिन्न होकर आगरे पहुंचा हुल्कर ख़ूब फूला अब उसकी शेख़ी का क्या ठिकाना था समझा कि जो हूं मैं ही हूं बीस हज़ार सिपाह और एक सौ तीस तोपों से दिल्ली का शहर जा घेरा वहां सरकारी फ़ौज कुल आठ सौ थी और तोप ग्यारह पर दिल्ली के रज़ीडंट अक्टरलोनी ने इसी मुट्ठी भर फ़ौज से ख़ूब मरहठों के दांत खट्टे किये नौ दिन सिर पटक कर आख़िर चल दिये डीग में बड़ी कड़ी लड़ाई हुई सरकार की जय और मरहठों की पराजय हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुल्कर की बहादुरी भागने में थी नाम ही इनका मरहठा है अर्थात् मारना और हट जाना किसी ने हुल्कर से पूछा था कि आप का राज कहां है जिसके छीनने का हम उद्योग करें उसने जवाब दिया कि उतनी ज़मीन जिस पर मेरे घोड़े का साया पड़ता है अगर मक़दूर हो आओ छीन लो निदान लेक तो इस लालसा में था कि किसी तरह उस से दो चार हो तो फिर तमाशा दिखला दे और वह इसके नाम से हवा होता था यहांवाले अक्सर अपनी बेवक़ूफ़ी से इस भगोड़े लुटेरे को बीर समझ कर जीते जी मन्नत की दहेंडियां चढ़ाने लगे थे एक दिन लेक ने चौबीस घंटे में तीस कोस का धावा मारकर फ़र्रुख़ाबद के पास इसे जा दबाया और उस लड़ाई में कम से कम तीन हज़ार आदमी उसके मारे गये लेकिन वह हाथ न लगा डीग की तरफ़ भाग गया डीग भरतपुर की अमल्दारी में है भरतपुर के जाट राजा रंजीतसिंह ने हुल्कर को पनाह दी इस क़सूर की उसे भी सज़ा दीजानी मुनासिब समझी गयी डीग का क़िला फ़तह कर लिया और जो कुछ उस में था अपनी फ़ौज को बांट दिया ॥

१८०५ ई० तीसरी जनवरी को लेक ने भरतपुर घेरा नवीं को हमला किया लेकिन जब ख़न्दक़ के कनारे पहुंचे तो मालूम हुआ कि पानी छाती भर गहरा है आदमी बहुत काम आये इक्कीसवीं को दूसरी तरफ़ से हमला किया लेकिन वहां ख़न्दक़ चौड़ी इतनी थी कि पुल जो बना लाये थे छोटा पड़ा और जब सीढ़ी जोड़कर बढ़ाना चाहा पानी में गिर पड़ा इस में भी बहुत आदमी काम आये बाईसवीं को तीसरी तरफ़ से हमला किया हिन्दुस्तानी सिपाही ख़न्दक़ पार होकर दीवार पर चढ़ गये लेकिन गोरों ने उस वक्त साथ देने से इनकार किया इसलिये उन्हें भी लौट आना पड़ा ८६४ आदमी खेत रहे दूसरे दिन लेक ने उन गोरों को जिन्हों ने उदूलहुक्मी की थी बहुत शर्मिन्दा किया उन्हों ने ग़ैरत में आकर बड़े ज़ोर शोर से चौथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमला किया लेकिन इस अर्से में क़िलेवालों ने बुर्ज और दीवार की मरम्मत कर ली थी राह न मिली हज़ार से ऊपर आदमी मारे गये निदान इन चार हमलों में तीन हज़ार से ऊपर सरकारी फ़ौज का नुक़सान हुआ लोग थके मांदे और बे दिल हो गये गोला बारूत भी बाक़ी न रहा रसद का सामान ख़र्च में आ गया नाचार लेक को फ़ौज हटानी पड़ी यह इस मुल्क में एक ही क़िला है कि जिसके साम्हने से किसी कारन से भी कभी सरकारी फ़ौज हटी हमने भरतपुरवालों की ज़ुबानी सुना है कि लड़ाई के समय यह राजा रंजीतसिंह दोहर ओढ़े और हाथ में लट्ठ लिये क़िले की दीवारों पर घूमता था और गोलंदाज़ और सिपाहियों से यही कहता रहता कि भाई "क़िला तिहारो ही है" और जब वे कहते कि आप यहां से हट जायं गोले ओले की तरह बरस रहे हैं तो जवाब देता कि "भय्या जाके नाम की चीठी भगवान के घर तैंवा में बंधी आवतु है वाही को गोला लगतु है" और जब सुना कि लेक ने फ़ौज हटाली बड़ी दूरंदेशी की अपने सब सर्दारों को जमा करके कहा कि भाइयो यह हम सब की ताक़त न थी कि अंगरेज़ों को हटा सकें यह केवल ईश्वर की कृपा है कि मेरी बात रह गई पर अब उचित यह है कि हुल्कर से कह दो किसी तरफ़ की राह ले मेरा बूता नहीं कि अगरेज़ों के दुश्मन को शरण दूं और अपने लड़के कुंवर रणधीरसिंह को क़िले की कुंजी देकर लेक के पास भेज दिया लेक ने भरतपुरवालों की बड़ी ख़ातिर्दारी की राजा ने बीस लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च अदा करने का वादा किया लेक ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिया ॥

लार्ड विलिज़ली के इस भारी मंसूबे की क़दर कि हिन्दुस्तानी उपाधी रईसों को ज़ेर करके इकबारगी झगड़े फ़साद की जड़ मिटा दे और सारे मुल्क में अमन चैन जमा दे इंगलिस्तान में न हुई कम्पनी के शरीक आख़िर सौदागर थे लड़ाई के ख़र्च से घबरा गये इस बड़े नामी गवर्नर जेनरल का इस्तीफ़ा मंज़ूर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर लिया और लार्ड कार्नवालिस को जो सन् १७९३ में इस उहदे से इस्तीफ़ा देकर गया था फिर गवर्नर जेनरल मुक़र्रर करके कलकत्ते को रवाना किया लार्ड कार्नवालिस की राय मार्क्विस विलिज़ली से बिल्कुल बख़िलाफ़ थी बरन हम तो यही कहेंगे कि परमेश्वर की राय के भी बख़िलाफ़ थी क्योंकि मार्क्विस विलिज़ली तो यहां के इन उपाधी रईसों को ज़ेर करके अखगड राज अपनी सरकार का जमाना चाहता था और लार्ड कार्नवालिस ने इन्हें बचाना बरन अक्सर इलाक़े जो सरकारी तहत में आगये थे उनको भी लौटा देना बिचारा कौन जाने यही कारण हुआ कि तीसवीं जुलाई को तो वह कलकत्ते में पहुंचा और पांचवीं अकतूबर को ग़ाज़ीपुर में परलोक को सिधारा मक़बरा इसका वहां देखने लाइक़ है सरजार्जबार्लो जो उस समय कौंसल के प्रधान मिम्बर थे गवर्नर जेनरल के उहदे का काम अंजाम देने लगे और वही फिर उस उहदे पर बोर्ड आफ़ कंट्रोल की मंज़ूरी से मुक़र्रर हुए सेंधिया से फ़ौरन् सुलह हो गई और हुल्कर से पंजाब में व्यासा के कनारे जहां वह सिक्खों से मदद लेने को गया था अहदनामा लिखवा लिया जयपुर और बूंदी पर से कि वहां के राजा सरकार के वफ़ादार दोस्त थे रक्षा का हाथ बिल्कुल खींच लिया और मरहठों का मानो इन्हें शिकार बना दिया जयपुर के वकील ने ख़ूब कहा था कि "सरकार ने अपना ईमान अपनी ज़ुरूरत के ताबे कर
१८०६ ई० लिया है" इसी अर्से में कहीं मंदराज के कमांडरइंचीफ़ ने कोई हुक्म इस ढब का जारी कर दिया था कि पल्टन के सिपाही परेड पर कान में बाली पहन कर या माथे में तिलक लगाकर न जाया करें और पोशाक भी कुछ नये क़िस्म की पहनें सिपाहियों ने यह झूठा सन्देह करके कि सरकार को हमारे धर्म्म में दख़ल देना मंज़ूर है बिल्लूर के क़िले में कि जहां टीपू का घर बार नज़रबन्द रक्खा गया था अंगरेज़ी अफ़सर और गोरों पर यकायक हमला कर दिया लेकिन जब कर्नल जिलस्पी अरकाट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ी रिसालों के सवार और तोपें लेकर विल्लूर में पहुंचा सिपाही प्राय: ४०० तो मारे गये और बाक़ी कुछ क़ैद हुए और कुछ मुआफ़ कर दिये गये तीनों पलटनों का नाम जिनके सिपाहियों ने यह बलवा किया था फ़ौज की फ़िहरिस्त से कट गया बाज़े ऐसा भी गुमान करते हैं कि इस में टीपू सुल्तान के घरवालों की साज़िश थी परंतु सुबूत नहीं मिला जो हो टीपू के घरवाले नज़रबन्द रहने को कलकत्ते भेजे गये और उनका पिंशन घटाया गया मंदराज के गवर्नर लार्ड-विलियमबेंटिंक जिसे यहां वाले लार्डबिंटिंक कहते हैं और कमांडरइंचीफ़ की बदनामी हुई दोनों विलायत चले गये *॥

आख़िर जुलाई सन् १८०७ में लार्डमिन्टो गवर्नर जेनरल १८०७ ई० मुक़र्रर होकर आया और सर जार्जबार्लो लार्डबेंटिंक के उहदे पर मंदराज चला गया लार्डमिन्टो को पांच बरस तक कुछ फ़ौज बुंदेलखंड में रखनी पड़ी सन् १८१२ में कालिंजर का क़िला हाथ लगा और वहां का बखेड़ा तै हुआ ॥

सरकार को फ़रासीस के मशहूर शाहन्शाह बोनापार्ट की तरफ़ से हिन्दुस्तान पर हमला होने का खटका था और इन दिनों में उसका एक वकील भी बड़ी धूमधाम से ईरान के बादशाह के पास आया था इस कारण लार्डमिन्टो ने बीच के मुल्कवाले अर्थात् पंजाब और अफ़ग़ानिस्तान और ईरान के मालिकों से सन्धि कर लेना उचित समझा ॥

पंजाब में रंजीतसिंह सिक्खों का राजा बन बैठा था और हर तरफ़ से मुल्क दबाता चला जाता था यहां तक कि सतलज इस पार अपनी फ़ौजें उतार लाया और जमना को अपने राज की सहद्द बनाना चाहा जब चार्लसमिटकाफ़ लार्डमिन्टो की १८०८ ई० तरफ़ से उसके पास पहुंचा वह इसके समझाने को पहले तो कुछ ख़याल में नहीं लाया लेकिन अक्टरलोनी का फ़ौज समेत

* विलायत से इस किताब में सब जगह इंगलिस्तान की विलायत समझना चाहिये ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लुधियाने में पहुंचना सुनकर इस ओर से बिल्कुल निरास हो
१८०६ ई० गया और सतलज को सीमा मानकर पच्चीसवीं अप्रेल सन् १८०६ मे दोस्ती के अहदनामे पर दस्तख़त कर दिया ॥

अफ़ग़ानिस्तान के तख़्त पर अहमदशाह दुर्रानी का पोता शुजाउल्मुल्क था उसके पास पेशावर में लार्डमिन्टो की तरफ़ से मौंटस्टुअर्ट एल्फ़िन्स्टन पहुंचा शुजाउल्मुल्क ने बड़ी ख़ातिर्दारी की लेकिन दोस्ती के लिये सरकार से मदद के तौर पर कुछ रुपया मांगा वह लार्डमिन्टो ने मंज़ूर नहीं किया ईरान में इंगलिस्तानके ख़ुद बादशाह की तरफ़ से वकील आया ॥

मंदराज की फ़ौज में सिपाहियों के डेरों के ख़र्च का अफ़सरों को ठीके के तौर पर कुछ मुक़र्रर चला आता था सर जार्जबार्लो ने इस तरीक़े को मौक़ूफ़ करना चाहा इस में और कई और भी बातों में फ़ौजी और मुल्की साहिबों के दिलों के दर्मियान फ़र्क़ आ गया गवर्नर को बादशाही फ़ौज और हिन्दुस्तानी सिपाहियों पर भरोसा था हुक्म दिया कि कम्पनी की पल्टनों में जिनकी तरफ़ से खटका पैदा हुआ था गोरे और सिपाही अपने अफ़सरों से जुदा कर दिये जायं इस पर श्रीरंगपट्टन में अफ़सरों ने बलवा किया बादशाही फ़ौज को क़िले से बाहर निकाल दिया और बाहर छावनी पर गोले चलाना शुरू किया चितलदुर्ग की सरकारी फ़ौज भी इनके शामिल होने को आती थी लेकिन बादशाही ड्रागुन के रिसाले ने उसे रास्ते ही में छितर बितर कर दिया हैदराबाद में भी सरकारी फ़ौज सर्कशी पर मुस्तइद हुई थी और जलना और मौसलीपट्टन की फ़ौज को शामिल होने के लिये चिट्ठी भेजी थी लेकिन फिर कुछ समझ गई क़ुसूर मुआफ़ चाहा लार्डमिन्टो उस वक़्त मंदराज में था बीस अफ़सरों को मौक़ूफ़ करके बाक़ी का क़ुसूर मुआफ़ कर दिया ॥

१८१३ ई० सन् १८१३ में सरकार कम्पनी को पार्लीमिंट से इस मुल्क की नई सनद मिली और उसकी शर्तों के बमूजिब इंगलिस्तान के तमाम सौदागरों को इस मुल्क में तिजारत करने का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इजाज़त हासिल हो गई उसी साल के आख़िर में लार्ड मिन्टो अपने काम से मुस्ताफ़ी हुआ और आर्ल आफ़ माइरा गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर आया ॥

नयपालवाले बहुत दिनों से अपना राज बढ़ाते चले आते थे यहां तक कि अंगरेज़ी अमल्दारी पर हाथ फैलाने लगे जब समझाने बुझाने ने कुछ काम नहीं किया सरकार ने लड़ाई की १८१४ ई० तयारी की राजा बालक था काम राजा का काजी भीमसेन करता था फ़ौज जंगी बारही हज़ार थी पर उसकी मज़बूती और बहादुरी पर पूरा एतिबार था ३५०० आदमी जेनरल जिलस्पी के साथ में सहारनपुर से देहरादून में गये और वहां से अढ़ाई कोस के तफ़ावत पर नयपालियों के कलंगा नाम क़िले पर हमला किया क़िले में कुछ छ सौ नयपाली थे लेकिन जेनरल जिलस्पी मारा गया और सरकारी फ़ौज को पीछे हटना पड़ा बीस पच्चीस दिन में जब दिल्ली से भारी तोपें आन पहुंचीं तीन दिन के गोले बरसने में क़िले के अन्दर केवल सत्तर आदमी जीते बाक़ी रह गये पर सरकारी फ़ौज के हाथ वे भी नहीं लगे क़िलादार के साथ किसी तरफ़ को निकल गये इन की इस जवांमर्दी से नयपालियों का दिल बहुत बढ़ा और सरकारी फ़ौज को नुक़सान उठाना पड़ा कलंगा से सरकारी फ़ौज पच्छम सिरमौर की राजधानी नाहन के पास जैतक का क़िला लेने को गई लेकिन वहां इसका उद्यम निष्फल हुआ और क़िले पर झंडा नयपालियों का फ़हराता रहा ४५०० आदमी जेनरल ऊड के साथ गोरखपुर की सहद्द से पालपा का क़िला लेने को रवाना हुए लेकिन रास्ता जंगल झाड़ी और तराई में ऐसा ख़राब पाया कि जब बीमार पड़ने लगे बुटवल से लौटकर गोरखपुर की छावनी में चले आये आठ हज़ार आदमी जेनरल मार्ली के साथ दानापुर से त्रितिया होकर नयपाल की राजधानी काठमाण्डू लेने को चले लेकिन सहद्द पर पहुंचते ही कुछ सिपाही कट जाने के बाइस जेनरलमार्ले ऐसा बे दिल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो गया कि सर्हद्द की हिफ़ाज़त के लिये कुछ थोड़ी सी फ़ौज छोड़कर बितिया हट आया और यद्यपि इतनी मदद पहुंची कि १३००० आदमी इस के तहत में हो गये थे लेकिन क्या जानें इसके मन में क्या समाई बे कहें सुने अचानक एक दिन सूरज निकलने से पहिले फ़ौज से निकल कर किसी तरफ़ को चल दिया इस अर्से में कर्नल गार्डनर ने रुहेलखंड से कमाऊं में घुस कर अलमोरे का क़िला नयपालियों से ख़ाली करवा लिया लेकिन कप्तान हिअर्सी जो उस से शामिल होने को जाता था शिकस्त खाकर नयपालियों की क़ैद में पड़ गया निदान यह तो जिलस्पी और मालों सरीखों की उतावली और बेदिली थी अब जेनरल अक्टरलोनी की बहादुरी सुनो इसने छ हज़ार आदमी लेकर हंडूर की राजधानी नालागढ़ * नयपालियों से ख़ाली कराली नयपालियों का राज इस समय कोटकांगड़े तक पहुंच गया था बिल्कुल पहाड़ी राजाओं को उनके राज से बेदख़ल कर दिया था अथवा उन से भारी कर ठहराकर उन्हें अपना ज़ैलदार बना लिया था बहुतेरे राजा इन नयपालियों के निकाले सरकारी फ़ौज के साथ ख़िदमत के लिये हाज़िर थे हमने इस लड़ाई का हाल ख़ुद राजारामसिंह नालागढ़वाले की ज़ुबान से सुना है वह उस समय जेनरल अक्टरलोनी के साथ था नालागढ़ से सरकारी फ़ौज रामगढ़ की ओर गई नयपालियों का नामी जेनरल अमरसिंहथापा तीन हज़ार सिपाही लेकर उसके बचाने को आया जेनरल अक्टरलोनी ने भी अपनी मदद के लिये कुछ और सरकारी फ़ौज के आ जाने का इन्तिज़ार करना मुनासिब जाना और फिर बड़ी अक़्लमन्दी के साथ मलौन के मज़बूत क़िले की ओर कूच किया जब नयपाली रामगढ़ से
१८१५ ई० मलौन के बचाने को चले रामगढ़ सहज में सरकार के क़ब्ज़े में आगया निदान सरकारी फ़ौज तो उस पहाड़ के नीचे जिस पर मलौन का क़िला है एक नदी के किनारे पड़ी थी और नयपाली

* शिमला की एजंटी के ताबे है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मलौन से सूरजगढ़ तक पहाड़ पर मोरचे जमाये थे रैला-और देवथल इसके बीच में थे दोनों कमज़ोर थे अक्टरलोनी ने चौदहवीं अप्रेल को मेजर इनिस के तहत में तो कुछ फ़ौज रैला पर भेजी और कर्नेलटाम्सन को देवथल पर हमला करने का हुक्म दिया इसी तरह कप्तान शवर्स को क़िले के नीचे नयपालियों की छावनी लेने को रवाना किया। कप्तान शवर्स मारा गया लेकिन रैला और देवथल सरकारी फ़ौज के क़ब्ज़े में आया। दूसरे दिन अमरसिंह ने भक्तिसिंह को इन्हें वहां से निकालने को बढ़ाया और आप निशान के साथ बची हुई फ़ौज लेकर मदद को मुस्तइद रहा। नयपाली अर्धचन्द्राकार भक्तिसिंह के पीछे अंगरेज़ी फ़ौज का दोनों कनारा दबाए शेरों की तरह इस तरह पर सीधे बढ़े आते थे कि यद्यपि सरकारी तोपख़ाने से ज़ंजीरी गोले झाड़ू की तरह मैदान को दुश्मनों से साफ़ कर रहे थे इन नयपालियों के निशानों से सरकारी तमाम तोपों पर कुल तीन अफ़सर और तीन हो गोलंदाज़ बाक़ी रह गये बाक़ी सब काम आये या घायल होकर बेकाम हो गये दो घंटे तक कामिल लड़ाई होती रही आख़िर अंगरेज़ी जवानों ने संगीनें चढ़ाईं और नयपालियों पर हमला कर दिया। पांव न ठहर सके पीठ दिखाई भक्तिसिंह की लोथ खेत रही अमरसिंह क़िले में घुस गया। बीर और बहादुर शत्रु भी आदरनीय है जेनरल अक्टर-लोनी ने भक्तिसिंह की लाश दुशाले में लपेट कर अमरसिंह के पास भिजवा दी उसकी दो स्त्रियां उसके साथ सती हुईं सरकारी फ़ौज रोज़ बरोज़ क़िला लेने की तदबीरें करती जाती थी यहां तक कि आठवीं मई को हमला कर देने की तयारी हुई अमरसिंह ने अब अपनी ताक़त मुक़ाबले की न देखकर इस क़रार पर कि सरकार उसके आदमियों को और जैतक के क़िलेवालों को भी अपने हथियार और माल असबाब समेत नयपाल चला जाने दे क़िले को ख़ाली करके जमना के पच्छिम बिल्कुल इलाक़े छोड़ दिये अमरसिंह के शिकस्त खाने से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नयपाली सुस्त पड़ गये पयाम सुलह का भेजा लेकिन जब सरकार ने देखा कि वह केवल दिन बिताना चाहते हैं और दूसरे साल फिर लड़ने का सामान तयार करते जाते हैं सत्तरह हज़ार फ़ौज देकर जेनरल अक्टरलोनी को कि अब ख़िताब मिलकर सर डेविड अक्टरलोनी होगया था नयपाल पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया इसने अपना लशकर ऐसे ऐसे घाटे से और नाले खोलों से कि जहां घने जंगलों के कारन सूरज की किरण भी नहीं पहुंचती थी निकलकर मकावनपुर से कोस भर के अन्दर जा डाला और एक अच्छी लड़ाई लड़ा ५०० आदमी नयपालियों के मारे गये क़िलादार ने कि काजी भीमसेन का भाई था कहला भेजा कि आप क्यों लड़ते हैं महराज ने आप के कहने बमूजिब सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिया निदान इस सुलहनामे के बमूजिब काली नदी नयपाल की पच्छम सहद्द ठहरी और शिकम के राजा की धरती जो नय-पालियों ने दबा ली थी पूरब में उसे लैटवा दी गई और काठमांडू में एक सरकारी रज़ीडंट का रहना क़रार पाया गवर्नर जेनरल को बादशाह के यहां से मार्क्विस आफ़ हेस्टिंग्ज़ का ख़िताब मिला और सर डेविड अक्टरलोनी के नाम में शुकराना आया॥

यद्यपि मरहठों का ज़ोर घटा दियागया था पर उनका हौसिला भूभल में दबे हुए अंगारे की तरह सुलगता रहा पेशवा फिर भी इनका पेशवा बनने की आर्ज़ू रखता था छुप छुप के नागपुर ग्वालियर और इन्दौर अर्थात् भोंसला सेंधिया और हुल्कर के पास पयाम भेजता रहता था बड़ोदेवाला गायकवाड़ सरकार के कहने में था इसलिये पेशवा उस से ख़ार खाता था आपस की किसी तकरार के तसफ़िये के लिये जब सरकार ने जाना की ज़िम्मावरी लेकर गायकवाड़ की तरफ़ से गंगाधर शास्त्री को पेशवा के पास भिजवाया पेशवा पंढरपुर में था उसके मंत्री त्रिम्बक ने उसे पंढरनाथ के दर्शन को बुलाया जब यह दर्शन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करके मन्दिर से देरे की तरफ़ लौटा पांच आदमियों ने पीछे से झपटकर उसका काम तमाम कर डाला सरकार जान गई कि यह पेशवा के इशारे से हुआ लेकिन उस से कुछ न कहकर चिम्बक को बम्बई के पास ठाणा के क़िले में क़ैद कर दिया पेशवा को यह बहुत बुरा लगा पर इलाज क्या था इस अर्से में पिंडारों ने बड़ा ज़ुल्म मचा दिया था यह निरे लुटेरे थे हिन्दू मुसल्मान सब क़ौम के आदमी उन में शामिल थे सवारी उनकी घोड़े से टट्टू तक और हथियार उनके बंदूक़ से निरे सोंटे तक हज़ारों ही गिनती में थे मंज़िलों का धावा मारते थे जहां जाते थे ठीकरों तक नहीं छोड़ते थे हुल्कर और सेंधिया ने इनको नर्मदा कनारे इलाक़े दे रक्खे थे और दुश्मनों का इलाक़ा तबाह करने को इन्हें बहुत अच्छा वसीला समझते थे अब तक तो इन्हों ने पेशवा और हैदराबाद और नागपुरवाले के इलाक़ों को लूटा लेकिन अब सरकारी अमल्दारी में भी धावा मारना शुरू किया किसी साल बिहार का सूबा लूटा किसी साल सूरत जा घेरा किसी साल गंतूर और कड़प में सिर जा निकाला गवर्नर जनरल को मालूम हो गया कि जब तक यह पिंडारे नेस्तनाबूद न किये जायंगे इस मुल्क में अमन चैन की सूरत पैदा न होगा निदान गवर्नर जेनरल ने हर तरफ़ से फ़ौजों की रवांनगी का हुक्म जारी किया और इस हुक्म से यहां और दक्खन दोनों जगह मिलाकर एक लाख तेरह हज़ार आदमी का लश्कर ३०० तोपों के साथ रवाना हुआ बंगाले की इकसठ हज़ार सिपाह में से बड़ा हिस्सा गवर्नर जेनरल के साथ कानपुर में था दहना बाज़ू आगरे में रहा बायां बुंदेलखंड में उसके बायें और भी दो टुकड़े मिर्ज़ापुर के पास और बिहार की सर्हद्द पर थे बची हुई फ़ौज सर डेविड अक्टरलोनी के तहत में दिल्ली की हिफ़ाज़त को रही दक्खन की बावन हज़ार सिपाह मंदराज के कमांडरइंचीफ़ सर टी० हिस्लप ने पांच हिस्सों में तक़सीम की लेकिन मसल मशहूर है बैल न कूदा कूदी गोंद १८१७ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिंडारों से तो अभी लड़ाई शुरू भी नहीं हुई थी पेशवा ने मुक़ाबले पर कमर बांधी त्रिम्बक ठाणा के क़िले से भाग आया था पेशवा सरकार के दिखलाने को तो उसके गिरफ़्तारी की कोशिश करता था और छुप छुप कर उसे हर तरह की मदद पहुंचाता था जब नई सिपाह भरती करने लगा और सरकारी सिपाह को इधर से फोड़कर अपनी तरफ़ मिलाने का उसका उद्योग ज़ाहिर हो गया रज़ीडंट एल्फ़िंस्टन साहिब ने अपनी फ़ौज को पूना के पूरब की छावनी छोड़कर उत्तर किरकी में रज़ीडंटी के पास आ जाने का हुक्म दिया पेशवा को यह बुरा लगा रज़ीडंट से कहला भेजा कि आप इस हर्कत से बाज़ रहिये रज़ीडंट ने साफ़ जवाब दिया और जब देखा कि पेशवा के सिपाही रज़ीडंटी और छावनी के बीच में जमा होने लगे रज़ीडंटी छोड़कर किरकी की छावनी में चला आया पेशवा के सिपाहियों ने रज़ीडंटी लूटकर जला दी पेशवा की फ़ौज में तख़मीनन् दस हज़ार सवार और दस ही हज़ार पैदल होंगे और सरकारी सिर्फ़ पैदल सिपाही सो भी तीन हज़ार से कम लेकिन सरकारी सिपाहियों ने हमला किया और पेशवा की सारी फ़ौज को भगा दिया पेशवा ने राह पुरंदर की ली वहां भी पैर न जमे सतारे गया जब वहां भी न ठहर सका सेवाजी के जानशीन अर्थात् सितारे के राजा को उसके कुनबे समेत साथ लेकर पहले दक्खन की तरफ़ बढ़ा फिर मालवे को फिरा फिर पूना की ओर मुड़ आया निदान आगे आगे तो पेशवा * अपने नाम के अर्थ बमूजिब भागा चला जाता था और पीछे पीछे सरकारी फ़ौज उसके रगेदने को परछाईं की तरह पीछा किये हुए थी पूना के पास भीमा किनारे कोरा गांव में एक छोटी सी लड़ाई भी हो गई खेत सरकारी फ़ौज के हाथ रहा सितारे के क़िले पर सरकार ने राजा का

* फ़ारसी में पेश आगे को कहते हैं पेशवा का अर्थ जो आगे रहे इसका नाम बाजीराव था ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निशान चढ़ा दिया और पेशवा की माज़ूली का उसके उहदे से इश्तिहार जारी कर दिया अष्टी की लड़ाई में पेशवा का वफ़ादार जेनरल गोकला मारा गया और सितारे का राजा अपने कुनबे समेत सरकार की हिमायत में चला आया निदान पेशवा इस क़दर हैरान और परेशान हुआ कि आख़िर कार थककर और हार मानकर सन् १८१८ में आठ लाख साल का पिंशन क़बूल कर लिया और मुल्क से दस्तबर्दार होकर गंगा सेवन के लिये बिठूर में आ रहा त्रिम्बक को सरकार ने गिर-फ़्तार करके जनम भर के लिये चनार के क़िले में क़ैद कर दिया इस पेशवा की उखाड़ पछाड़ में नागपुर के राजा आपा साहिब की नटखटी सरकार को बख़ूबी साबित हो गई वह पेशवा और पिंडारों से साज़िश रखता था और पूना की रज़ीडंटी फूंकने के बाद उसने पेशवा का दिया हुआ ख़िताब सेनापति का अंगीकार किया था और अपने झंडे पर पेशवा का निशान अर्थात् ज़रीपटका चढ़ा दिया था जेन्किंस साहिब रज़ीडंट अपनी रज़ीडंटी की हिफ़ाज़त का उद्योग करने लगे रज़ीडंट के पास उस समय कुल तेरह सौ सिपाही थे और राजा के पास बीस हज़ार सवार पैदल रज़ीडंटी और शहर के बीच में एक पहाड़ी सी है नाम उसका सीताबलदी उसी पर सरकारी सिपाहियों ने मोरचा जमाया सत्ताईसवीं नवम्बर सन् १८१७ को राजा की फ़ौज ने इन पर हमला किया इस लड़ाई में सरकारी सिपाहियों ने निहायत बहादुरी दिखलाई यहां तक कि चौथाई कट गये पर खेत न छोड़ा राजा की सारी फ़ौज को जो दलबादल की तरह उमड़ आई थी छिन्न भिन्न करके भगा दिया जब राजा ने यह हाल देखा कहला भेजा कि फ़ौज बे परवानगी लड़ी मुझे बड़ा अफ़सोस है मैं सरकार का ताबे हूं रज़ीडंट ने जवाब दिया कि अगर तू सच्चा है फ़ौज छोड़कर हमारे पास चला आ राजा रज़ीडंटी में चला आया रज़ीडंट ने उसे फिर नये सिर से नागपुर की गद्दी पर बिठाया लेकिन यह नादान इस पर भी अपनी हर्कत से

१८१८ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाज़ न आया सरकार को दुश्मन और पेशवा को दोस्त समझता रहा तब नाचार सरकार ने उसे नज़रबंद करके इलाहाबाद को रवाना किया और उसकी जगह नागपुर की गद्दी पर रघुजी भोंसला के पोते को बिठाया लेकिन आपा रास्ते से भागकर नागपुर से ८० कोस पर नर्मदा के दक्खन एक पहाड़ी गोंद सर्दार की पनाह में चला गया और वहां फ़ौज जमा करके
१८१६ ई० उपद्रव उठाने लगा निदान सन् १८१६ में जब सरकार ने उसके इलाज की तदबीर की वह उन जंगल पहाड़ों को छोड़कर सेंधिया के क़िले असीरगढ़ में जा घुसा और फिर फ़क़ीरी भेस में पंजाब की तरफ़ चला गया सरकार ने जोधपुर के राजा की फ़ेल ज़ामनी पर इसे वहां रहने की इजाज़त दी और एक मुद्दत बाद उसी जगह इसका देहान्त हुआ सरकार ने इस क़सूर पर कि असीरगढ़ के क़िलादार ने आपा साहिब को पनाह दी थी और क़िलादार को सेंधिया की पोशीदा पर्वानगी थी सेंधिया को सज़ा देने के लिये उस मशहूर मज़बूत क़िले को घेरकर अपने दख़ल में कर लिया अब रह गया हुल्कर सो जस्वन्तराव का तो परलोक होगया था उसकी रानी तुलसीबाई ने एक लड़का गोद लेकर गद्दी पर बिठाया था तुलसीबाई ने अपनी फ़ौज के डर से अपने यार गनपतराव समेत सरकारी पनाह में चला आना चाहा लेकिन फ़ौज ने इस में अपनी तबाही समझकर तुरन्त उसका सिर काट डाला और लड़के राजा के नाम से सरकार के साथ लड़ने का सामान किया मंदराज का कमांडरइंचीफ़ जो पास ही मौजूद था बिजली की तरह फ़ौज लेकर इनके सिर पर पहुंचा और सिप्रा पार महीदपुर में इन्हें ऐसा काटा मारा और भगाया कि तब से वह राज बिल्कुल सुस्त पड़ गया सन् १८१८ में सुलहनामा लिख गया क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि सरकार ने तो केवल लुटेरे और डाकू अर्थात् पिंडारों का इस फ़ौज से नाश करना चाहा था लेकिन वहां उनके हिमायती बरन मूल कारन मरहठों ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का नाश हो गया मानो बिल्कुल हिन्दुस्तान निष्कण्टक हुआ और आप से आप सरकार के साये में चला आया सिवाय सितारे के तमाम इलाक़े पेशवा के और अक्सर इलाक़े नागपुर के दख़ल में आ जाने से सरकारी अमल्दारी बहुत बढ़ गई अजमेर भी इनके क़ब्ज़े में आया और कच्छ गुजरात और रजपुताने के सब राजाओं ने बरन उदयपुर के रानाओं ने भी जिन्हों ने न मुसल्मानों के साम्हने और न मरहठों के आगे कभी सिर झुकाया था बड़ी ख़ुशी से सरकार का रक्षा का हाथ अपने ऊपर स्वीकार किया जब पेशवा ऐसे सर्दार की जो नव लाख घोड़ों का धनी कहलाता था बाईं पच गई तो अब पिंडारों का हम क्या हाल लिखें इतना ही लिखना काफ़ी है कि दक्खन की सरकारी फ़ौज ने नर्मदा पर होते ही पिंडारों के बिल्कुल इलाक़ों में क़ब्ज़ा करके उन्हें तीन तेरह कर दिया और बंगाले की सरकारी फ़ौज ने भी ख़ूब उनका शिकार किया अमीरख़ां ने जिसके जानशीन अब टोंक के नव्वाब कहलाते हैं अपनी लुटेरी फ़ौज दूर करके सरकार को अहदनामा लिख दिया करीमख़ां और वासिलमुहम्मद पिंडारों के सर्दारों ने जो महीदपुर में हुल्कर की फ़ौज के साथ सरकार से लड़े थे अपने तईं सरकार के हवाले कर दिया सरकार ने उन्हें खाने को गोरखपुर में जागीरें दीं वासिलमुहम्मद ने भागना चाहा था और जब भाग न सका ज़हर खाकर मर गया इन पिंडारों का नामी सर्दार चीतू जो आपा साहिब के साथ असीरगढ़ तक गया था जंगल में शेर का लुक़मा हुआ ॥

लखनऊ का नव्वाब वज़ीर सआदतअलीख़ां सन् १८१४ में मर गया था उसके बेटे और जानशीन ग़ाज़ियुद्दीनहैदर ने अब सरकार की इजाज़त से लक़ब बादशाह का इख़्तियार किया ॥

मार्क़िस आफ़ हेस्टिंग्ज़ सन् १८२३ में गवर्नरजेनरल के उहदे से मुस्ताफ़ी होकर बिलायत गया और वहां उसे इन ख़िदमतों के इनाम में छ लाख रुपये की क़ीमत का सरकार से इलाक़ा १८२३ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिला इसके उहदे पर जार्ज केनिंग* मुक़र्रर हुआ था लेकिन पीछे से जब उसने उस से इंकार किया लार्डअम्हर्स्ट गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर पहली अगस्त को कलकत्ते में दाख़िल हुआ॥

नयपालियों की तरह बर्म्हावालों का भी सिर खुजलाया मुल्क बढ़ाने का शौक़ पैदा हुआ अराकान मनीपुर और आसाम फ़तह करके कचार पर चढ़ाव किया कचार के राजा ने सरकार की पनाह ली सरकार ने उसकी मदद को फ़ौज भेजी लेकिन बर्म्हावालों का तो सिर आस्मान पर चढ़ा हुआ था गवर्नर जेनरल से कहला भेजा कि चटगांव ढाका और मुर्शिदाबाद भी किसी ज़माने में हमारे मुल्क का हिस्सा था भला चाहते हो तो अब भी छोड़ दो गवर्नर जेनरल तो हंसकर चुप रहे लेकिन इन पागलों ने सरकारी इलाक़ों को अपनी नानी जी की मीरास समझकर चटगांव के कनारे पर जो शाहपुरिया के टापू में सरकारी चौकी के तेरह जवान थे तीन उन में से काट डाले
१८२४ ई० बाक़ी बेचारे जान लेकर भागे निदान पांचवीं मार्च सन् १८२४ को सरकार ने लड़ाई का इश्तिहार दिया कुछ थोड़ी सी फ़ौज ने तो ब्रम्हपुत्र के कनारे कनारे जाकर बिल्कुल आसाम में दख़ल किया और दूसरी ने अराकान जा लिया और बाक़ी ११००० फ़ौज ने जहाज़ों† में सवार होकर रंगून पर निशान जा चढ़ाया जब सरकारी फ़ौज बर्म्हा की राजधानी आवा लेने के इरादे वहां से आगे बढ़ी हर लड़ाई में बर्म्हावालों पर फ़तह पाती गई लेकिन आबहवा की ख़राबी और अनजान मुल्क होने के कारन आदमी और रुपया दोनों का बड़ा नुक़सान हुआ बड़े बड़े बिकट जंगल और दलदलों में लड़ना पड़ा अंधे के हाथ जैसे बटेर लगे मंगीमहाबंदूला के आदमियों ने

* इसी के बेटे लार्ड कनिंग ने सन् १८५७ का बलवा दबाया और इस मुल्क को तबाह होने से बचाया॥

† इन में डायना नाम पहला ही धूएं का जहाज़ था जो लड़ाई के लिये भेजा गया॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहीं चटगांव के ज़िले में रामू के दर्मियान ३५० सरकारी सिपाही काट डाले थे राजा ने इसे दूसरा रुस्तम समझा सेनापति मुक़र्रर करके सरकारी फ़ौज के मुक़ाबले को भेजा इसने भी बीड़ा उठाया कि बे फ़रंगियों के निकाले दर्बार में मुंह नहीं दिखलाऊंगा लेकिन सच उसने मुंह नहीं दिखलाया कई लड़ाइयों के बाद डुनाव्यू के क़िले में बान लगकर मर गया निदान जब सरकारी फ़ौज इन्हें शिकस्त देती इनके क़िले और तोपख़ाने लेती फ़तह के निशान उड़ाती आवा से कुल चारमंज़िल इधर यंडाबू में जा पहुंची राजा ने घबराकर सुलहकर ली १८२६ ई० चार क़िस्तों में एक करोड़ रुपया लड़ाई के ख़र्च बाबत दिया * और आसाम अराकान और मर्त्तबान के दक्खन का बिल्कुल मुल्क छोड़ दिया ॥

इसी लड़ाई के शुरू में सैंतालीसवीं पल्टन को और दो पल्टनों के साथ जो बारकपुर की छावनी में थीं रंगून जाने का हुक्म हुआ था सिपाही समन्दर का नाम और बर्म्हा की आबहवा और रामू की क़तल का हाल सुनकर हिचकिचा गये जाने से इन्कार किया परेड पर गोरों की पल्टनें बुलाई गयी सैंतालीसवां के बहुतेरे सिपाही तोप से उड़ा दिये गये बहुतेरे फांसी पड़े बहुतेरों ने क़ैद में मिट्टी काटी बर्क़ों के नाम कट गये ॥

भरतपुर में (सन् १८२३) राजा रंजीतसिंह का निस्संतान देहान्त होने पर उसका भाई बलदेवसिंह गद्दी पर बैठा उसके भतीजे दुर्जनसाल ने इस झूठी बात पर कि मुझे रंजीतसिंह ने गोद लिया था गद्दी का दावा किया बलदेवसिंह ने अपने लड़के बलवन्तसिंह को रजपुताने के रज़ीडंट सर डेविड अक्टरलोनी की

* लेकिन अपनी तवारीख़ों में यही लिखा कि किसी टापू के जंगली आदमी भूलकर इस मुल्क पर चढ़ आये थे जब भूखों मरने लगे दयावान महारानी ने करोड़ रुपया राहख़र्च देकर अपने वतन को लौट जाने की इजाज़त मर्हमत फ़र्माई यह हाल है एशिया की तवारीख़ों का !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोद में रख दिये। और कहा कि दुर्जनसाल ज़रूर मेरे बाद बखेड़ा करेगा मैं चाहता हूं कि आप मेरे रहते मेरे लड़के को सरकार की तरफ़ से गद्दी पर बैठा दें रज़ीडंट ने ख़ुशी से यह बात क़बूल की और बलवन्तसिंह को गद्दी पर बैठा दिया सन् १८२५ में बलदेवसिंह का परलोक हुआ दुर्जनशाल ने बलवन्तसिंह के मामू को मार डाला और बलवन्तसिंह को क़ैद करके राजगद्दी पर आप बैठा सर डेविड अक्टरलोनी ने लड़ाई की तयारी की लेकिन सरकार ने उसकी यह तजवीज़ पसंद और मंज़ूर न की सर डेविड अक्टरलोनी ने उसी दम इस्तीफ़ा भेजा और मेरट के मुक़ाम में परलोक को सिधारा भरतपुरवालों का गुमान है कि उसने ज़हर खाया उसके उहदे पर सर चारलस मेटकाफ़ मुक़र्रर हुआ इस अर्से में दुर्जनसाल का भाई माधोसिंह उस से बिगड़ गया और डीग में जाकर सिपाह भरती करने लगा सरकार ने देखा कि पिंडारों की तरह यह लोग फिर लूट मार का बज़ार गर्म करेंगे और होते होते सरकारी अमल्दारी में उपद्रव उठावेंगे दुर्जनसाल को बहुत समझाया जब उसने कुछ न माना लार्ड कम्बर्मिअर कमांडरइन्चीफ़ को बीस हज़ार फ़ौज लेकर दुर्जनसाल के निकालने के लिये भेजा दसवां दिसम्बर को सरकारी लश्कर भरतपुर के साम्हने बहुंचा और अठारहवीं जनवरी को सुरंगें उड़ा कर क़िला तोड़ा दुर्जनसाल पकड़ा गया बलवन्तसिंह को सरकार ने नये सिर से गद्दी पर बिठाया॥

इन्हीं दिनों में अर्थात् सन् १८२४ में सरकार ने डच लोगों से मलाका और सिंहपुर का टापू ले लिया अब यही स्ट्रेट सेट्लमेन्ट कहलाता है॥

१८२८ ई० लार्ड एम्हर्स्ट के जाने पर वही लार्डबेंटिंक जो साबिक़ में मंदराज का गवर्नर था वसीले के ज़ोर से गर्नवर जेनरल मुक़र्रर हुआ इसके वक़्त में लड़ाई भिड़ाई कोई नहीं हुई बड़ी भारी बात यह हुई कि सती होने की महा बुरी रस्म यक क़लम् मौक़ूफ़ की गयी॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुड़ग का राजा * अपने ज़ुल्म के बाइस दक्खन से बनारस क़ैद हो आया। और उसका इलाक़ा उसकी प्रजा की ख़ाहिश बमूजिब सरकारी अमल्दारी में शामिल हो गया ॥

लार्ड बेंटिंक ने सरकारी ख़र्च की बहुत तख़फ़ीफ़ की और हिन्दुस्तानियों को सरकारी बड़े उहदों के मिलने की नेव डाली ॥

सन् १८३३ में कम्पनी को २० बरस के लिये फिर सनद मिली १८३३ ई०
हिन्दुस्तान की तिजारत तो पहले ही इसके हाथ से निकल गया था अब इस सनद के रू से चीन की भी बाक़ी न रही ॥

अगस्त सन् १८३५ में लार्ड बेंटिंक ने काम छोड़ा मार्च सन् १८३५ ई०
१८३६ तक अर्थात् लार्ड अकलेंड के पहुंचने तक सर चार्लस-मेटकाफ़ ने गवर्नर जेनरल का काम किया ॥

लखनऊ का बादशाह नसीरुद्दीनहैदर † मर गया पहले तो १८३७ ई०
इसने दो लड़कों को अपना माना था लेकिन फिर इन्कार किया इसी कारन कर्नल लो रज़ीडंट ने उसके मरने पर उसके चचा नसीरुद्दौला को जो सआदतअलीख़ां का तीसरा बेटा था और मुसल्मानों की शरा बमूजिब वारिस हो सकता था मसनद पर बिठाना चाहा बिल्कुल तयारी हो चुकी थी सिर्फ़ मसनद पर बैठने की देर थी कि यकायक बादशाहबेगम अर्थात् ग़ाज़ियुद्दीनहैदर की बेगम ने कुछ सिपाही महल में घुसाकर नसीरुद्दौला और रज़ीडंट दोनों को घेर लिया और आप आकर उन दोनों लड़कों में से एक को जिसका नाम मुंनाजान था मसनद पर बिठा दिया रज़ीडंट ने बेगम को बहुतेरा समझाया कि यह क्या पागलपना है लेकिन जब देखा कि उसकी बुद्धि बिल्कुल नाश हो गयी है किसी ढब महल से बाहर निकल आये और कुछ सरकारी फ़ौज ले जाकर बेगम और उसके पोते को तो पकड़कर क़ैद रहने को चनार के क़िले में भेज दिया

* इसके पीछे विलायत जाकर अपनी लड़की को अंगरेज़ी पढ़ाया और उस लड़की ने वहां एक अंगरेज़ से ब्याह किया ॥

† ग़ाज़ियुद्दीनहैदर का बेटा था ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और नसीरुद्दौला को मुहम्मदअली शाह के नाम से मसनद पर बिठाया इस में बेगम के तीस चालीस आदमी मारे गये और घायल हुए इक़बालुद्दौला नसीरुद्दौला के बड़े भाई का बेटा था लेकिन उसने बेगम की तरह बेवक़ूफ़ी न करके दूसरी तरह की बेवक़ूफ़ी की कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स के साम्हने अपना दावा पेश करने को ख़ुद विलायत गया और जब वहां से साफ़ जवाब पाया बग़दाद में रहना इख़्तियार कर लिया उसका बड़ा भाई यमीनुद्दौला बनारस में रह गया ॥

इसी के थोड़े दिन बाद सितारे के राजा की भी कुछ मत मारी गयी यह न समझा कि उसने वह अपने पुरखों की गद्दी केवल सरकार की मिहर्बानी से पाई आख़िर मरहठा था गोवे में पुर्टगीज़ों से जोड़ तोड़ लगाने लगा कि उनकी फ़ौज अंगरेज़ों को निकालकर इसे मुल्क का मालिक करे और यह उन्हें धन और धरती दे नागपुरवाले आपासाहिब से भी चिट्ठी पत्री जारी की सरकारी फ़ौज के सिपाहियों के बहकाने की कोशिश होने लगी सरकार ने बहुत समझाया आख़िर जब किसी तरह अपनी हर्कतों से बाज़ न आया क़ैद करके बनारस भेज दिया और उसके भाई को गद्दी पर बिठाया ॥

इस अर्से में अहमदशाहदुर्रानी के पोते शाहशुजाउल्मुल्क को जो अफ़ग़ानिस्तान का बादशाह था उसके भाई महमूद ने वहां से निकाल दिया था शाहशुजा तो कुछ दिन रंजीतसिंह की क़ैद में रहकर और कोहनूर हीरा * खोकर पनाह के लिये अंगरेज़ी अमल्दारी में चला आया और महमूद को इस कारन

---

* कोहनूर दिल्ली से नादिरशाह लेगया था नादरशाह से अहमदशाह के हाथ लगा शाहशुजा से रंजीतसिंह ने बहुत बुरी तरह से लिया वह बेचारा इसके पास मदद और पना मांगने आया था इसने कोहनूर के लालच में पड़कर उस पर पहरे बैठा दिये और जब तक उसने कोहनूर न हवाले किया खाना पीना बन्द किया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि उसने अपने वज़ीर फ़तहख़ां बारकज़ई को अन्धा करके मार डाला था फ़तहख़ां के बेटे दोस्तमुहम्मदख़ां ने तख़्त से उतारकर काबुल पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया क़न्दहार दोस्त-मुहम्मद के भाइयों के दख़ल में रहा महमूद हिरात को चला गया और उसके बाद उसका बेटा कामरां वहां का बादशाह हुआ कौंट सिमोनिच ने जो ईरान में रूस का एल्ची था यह मौक़ा अपने मालिक का इस तरफ़ इख़्तियार बढ़ाने के लिये बहुत ग़नीमत समझा ईरान के बादशाह को उभारा कि अफ़-ग़ानिस्तान पर दावा करे और उसका लश्कर हिरात के मुहासरे को भिजवाया बरन फ़ौज ख़र्च के लिये कुछ रुपया भी अपने यहां से दिलाया यद्यपि ईरान का लश्कर हिरात से हारकर लौट गया और जब इङ्गलिस्तान ने रूस से जवाब तलब किया रूस के शाहंशाह ने असली बात छुपाकर कौंट सिमोनिच के बिल्कुल कामों से इन्कार कर दिया लेकिन सरकार कम्पनी को बख़ूबी साबित हो गया कि रूस का हिन्दुस्तान पर दांत है जब क़ाबू पावेगा इधर पैर फैलावेगा और अलक्ज़ंडर बर्निस साहिब ने भी जो सन् १८३० में एल्ची होकर काबुल गये थे यही बयान किया कि दोस्तमुहम्मद बिल्कुल रूसवालों की सलाह में है और रूसवालों ने उस से पक्का वादा किया है कि हम पिशावर रंजीतसिंह से वापस ले देंगे सरकार ने ज़रा भी इस बात पर ग़ौर न किया कि भला रूसवाले इधर क्योंकर आसकते हैं अगर कहें कि क्या वह ईरान तूरान तातार और अफ़ग़ानिस्तानवालों को बहकाकर और लालच दिखलाकर उन्हें हिन्दुस्तान पर नहीं चढ़ा सकते हैं तो टुक सोचना चाहिये कि अब वह महमूद ग़ज़-नवी और चंगेज़ख़ां का ज़माना नहीं है कि जब नंगे पांव और नंगे सिर गक्खर * लोग महमूद के रिसालों को काटते थे और एक हाथी के भाग जाने से अनन्दपाल सरीखे राजा लड़ाई हार

* अनन्दपाल की लड़ाई में गक्खरों ने महमूद ग़ज़नवी का लश्कर लूटा था ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाते थे जब जंगल से सोंटे काट काटकर बैलों पर सवार जलालुद्दीन ख़ारज़मवाले के आदमी सिंध सागर दुआब में चंगेज़ख़ां की फ़ौज से लड़ते थे और बड़े बड़े बादशाह बिलकुल मदार लड़ाई का अपना तीरंदाज़ों पर रखते थे बराबर देखते चले आते हो कि कैसी कैसी दलबादल सेना शाहसुल्तान नव्वाब मरहटे नयपाली और बर्ह्मावालों की सरकारी ज़रा ज़रा सी फ़ौज के साम्हने पीठ दिखा गयी बात तो यह है कि डूप्ले और बस्सी सरिखे फ़रासीसियों की सिखलाई सिपाह भी अंगरेज़ी तोपख़ाने के साम्हने रूई के फाहों की तरह उड़ गयी अगर कहें कि रूसवाले क्या अपनी फ़ौजें पंजाब तक नहीं ला सकते हैं तो टुक सोचना चाहिये कि रूस और पंजाब के दर्मियान कैसे कैसे जंगल उजाड़ और पहाड़ पड़े हैं पहले तो रूस में इतना रुपया नहीं कि पचास हज़ार भी अच्छी क़वाइदवाली फ़ौज ज़रूरी तोपख़ाने के साथ इस राह लाने का ख़र्च देसके दूसरे जितने दिन उस फ़ौज को एक हिन्दूकुश पहाड़ के घाटे पार होने में लगेंगे हमारी सरकार उस से दूनी फ़ौज धूंए के जहाज़ और रेलगाड़ियों पर इङ्गलिस्तान से सिंधु कनारे पहुंचा सकती है और फिर रूसवाले तो वहां रास्ते की सख़्ती से थके थकाये और अफ़ग़ानिस्तान में रसद की कमी और वहां की आबहवा नई होने के कारन भूखे मांदे पहुंचेंगे और अंगरेज़ी फ़ौज सर्हद पर मानों अपने घर में होगी पंजाब की ज़र्ख़ेज़ी मशहूर है कैसी कुछ रसद पहुंचेगी इस में किसी तरह का संदेह नहीं कि उन पचास हज़ार रूसियों के तबाह करने को सरकारी एक पलटन गोरों की ख़ैबर के मुहाने पर क़ाफ़ी होगी निदान सरकार ने ज़रा भी इस बात पर ग़ौर न किया और काबुल में फ़ौज लेजाकर शाहशुजा
१८३८ ई० को तख़्त पर बैठाने का मंसूबा बांधा रंजीतसिंह को भी उस में शामिल कर लिया और आपस में अहद पैमान होगया कि पिशावर वग़ैरः जो कुछ इलाक़े सिंधु उस पार ख़्वाह इस पार रंजीतसिंह ने दबा लिये थे शाहशुजा या उसका कोई जानशीन कभी उन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर कुछ दावा न करे सिंध के अमीरों से भी क़ौलक़रार हो गया कि उस राह सरकारी फ़ौज के जाने आने में कुछ रोक टोक न होवे निदान ७५०० सरकारी फ़ौज बंगाले और बम्बई की ११० तोपों के साथ सर जानकीन साहिब बम्बई के कमांडरइन्चीफ़ के तहत में सिंध और बलूचिस्तान की राह सिंध नदी और बोलानघाटा पार होकर कंदहार में पहुंची और १८३९ ई० आठवीं मई को शाहशुजा वहां तख़्त पर बैठा बड़ी धूम धाम से उसकी सलामी हुई सर विलियम् मेकनाटन साहिब सरकार की तरफ़ से एल्‌ची के तौर पर शाह के साथ थे अलक्ज़ंडर बर्निस साहिब भी हमराह थे इनको उमेद थी कि अफ़ग़ानिस्तान में दाख़िल होते ही रअय्यत शाह की तरफ़ रुजू हो जायगी लेकिन वह बात बिल्कुल ज़ुहूर में नहीं आयी यहां तक कि शाह ने जब वहां के दस्तूर बमूजिब दस हज़ार रुपया नालबन्दी को और क़ुरान क़सम खाने को ग़िलज़ई सर्दारों के पास भेजा उन्हों ने रुपया तो ले लिया और क़ुरान वैसे का वैसा वापस किया तेईसवीं जुलाई को बारूत से फाटक उड़ाकर सरकारी फ़ौज ने गढ़ ग़ज़नी लिया और सातवीं अगस्त को फ़तह का निशान उड़ाती काबुल में दाख़िल हुई दोस्तमुहम्मद तुर्किस्तान की तरफ़ भाग गया शुजा के बेटे शाहज़ादा तैमूर के साथ जो पांच हज़ार सिपाही पिशावर से काबुल को रवाना हुए थे और जिनकी मदद के लिये रंजीतसिंह ने छ हज़ार सिख जेनरल वंतूरा के तहत में तैनात किये थे वह भी ख़ैबर घाटे की राह अलीमस्जिद में लड़ते और जलालाबाद का क़िला लेते तीसरी सितम्बर को काबुल में आन पहुंचे जब सरकार ने देखा कि शुजा काबुल में अपने बाप दादा के तख़्त पर बैठ गया उस तख़्त की सुस्त बुनयादी पर मुतलक़ लिहाज़ न करके कुछ थोड़ी सी बंगाले की फ़ौज वहां इन्तिज़ाम के लिये छोड़ दी और बाक़ी सब को हिन्दुस्तान में वापस तलब कर लिया क़ंदहार जाते वक़्त बलूचिस्तान के हाकिम मिहराबख़ां ने कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छेड़छाड़ की थी इसी लिये बम्बई की फ़ौज ने लौटते वक़्त उस का क़िला क़िलात तोड़ डाला और वह भी उस लड़ाई में बहादुरी के साथ मारा गया लार्ड अक्लेंड को काबुल फ़तह होने की खुशी में विलायत से अर्ल का ख़िताब आया सर जानकीन बैरन हुआ और भी बहुतों का उनकी ख़िदमत बमूजिब
१८४० ई० दर्जा बढ़ा चौथी नवम्बर को जब सर विलियम् मेकनाटन साहिब हवा खाकर अपनी कोठी को आते थे रास्ते में एक सवार ने ख़बर दी कि दोस्तमुहम्मद हाज़िर है और फिर दोस्तमुहम्मद ने बढ़कर और घोड़े से उतरकर तलवार नज़र की मेकनाटन साहिब ने उसकी बड़ी ख़ातिर्दारी की और नज़र्बन्द रहने के लिये हिन्दुस्तान में भेज दिया इस अर्से में छोटे छोटे लड़ाई झगड़े बेशक हर तरफ़ होते रहे लेकिन वह किसी गिनती में न थे कभी कोई सर्दार मालगुज़ारी अदा करने में देर करता सरकारी सिपाही उसका गढ़ क़िला तोड़ फोड़कर उसे होश में लादेते कभी कोई दोस्तमुहम्मद के बेटे अकबरख़ां की मदद के लिये सिर उठाना चाहता वहां यह फ़ौरन पहुंच कर उसे उसी जगह दबा देते यहां तक कि सर विलियम् मेकनाटन साहिब ने समझा कि अब मुल्क का इन्तिज़ाम बख़ूबी हो गया और क़स्द किया कि अलक्ज़ंडर बर्निस को अपने
१८४१ ई० उहदे पर मुक़र्रर करके आप गवर्नरी के उहदे पर जो सरकार से मिला था बम्बई चले आवें और जो कुछ सरकारी फ़ौज काबुल में रह गयी थी उसे भी हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना कर दें यह न सोचे कि अफ़ग़ानिस्तान मुसल्मानों का मुल्क है हिन्दू और मुसल्मान में ज़मीन और आस्मान का फ़र्क़ है वहांवाले ख़ूब समझे हुए थे कि शाहशुजा अंगरेज़ों का कट-पुतली है और तमाशा यह कि अंगरेज़ों की बदौलत उसे अपने बाप दादा का तख़्त नसीब हुआ तो भी वह इन से नाराज़ था अपने मुल्क में इनका रहना हर्गिज़ पसन्द नहीं करता था इधर ईश्वर को भी मंज़ूर था कि चाहे जैसा कोई बड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामर्थी और बुद्धिमान क्यों न हो एक दिन ठोकर खाजावे वरन यह उसकी अत्यन्त कृपा और अनुग्रह है क्योंकि ऐसी ही ठोकरें खाने से मनुष्य अपनी बुद्धि और अपने बल का भरोसा न रखकर सदा परमेश्वर का सहारा ढूंढता है और उसके डर से अन्याय और अनुचित काम न करके महाउन्नति को पहुंचता है जो ठोकर न खाय अभिमान में डूबकर फ़िरऔन * की तरह यकबारगी नाश हो जाता है निदान अब आगे अंगरेज़ी अफ़सरों के जो जो काम काबुल में सुनोगे बस यही कहोगे "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" निदान वहां बलवा होने का तत्काल कारन यों बयान करते हैं कि किसी अफ़ग़ान सर्दार ने किसी अंगरेज़ी उहदेदार की कुछ शिकायत † उसके अफ़सर से की अफ़सर ने कुछ भी नहीं सुनी सख़्त सुस्त कहके निकलवा दिया और यह बात कुछ उसी के वास्ते या नई न थी उस अफ़ग़ान ने इस बात की शिकायत शुजा से की सुजा के मुंह से उस वक़्त दर्बार में बे इख़्तियार यह निकल गया "किअज़ शुमा हेच नमेआयद" अर्थात् तुम लोगों से कुछ भी नहीं बन पड़ता है बस इतना कहना मानों अफ़ग़ानों के बिगड़े हुए दिलों की भरी हुई तोप पर रंजक में फ़लीता पहुंचाना था सवेरे ही दूसरी नवम्वर को काबुलवालों ने बलवा किया दूकानें सब बन्द हो गयीं दो तीन सौ बदमआशों ने बर्निस साहिब की कोठी में जाकर उन्हें और तमाम साहिब लोग मेम लड़के और हिन्दुस्तानी नौकरों को जो वहां उस वक़्त मौजूद थे मार डाला और तमाम माल असबाब लूटकर मकानों को फूंक दिया बर्निस साहिब शहर में रहते थे जब उनके मारे जाने की ख़बर छावनी में पहुंची इस बात के बदल

---

* मिसर का बादशाह था मूसा के समय में ख़ुदाई का दावा किया था आख़िर दर्या में डुबाया गया ॥

† यह शिकायत शायद किसी लौंड़ी के निकाल लेजाने के बाब में थी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि तुर्त सब जवान कमर कसकर शहर में चले आते और बलवाईयों को जैसा उन्हों ने किया था उसका मज़ा चखाते उनके अफ़सर नाहक़ सिपाहियों को इधर उधर भेजने बुलाने और निष्फल जोड़ तोड़ जमाने में अपना अनमोल समय खोने लगे अगर बालाहिसार में भी चले जाते जहां शाहशुजा रहता था और शहर से लगा हुआ था मक़दूर न था कि कभी कोई उनको उस क़िले से निकाल सकता लेकिन जेनरल एलफ़िंस्टन के दिमाग़ में ख़लल आगया था और ब्रिगेडियर शिल्टन जो उसका मददगार मुक़र्रर हुआ था हिन्दुस्तान लौटने की आर्ज़ू में जी देता था दोनों ने सर विलियम् मेकनाटन से यही कहा कि अब काबुल में रहना नामुम्किन जिस तरह बने जलालाबाद पहुंचने का बन्दोबस्त करो और वहां से हिन्दुस्तान को चल दो बलवाइयों का ज़ोर इस अर्से में बहुत बढ़ा सारा काबुल पहाड़ी अफ़ग़ानों से भर गया शहर के बाहर भी जिधर देखो यही दिखलाई देते थे मानों सारे मुल्क में बलवा हुआ बाईसवीं नवम्बर को अकबरख़ां भी काबुल में आकर उनके शामिल हो गया निदान जब सर विलियम् मेकनाटन ने देखा कि सरकारी फ़ौज का हर तरफ़ नुक़सान होता जाता है और उसके अफ़सर सिवाय हिन्दुस्तान लौट चलने के और किसी बात पर मुस्तइद नहीं होते अकबरख़ां से काबुल छोड़ने की बातचीत शुरू की और यह ठहरी कि दोनों की मुलाक़ात हो उस में सारी शर्तें ते पाजायं लोगों ने मेकनाटन साहिब से कहा कि अकबरख़ां का एतिबार करना अक़्लमन्दी नहीं है उन्हों ने इतना ही जवाब दिया कि हम ख़ूब जानते हैं लेकिन ऐसी ज़िन्दगी से सौ दफ़ा मरना बिहतर है निदान तेईसवीं दिसम्बर को क़रीब दोपहर के सर विलियम् मेकनाटन साहिब कप्तान लारंस * ट्रेवर और मिकंज़ी को साथ लेकर छावनी से अकबरख़ां को

* यही सर हेनरी लारंस सन् १८५७ के बलवे में अवध के चीफ़ कमिश्नर थे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुलाक़ात को बाहर निकले अकबरख़ां इस्तिक़बाल करके उन्हें अपने डेरे पर ले गया लेकिन वहां इन चारों से पिस्तौल और तलवारें छिनवाकर तीन को तो अपने सवारों के पीछे बिठला किसी क़िले में भिजवा दिया (कप्तान ट्रेवर घोड़े से गिर जाने के बाइस रास्ते में मारा गया) और सर विलियम् मेकनाटन पर जब उन्हों ने अकबरख़ां के काबू से निकलना चाहा उसने तपंचा चलाया और फिर उसके साथियों ने इन्हें टुकड़े टुकड़े कर डाला फ़ौजवालों की इस पर भी आंखें न खुलीं फिर अकबरख़ां से सुलह की बातचीत की उस दग़ाबाज़ ने यह शर्त ठहरायी कि सरकारी फ़ौज तमाम ख़ज़ाना और तोपख़ाना उसी जगह छोड़ दे सिर्फ़ छ तोपों के साथ हिन्दुस्तान की राह ले बर्फ़ पांच इंच से ज़ियादा पड़ गया था सरकारी फ़ौज साढ़े चार हज़ार सवार सिपाही और बारह हज़ार बहीर लड़के लुगाइयों की गिनती नहीं छठी जनवरी को पहर दिन चढ़े वृहस्पत के दिन छावनी छोड़कर जलालाबाद रवाना हुई बीमारों को अकबरख़ां के सपुर्द किया सातवीं को काबुल से पांच कोस पर बुतख़ाक में डेरा पड़ा अफ़ग़ानों ने हर तरफ़ से हमला करना शुरू किया सरकारी फ़ौज को अपनी तोपें आपही कीलना पड़ीं अकबरख़ां साथ था बेईमान हिफ़ाज़त के लिये आया था जब उस से कहा कि यह क्या है जवाब दिया कि बेक़ाबू हूं यह लोग मेरा कहना नहीं मानते फ़ारसी में सरकारी आदमियों को सुनाकर उन्हें धमकाता था कि ख़बर्दार सरकारी फ़ौज को हर्गिज़ न छेड़ो पश्तों * में उन्हें शह देता था कि हां एक को भी इन में से जीता न छोड़ो मुआमला दीन का है आठवीं को ख़ुर्दकाबुल का घाटा पार होना था यह पांच मील लम्बा है दोनों तरफ़ अकसर पांच पांच सौ फ़ुट तक सीधे ऊंचे पहाड़ खड़े हैं तफ़ावत दोनों किनारों में ५० गज़ से अधिक नहीं है नदी जो उस में ज़ोर शोर से बहती है अट्ठाईस बार

* अफ़ग़ानों की ज़ुबान ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उतरनी पड़ती है ग़िलज़ई अफ़ग़ान उन पहाड़ों के ऊपर से गोलियों का मेह बरसाते थे सरकारी फ़ौज के हथियार निरे बेकाम थे ये ज़मीन पर और वे आस्मान पर कहते हैं कि उस रोज़ तीन हज़ार से ज़ियादा आदमी इस घाटे में मारे गये नवीं को नाहक़ खुर्दकाबुल में मुक़ाम रहा अकबरख़ां ने कहला भेजा कि मेम साहिब और बाबा लोगों की तकलीफ़ मैं नहीं देख सकता हूं अगर इनको मेरे हवाले कर दो मैं बहुत आराम और हिफ़ाज़त से पहुंचवा दूंगा फ़ौज के अफ़सर तो उसके बस में हो गये थे अपनी मेम और बच्चों को भी उसके हवाले कर दिया दसवीं को तंगतारीक घाटे में जो शायद दस फ़ुट भी चौड़ा नहीं है नामही उसका तंगतारीक है इतने आदमी मारे गये कि अब कुल दो सौ सत्तर सवार सिपाही और गोलंदाज़ और चार हज़ार बहीर के आदमी बाक़ी रह गये सो यह बारहवीं और तेरहवीं को जगदलक और गंदमक के घाटों में तमाम हुए क़िस्सा कोतह साढ़े सोलह हज़ार आदमियों में जो काबुल से चले थे सिर्फ़ एक डाकतर ब्रैडन साहिब जीते जागते जलालाबाद पहुंचे मानों इस तबाही की ख़बर पहुंचाने के लिये बच रहे जलालाबाद में और ही क़िस्म का अफ़सर था वह असली सिपाही सर राबर्टसेल बहादुर था रुपया रसद गोला बारूत सिपाह जो कुछ लड़ाई का समान है सब कम था मगर दिल का वह बहुत दिलेर था काबुलवाले अफ़सरों का हुक्म जो क़िला ख़ाली कर देने का पहुंचा था कुछ भी ख़याल में न लाया और अकबरख़ां से मुकाबला करने का मंसूबा ठाना भूचाल से क़िले की दीवार भी गिर गई तो उसने देखते ही देखते फिर बना ली रसद घट गई तो घोड़ों के गोश्त से लोगों की भूख बुझाई पर क़िला न छोड़ा अकबरख़ां ने छ हज़ार फ़ौज लेकर इस क़िले पर हल्ला किया पर सर राबर्टसेल बराबर उसका दांत खट्टा करता रहा उधर क़ंदहार को जेन-रल नाट दबाये रहा बहुतेरे बलवाई उसके गिर्द जमा हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह सब को फटकारता रहा ग़ज़नी में कर्नेल पामर था अगर वह शहर में किसी को रहने न देता कुछ न होता लेकिन वह शहरवालों पर रहम कर गया बर्फ़ के मैासिम में उन्हें बाहर निकालना इन्साफ़ न समझा और यही उसके हक़्क़ में ज़हर हुआ शहरवालों ने शहरपनाह तोड़कर बलवाइयों को भीतर घुसा लिया कर्नेल पामर क़िले में बन्द हुआ क़िले में रसद की तंगी थी ईंधन भी मौजूद न था बर्फ़ दो दो फ़ुट पड़ता था नाचार कर्नेल पामर वहां के तमाम सर्दारों से इस बात की क़सम लेकर कि जब तक बर्फ़ से राह बन्द है सरकारी सिपाह शहर में रहे और राह खुलने पर सर्दार लोग उसे हिफ़ाज़त से पिशावर तक पहुंचा दें क़िला ख़ाली कर दिया लेकिन जब बलवाई दूसरे ही दिन इन पर हमला करने लगे सिपाहियों ने घबराकर रात के वक़्त शहरपनाह में छेद किया और सब के सब बाहर निकल पड़े उन्हें यह ख़याल था कि पिशावर पच्चीस ही तीस कोस है धावा मारकर चले जायंगे लेकिन बर्फ़ में क़दम कब उठ सकता था सुबह होते ही सब के सब मारे और पकड़े गये अंगरेज़ों ने अपने तईं फिर नई क़स्में लेकर सर्दारों के हवाले कर दिया इस अर्से में लार्ड अकलैंड विलायत चला गया और लार्ड एलनबरा आख़िर फ़ेब्रुअरी में उसकी जगह गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर आया लार्ड अकलैंड ने जाने से पेश्तर जलालाबादवालों की कुमक के लिये पिशावर में फ़ौज जमा होने का हुक्म जारी कर दिया था लेकिन अब एक दफ़ा फिर काबुल तक जाना और अफ़ग़ानों को सरकारी फ़ौज का ज़ोर दिखला देना बहुत मुनासिब समझा गया यह फ़ौज अप्रेल में जेनरल पालक के साथ पिशावर से काबुल की तरफ़ रवाना हुई पालक साहिब घाटों में पहले ही से कुछ कम्पनियां पल्टनों की दुतरफ़ा पहाड़ों पर चढ़ा देते थे इस बाइस अफ़ग़ान ऊपर से गोलियां नहीं चला सकते थे अगर चलाने को जमा भी होते सरकारी सिपाही उनकी ख़ूब ख़बर लेते थे सोलहवीं अप्रेल को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जलालाबाद में दाख़िल हुए क़िलेवालों के मानों सूखे हुए खेत फिर लहलहाये अगस्त तक फ़ौज उसी जगह ठहरी रही अगस्त में फिर आगे बढ़ी रास्ते में अकबरख़ां ने सोलह हज़ार अफ़ग़ानों के साथ सरकारी फ़ौज का मुकाबला किया लेकिन कुछ पेश न गयी भागना पड़ा पंदरहवीं सिप्तम्बर को सरकारी फ़ौज काबुल में दाख़िल हुई और सोलहवीं को बालाहिसार पर सरकारी निशान चढ़ाया शाहशुजा को नव्वाब ज़मांख़ां के बड़े बेटे ने मार्च ही महीने में मार डाला था शुजा बालाहिसार से निकलकर उसके साथ अपने लश्कर की तरफ़ जाता था उसने रास्ते में उस पर दुनाली बंदूक़ चला दी पस अब सरकारी फ़ौज को सिर्फ़ अपने क़ैदियों की रिहाई बाक़ी रह गयी सिवाय इसके और कुछ भी अफ़ग़ानिस्तान में काम न था उधर सिंध से कुछ फ़ौज लेकर जेनरल इंगलैंड जेनरलनाट की कुमक को क़ंदहार पहुंच गया था लेकिन जेनरलनाट ने बहुत से आदमी जेनरलइंगलैंड के साथ सिंध को लौटा दिये सिर्फ़ थोड़े से चुने हुए सिपाही लेकर जेनरलपालक से शामिल होने को काबुल की तरफ़ कूच किया वह यही कहता था कि एक हज़ार सरकारी सिपाही पांच हज़ार अफ़ग़ानों के भगाने को बहुत काफ़ी हैं निदान जेनरलनाट भी लड़ता भिड़ता अफ़ग़ानों को हर तरफ़ मारता भगाता रास्ते में ग़ज़नी का क़िला तोड़ता फोड़ता महमूद ग़ज़नवी के मक़बरे से सोमनाथ के संदली किवाड़ लेता सतरहवीं सिप्तम्बर को काबुल में आ दाख़िल हुआ अकबरख़ां ने तमाम अंगरेज़ मेम और बाबा लोगों को जो उसके क़ाबू में थे एक अफ़ग़ान सालिहमुहम्मदख़ां के साथ बामियां की तरफ़ भेज दिया था उसका इरादा था कि इन्हें तुहफ़ा के तौर पर गुलामी के लिये तूरानी सर्दारों को बांट दे लेकिन सालिहमुहम्मद इन से मिल गया बीस हज़ार नक़द और हज़ार रुपये माहवारी पिंशन के वादे पर सही सालिम सरकारी फ़ौज में पहुंचा दिया जेनरल एलफ़िंस्टन मर गया था तो भी सिवाय साहिब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगों के लेडी मेकनाटन और लेडी सेल समेत तेरह मेम और उन्नीस लड़के इन क़ैदियों में थे निदान इन क़ैदियों को लेकर सरकारी फ़ौज फ़तह फ़ीरोज़ी के निशान उड़ाती फ़ीरोज़पुर चली आयी गवर्नर जेनरल ने दोस्त मुहम्मद को भी छोड़ दिया सरकार का इस लड़ाई में कम से कम सत्तरह करोड़ रुपया ख़र्च पड़ा॥

सिन्ध के अमीरों से सन् १८३२ में सरकार का यह अहद पैमान होगया था कि सिन्धु नदी की राह वेशक सरकारी आदमी आवें जावें लेकिन न कोई जंगी जहाज उस में लावें और न लड़ाई का सामान उधर से कहीं को ले जावें सन् १८३८ में यह भी ठहर गया कि एक सरकारी रज़ीडंट वहां रहा करे लेकिन जब सरकार को मालूम हुआ कि ये अमीर ईरान के बादशाह से ख़त किताबत करते हैं लार्ड अकलैंड ने सरकारी फ़ौज काबुल जाने के वक़्त उन से एक अहदनामा इस मज़मून का लिखवा लिया कि कुछ किसी क़दर सरकारी फ़ौज उनके इलाक़े में रहा करे और उसका ख़र्च उन्हीं के ज़िम्मे रहे अमीर इस पर भी अपनी हर्कत से बाज़ न आये काबुल की लड़ाइयों में सरकार के दुश्मनों से साज़िश करने लगे और सरकार को यह भी ख़बर पहुंची कि सिन्धु नदी पर अहदनामे के ख़िलाफ़ महसूल लगाते हैं निदान सन् १८४२ में लार्ड एलनबरा ने उन १८४२ ई० से इस मज़मून का अहदनामा तलब किया कि फ़ौज ख़र्च के बदल वह कुछ मुल्क सरकार की नज़र करें सिक्का सरकार का जारी करें और जो धूएं की नाव सिन्धु नदी में चलें उनके लिये जलाने की लकड़ी दें न दें तो नाववाले जहां जो पेड़ पावें काट लें अमीरों ने इस अहदनामे पर भी मुहर कर दी लेकिन उनके बलूची सर्दार इस बात से बहुत नाख़ुश हुए मेजर ऊटरम वहां रज़ीडंट था और सर चार्लस नेपिअर वहां के इन्तिज़ाम के लिये कुछ फ़ौज लेकर सिन्ध की राजधानी हैदराबाद के पास पहुंच चुका था अमीरों ने मेजर ऊटरम से साफ़ कह दिया कि सर चार्लस नेपिअर अगर हैदराबाद की तरफ़ बढ़ेगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बलूची बलवा करेंगे सर चार्लस नेपिअर कब रुकनेवाला था
१८४३ ई० पन्दरहवीं फ़ेब्रुअरी को बलूचियों ने बलवा किया और रज़ीडंटी को जा घेरा रज़ीडंट तो अपने आदमियों समेत नदी में धूएं की नाव पर चला गया लेकिन असबाब का बहुत नुक़सान हुआ जब सरचार्लस नेपिअर हैदराबाद से तीन कोस पर मियानी में पहुंचा देखा कि अमीरों की फ़ौज बीस हज़ार से ज़ियादा बहुत मज़बूती के साथ पड़ी है इसकी सिपाह तीन हज़ार से भी कम थी लेकिन शेर क्या गीदड़ों की गिनती से हिचकता है फ़ौरन हमला कर दिया सख़्त लड़ाई हुई अमीरों की फ़ौज ने शिकस्त खाई पांच हज़ार खेत रहे बाक़ी भाग गये सरकारी कुल बासठ आदमी काम आये लड़ाई के बाद छ अमीरों ने अपने तईं सर चार्लस नेपिअर के हवाले कर दिया और वह फ़तह फ़ीरोज़ी के साथ हैदराबाद में दाख़िल हुआ दूसरे महीने में सर चार्लस नेपिअर ने इसी तरह डब्बा की लड़ाई में मीरपुर के अमीर को शिकस्त देकर मीरपुर में दख़ल किया और कुछ सवार सिपाही भेजकर अमरकोट का मज़बूत क़िला ले लिया जो कोई अमीरों में से इधर उधर बच रहा था धीरे धीरे हर एक सरकार की क़ैद में चला आया और सिन्ध बिलकुल सरकारी अमल्दारी में शामिल हो गया ॥

इसी साल के अन्दर ग्वालियर में दौलतराव सेंधिया का जानशीन झुनकूजीराव सेंधिया बे औलाद मर गया उसकी रानी ताराबाई ने जो खुद तेरह बरस की थी एक अपना रिश्तदार लड़का आठ बरस का जयाजीराव गोद लेकर उसे गद्दी पर बिठा दिया साहिब रज़ीडंट की सलाह से महाराज का मामू अर्थात् मामा साहिब राज का काम अंजाम देने लगा लेकिन दादा ख़ासगीवाले ने रानी से मिलकर मामा साहिब को निकलवा दिया और काम सब अपने हाथ में लिया साहिब रज़ीडंट ने यह हाल देखकर धौलपुर की अमल्दारी में डेरा जा किया सेंधिया की फ़ौज में फूट पड़ी कुछ लोग तो दादा ख़ासगीवाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की तरफ़ थे और कुछ बापू सीतोलिया की तरफ़ दो दिन तक आपस में गोले चलते रहे आख़िर रानी ने फ़ौज को आपस की लड़ाई से रोका दादा खासगीवाला क़ैद करके आगरे भेजा गया और बापू सीतोलिया दीवान हुआ इस अर्से में गवर्नर जेनरल का लश्कर ग्वालियर की सर्हद पर पहुंच गया था लार्ड एलनबरा ने ऐसा अच्छा मौक़ा इस ग्वालियर की तरफ़ का खटका मिटाने का हाथ से जाने देना मुनासिब न समझा क्योंकि उधर पंजाब में भी फ़साद उठनेवाला मालूम होता था ग्वालियरवालों से साफ़ कहला भेजा कि अगर सुलह रखनी मंज़ूर है तो ग्वालियर में सरकारी कांटिंजेंट की फ़ौज बढ़ा दो और उसके ख़र्च के लिये कुछ इलाक़े सरकार के हवाले करो और फिर साथ ही इस मज़मून का इश्तिहार देकर कि सरकारी फ़ौज महाराज की हिफ़ाज़त के लिये आयी है ग्वालियर की तरफ़ कूच किया उन्तीसवीं दिसम्बर को महाराजपुर और पनिआर में संधिया की फ़ौज से मुक़ाबला हुआ खूब सख़्त लड़ाई हुई संधिया की फ़ौज ने हर तरफ़ से शिकस्त खायी पाचवीं जनवरी को गवर्नर १८४४ ई० जेनरल ग्वालियर में दाख़िल हुए संधिया ने नया अहदनामा लिख दिया कि जब तक वह अठारह बरस का न हो काम राज का रज़ीडंट की सलाह बमूजिब अहलकार अंजाम दें कांटिंजेंट की फ़ौज बढ़ा दी जाय उसके ख़र्च के लिये कुछ इलाक़े सरकार जुदा कर ले महाराज की सिपाह नौ हज़ार से कभी ज़ियादा न होने पावे और तोप बारह जंगी और कुल बीस ऐसी वैसी रहें लार्ड एलनबरा ग्वालियर की मुहिम्म तै करके कलकत्ते मुड़ गया लेकिन वहां विलायत से उसकी बदली का हुक्म आया उसकी जगह पर सर हेनरी हार्डिंग गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ ॥

रंजीतसिंह लार्ड अकलैंड की मुलाक़ात के बाद ही बीमार पड़ा और सत्ताईसवीं जून को (सन् १८३९) शाम के वक़्त होश हवास के साथ ५८ बरस की उमर में परलोक को सिधारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हक़ीक़त में इस आख़िरी ज़माने के दर्मियान इस मुल्क में यह बहुत बड़ा और नामी आदमी हो गुज़रा इसका दादा चतरसिंह सूकरचक नाम गांव के रहनेवाले नौधसिंह सांसी जाट का बेटा गूजरांवाले में एक कच्ची गढ़ीसी बनाकर रहा करता था और काम पड़ने से पच्चीस सौ सवार जमा कर सकता था रंजीतसिंह ने अपना मुल्क सिंध की सर्हद से चीन की अमल्दारी तक पहुंचा दिया और ख़ैबर के घाटे से सतलज तक बिल्कुल अपने क़ब्ज़े में कर लिया इस में से कुछ ऊपर करोड़ रुपये का लोगों को जागीर और मुआफ़ी में दे रक्खा था और बाक़ी की आमदनी का प्राय डेढ़ करोड़ रुपया उसके ख़ज़ाने में आता था मरते समय उसने दान पुण्य भी खूब किया करोड़ रुपये से अधिक तो जिस रोज वह मरने को था उसी रोज़ ख़ैरात हुआ और तमाशा यह कि लिखना पढ़ना वह कुछ नहीं जानता था केवल नाम भर लिख सकता था और आंख भी एक ही रखता था एक सीतला में जाती रही लेकिन आदमी की पहचान भगवान ने इसे ऐसी दी थी कि विक्रम भोज और अक्बर के बाद शायद इसी के दर्बार में नवरत्न गिने जा सकते थे जब उसकी लाश को गंगाजल से नहला कर चंदन के बिमान पर जो सोने के फूलों से सजा हुआ था जलाने को ले चले चार रानियां अच्छी से अच्छी पोशाकें और ज़ेवर पहने हुए उसके साथ गयीं रानी कुंदन रजपूत राजा संसारचन्द कांगड़ेवाले की बेटी महाराज का सिर गोद में लेकर चिता पर बैठ गयी बाक़ी तीनों जिन में दो सोलह सोलह बरस की निहायत ख़ूबसूरत थीं पांच सात लौंडियों के साथ उसके चौगिर्द जा बैठीं इन सब के चिहरों पर रंज का निशान कुछ भी न था बरन ख़ुशी का असर मालूम होता था अजब एक समां देखनेवालों के दिल को कलक़ दिलाने का था निदान चिता में आग लगायी गयी और देखते ही देखते वह राख की ढेरी हो गयी कहते हैं कि जब चिता जलती थी एक टुकड़ा बादल का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नमूदार हुआ और कुछ बूंदें पानी की बरस गया मानो खुद आसमान महाराज के मरने से रोया रंजीतसिंह के बाद उसका बेटा खड़गसिंह उसकी गद्दी पर बैठा खड़गसिंह अपने बाप के पुराने वज़ीर राजा ध्यानसिंह से किसी कारन नाराज़ हो गया ध्यानसिंह ने उसके बेटे नौनिहालसिंह को ऐसा उभारा कि उसने खड़गसिंह को नज़रबंद कर लिया और राज काज सब आप करने लगा खड़गसिंह थोड़े ही दिनों में बीमार होकर मर गया कौन जाने ज़हर दिया अथवा इलाजही बुरा किया जो हो जब उसे जलाकर नौनिहालसिंह घर की तरफ़ फिरा रास्ते में एक दर्वाज़ा टूटकर ऐसा उस पर गिरा कि वह भी अपने बाप के पास सिधारा उसके साथ राजा ध्यानसिंह का भतीजा मीयां उत्तम-सिंह भी वहां काम आया लोग कहते हैं कि यह सारा करतूत ध्यानसिंह और उसके भाई गुलाबसिंह का था लेकिन दर्वाज़ा गिरने का असली कारन आज तक किसी को नहीं मालूम हुआ सिक्खों ने अपने दस्तूर बमूजिब खड़गसिंह की रानी चन्द-कुंवर को मुल्क का मालिक बनाया और गुलाबसिंह भी उसी की जानिब रहा लेकिन ध्यानसिंह ने फ़ौज को खड़गसिंह के भाई शेरसिंह से मिला दिया चन्दकुंवर क़िले में बन्द हुई फ़ौज ने चारों तरफ़ से घेर लिया पांच दिन तक दोनों तरफ़ से ख़ब गोला चला गुलाबसिंह भीतर ध्यानसिंह बाहर था जी में दोनों एक लोगों के दिखलाने को यह सवांग रचा था आख़िर इस बात पर सुलह ठहरी कि शेरसिंह गद्दी पर बैठे चन्दकुंवर को नौ लाख की जागीर दे उसे कभी अपनी रानी बनाने का इरादा न करे और गुलाबसिंह अपनी फ़ौज समेत निशान उड़ाता क़िले से बाहर चला जावे कोई कुछ रोक टोक न करे निदान गुलाबसिंह ने अपनी सोलह तोपों की सोलह पेटियां एक एक तोप के लिये तीस तीस कारतूस रख कर बाक़ी बिल्‌कुल रुपयों से भरीं और पांच सौ तोड़े अशरफ़ियों के अपने पांच सौ जवानों के हाथ में थमा दिये जवाहिर जिस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क़दर हाथ लगा अपनी अर्दली के घुड़चढ़ों को सपुर्द किया और भी बहुत सा क़ीमती असबाब लिया क़िले से निकल कर शाहदरे के नज़दीक डेरा किया फिर कुछ दिनों बाद शेरसिंह से रुख़सत लेकर अपनी जागीर जम्बू की तरफ़ चला गया ध्यानसिंह ने यह समझा कि शेरसिंह को मैं ने ही गद्दी पर बिठाया और शेरसिंह ने निश्चय जाना कि जब तक ध्यानसिंह रहेगा मैं नाम ही का महाराज हूं यह बिल्कुल इख़्तियार अपने हाथ में रक्खेगा मुझे हर तरह से धमकावे और दबावेगा दिलों में फ़र्क़ आया एक को दूसरे की तरफ़ से खटका पैदा हुआ सिंधांवालों ने इस क़ाबू को अपना दिली मतलब पूरा करने के लिये बहुत ग़नीमत पाया रंजीतसिंह की औलाद के बाद गद्दी का हक़्क़ ये अपना समझते थे और शेरसिंह से नाराज़ भी हो रहे थे एक रोज़ लहनासिंह और अजीतसिंह दोनों सिंधांवाले भाइयों ने अकेले में महाराज के पास जाकर यह गुल कतरा कि पृथिवीनाथ हम को ध्यानसिंह ने आप की जान लेने के लिये भेजा है और इस ख़िदमत की एवज़ साठ लाख रुपये की जागीर देने का वादा किया है उसका इरादा है कि आप को मारकर दलीपसिंह * को गद्दी पर बिठावे और जब तक वह बड़ा न हो रियासत का काम निष्कंटक आप किया करे लेकिन हम ने अपने नमक की शर्त से अदा होने के लिये आप को इस बेवफ़ा वज़ीर के बद इरादों से अच्छी तरह चिता दिया आगे आप मालिक हैं शेरसिंह इस बात के सुनने से ज़रा भी न घबराया और अपनी तलवार दोनों सिंधांवाले सर्दारों के सामने रख कर बोला कि अगर तुम मेरे मारने के वास्ते आये हो तो लो मैं अपनी तलवार देता हूं तुम बेशक मुझ को मार डालो मगर याद रक्खो कि जिस तरह

* रानी चन्दा से रंजीतसिंह का बेटा उस समय निरा बालक था ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब वह तुम से मुझे क़तल करवाता है बहुत रोज़ न गुज़रेंगे कि तुम्हें भी क़तल करवा डालेगा सिंधांवालों ने अर्ज़ किया महाराज हम तो आप को मारने को नहीं बल्कि बचाने को आये हैं लेकिन ऐसे नमकहराम वज़ीर को तो अब छोड़ना मुनासिब नहीं ग़रज़ सिंधांवालों ने शेरसिंह से ध्यानसिंह के मारने की इजाज़त लिखवा ली और वहां से यह कह कर रुख़सत हुए कि अब हम अपनी जागीर पर जाते हैं वहां से अपने सिपाहियों को लेकर हाज़िरी देने के बहाने आप के पास आवेंगे आप उस वक़्त ध्यानसिंह को हमारे सिपाहियों की मौजूदात लेने के लिये हुक्म दीजियेगा हमारे सिपाही उसको और उसके बेटे हीरासिंह दोनों को गोली से मार देंगे फिर ये लोग ध्यानसिंह के पास गये और उसको वह काग़ज़ दिखलाया जो शेरसिंह ने उसके मारने के वास्ते लिख दिया था ध्यानसिंह बहुत घबराया लेकिन जब सिंधांवालों ने इक़रार किया कि तेरे लिये हम महाराज ही को मार डालेंगे तब तो उसने इनके साथ बहुत से वादे किये इन्हों ने यहां महाराज के मारने की भी वही जुगत ठहरायी कि जो महाराज के सामने ध्यानसिंह को क़तल करने के लिये ठहरायी थी निदान दूसरे रोज़ सिंधांवाले अपना जागीर को गये और थोड़े ही दिनों में वहां से पांच छ सौ सवार अच्छे मुस्तइद हथियारों में डूबे हुए मरने मारनेवाले ले आये ध्यानसिंह तो उन दिनों में बीमारी का बहाना करके अपने घर बैठ रहा था और महाराज बागों की सैर में मशग़ूल थे वह तारीख़ महीने की पहली थी इसलिये दर्बार न था महाराज कुश्ती देखकर पहलवालों को इनआम और रुख़सत दे रहे थे कि यकबारगी सिंधांवालों ने आकर वाह गुरूजी की फ़तह सुनायी महाराज बहुत मिहर्बानी से उनकी तरफ़ मुतवज्जिह हुए अजीतसिंह ने एक दुनाली बंदूक जिस की हर एक नली में दो दो गोलियां भरी थीं पेश करके हंसते हुए यह बात कही कि महाराज देखो चौदह सौ रुपये में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैसी सस्ती एक उमदा बंदूक मैं ने ली है अब अगर कोई तीन हज़ार भी देवे तो मैं उसको नहीं देने का और जब महाराज ने बंदूक लेने के लिये हाथ बढ़ाया अजीतसिंह ने उसकी छाती पर ले जाकर उसे झोंक दिया शेरसिंह गोलियों के लगते ही बेदम होकर गिर पड़ा सिर्फ़ इतना ही ज़ुबान से निकलने पाया " ए की दग़ा " * क़ातिल महाराज का सिर काटकर उस जगह पहुंचे जहां महाराज का बड़ा बेटा तेरह चौदह बरस का कुंवर प्रतापसिंह था लहनासिंह सिंधांवाले ने तलवार उठाई कुंवर उसके पैरों पर गिर पड़ा इस संगदिल ने एक ही झटके में उसका काम तमाम किया अजीतसिंह तो उसी दम ३०० सवार और २५० पैदल लेकर लाहौर की तरफ़ दौड़ा और लहनासिंह बाक़ी दो सौ सवारों के साथ धीरे धीरे उसके पीछे रवाना हुआ आधे रास्ते पर ध्यानसिंह भी जो शेरसिंह के पास जाता था अजीतसिंह को मिलगया अजीतसिंह ने उसे रोका और कहा कि काम बिल्कुल ख़ातिर ख़ाह अंजाम हुआ अब आप क़िले में चलकर बंदोबस्त फ़र्माइये और अपने वादों को पूरा कीजिये जब ये लोग क़िले के अंदर पहुचे अजीतसिंह का इशारा पाकर एक सिपाही ने राजा ध्यानसिंह को गोली मार दी अजीतसिंह ने शहर में मुनादी करायी कि दलीपसिंह महाराज है और लहनासिंह सिंधांवाला उसका वज़ीर हुआ ध्यानसिंह का बेटा राजा हीरासिंह सिंधावालों के क़ाबू में न आया फ़ौज को अपनी तरफ़ कर लिया सो ज़बर तोपें लेकर क़िला जा घेरा तमाम रात तोपें चलती रहीं सूरज निकलते ही हीरासिंह ने क़सम खायी कि जब तक मैं अपने बाप के मारनेवालों को मरा हुआ नहीं देखूंगा खाना पीना हराम है रानी भी ध्यानसिंह की लौंडियों समेत सती होने के लिये इस अर्से में चिता पर चढ़ने को तयार थी हीरासिंह ने सिपाहियों से पुकार कर कहा कि रानी तब सती

* अर्थात् यह कैसी दग़ाबाज़ी है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होवेगी जब उसके पति के मारनेवालों का सिर काटकर उसके पैरों में रक्खा जावेगा फ़ौज इस बात को सुनते ही जोश में आयी दीवार टूट गयी थी क़िले पर हल्ला कर दिया और बात की बात में अन्दर जा दाख़िल हुए अजीतसिंह का सिर काटकर ध्यानसिंह की रानी के पैरों में रक्खा वह उसे देखकर निहायत खुश हुई और फिर ध्यानसिंह की कलग़ी हीरासिंह की पगड़ी में लगा कर आप तेरह औरतों समेत सती हो गयी लहनासिंह सिंधांवाला मारा गया फ़ौज लैन को चली गयी दलीपसिंह महाराज और हीरासिंह वज़ीर के नाम से डौंडी फिरी थोड़े ही दिनों के बाद राजा हीरासिंह और उसके मोतमद पंडित जल्ला की बाज़ी बातें ऐसी ज़ाहिरी होने लगीं कि फ़ौज का दिल उन से हट गया हीरासिंह ने विजारत छोड़कर जम्बू की तरफ़ भाग जाने का इरादा किया और फ़ौज की क़वाइद देखने के बहाने से शहर के बाहर निकला मगर शाहदरे से पांच सौ क़दम भी आगे न बढ़ा होगा कि सिक्ख सवारों ने पहुंचकर घेर लियां और यह कहा कि तू पंडित जल्ला को हमारे हवाले करदे लेकिन पंडित ने अपनी जान बचाने के लिये आगे ही बढ़ने का इशारा किया और सिक्खों का कहना कुछ भी न सुनने दिया जब दस बारह कोस निकल गये और दिन क़रीब दो पहर के आया क़िस्मत का मारा पंडित जल्ला घोड़े से गिर पड़ा सिक्खों ने उसी दम उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला हीरासिंह प्यास की शिद्दत से पानी पीने के लिये एक गांव में उतरा सिक्खों ने गांव में आग लगा दी और हीरासिंह को उसी जगह क़तल किया हीरासिंह का सिर लाहौरी दर्वाज़े पर लटकाया गया और पंडित जल्ला का सिर तमाम शहर में फिराने के बाद कुत्तों को खिलाया गया निदान हीरासिंह के मारे जाने पर दलीपसिंह का मामू जवाहिरसिंह वज़ीर हुआ लेकिन इसी अर्से में कुंवर पिशौरासिंह ने बिगड़कर अटक का क़िला जा दबाया जवाहिरसिंह के आदमियों ने पहले तो दम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिलासा देकर उसे क़िले से बाहर निकाला और फिर रात के वक़्त मारकर अटक के दर्या में डुबो दिया कुंवर पिशौरासिंह महाराज रंजीतसिंह के लड़कों में से था बहादुरी के बाइस फ़ौज का प्यारा था इसके मारे जाने की ख़बर ज़ाहिर होते ही तमाम सिपाह के दिल में गुस्से की आग भड़क उठी

१८४५ ई० इक्कीसवीं सितम्बर सन् १८४५ को सारा लश्कर दिल्ली दर्वाज़े के नज़दीक आ पड़ा निदान जब जवाहिरसिंह ने देखा कि जान नहीं बचती महाराज दलीपसिंह को गोद में लेकर हाथी पर सवार हुआ और अपनी बहन अर्थात् दलीपसिंह की मा रानी चंदा को भी जुदा हाथी पर सवार कराकर अपने साथ लिया लेकिन जब सवारी फ़ौज के मुक़ाबिल पहुंची सिपाहियों ने उसके हाथी को रोका और फ़ीलबान को धमका कर ज़बरदस्ती बैठवा दिया महाराज को उसकी गोद से छीन लिया और उसका काम गोली और संगीनों से उसी जगह तमाम किया इस वज़ीर के मरने पर पंजाब के दर्मियान पूरी बदअमली फैल गयी और फिर वहां कोई और वज़ीर मुक़र्रर न हुआ रानी चंदा का सलाहकार राजा लालसिंह रहा बिलकुल काम काज उसी के कहने बमूजिब होने लगा पर इख़्तियार सब बात में फ़ौज का था और फ़ौज को इस क़दर सामान लड़ाई का मौजूद होते हुए बे शग़ल ख़ाली बैठे रहना पसंद न था बैठे बिठाये जैसे किसी का सिर खुजलाता है ख़ाहमख़ाह सरकार अंगरेज़ बहादुर से लड़ना विचारा बहुत लोग यह भी कहते हैं कि मंसूबा इस लड़ाई का रानी और सर्दारों ने उठाया था और फ़ाइदा उस में यह सोचा था कि इस तरह तो फ़ौज लाहौर में कभी चुपचाप नहीं बैठी रहेगी जैसे इतने राजा और सर्दारों को मार डाला अब जो बाक़ी रह गये हैं उनके ख़ून से दिल बहलावेगी इस से बिहतर यही है कि ये लोग अंगरेज़ों से लड़ें अगर सिक्खों की फ़तह हुई तो बेशक यह कलकत्ते तक अंगरेज़ों का पीछा करते हुए चले जावेंगे जल्द लाहौर को न फिरेंगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और जो इनकी शिकस्त हुई और अंगरेज़ों के हाथ से मारे गये तो साहिबान आलीशान किसी की जान के ख़ाहां नहीं सब के पिंशन मुक़र्रर हो जावेंगे ग्वालियर की नज़ार बहुत दिल पिज़ीर थी बचे हुओं ने अपनी जान का बचाव इसी में देखा कि फ़ौज लाहौर से निकल जावे और अंगरेज़ों से लड़ पड़े निदान फ़ौज को अंगरेज़ों पर चढ़ाव करने का हुक्म जारी हो गया लार्ड हार्डिंग इस भरोसे पर कि दोनों सरकार के दर्मियान सुलह और दोस्ती का अहदनामा बर्क़रार और क़ाइम था बिल्कुल ग़ाफ़िल रहा यहां तक कि राजा लालसिंह ने अपने बाईस हज़ार घुड़[illegible] चालीस तोपों के साथ तेईसवीं नवम्बर को लाहौर से कू[illegible]र्दार तेजसिंह भी सोलहवीं दिसम्बर को फ़ौज [illegible] उस से आ शामिल हुआ जब कि गवर्नर जेनरल [illegible] कि सिक्खों की फ़ौज फ़ीरोज़पुर के सामने आन पड़ी तो इधर [illegible] दौड़ादौड़ पल्टन और रिसालों का कूच होना शुरू हुआ और कन्हा की सरा * के डेरों से गवर्नर जेनरल ने लड़ाई का इश्तिहार जारी कर दिया सिक्खों की फ़ौज जो इस पार उतरी थी अस्सी हज़ार से कम न थी तेजसिंह और लालसिंह दोनों ने चाहा कि फ़ीरोज़पुर पर हमला करें लेकिन फ़ौज ने क़बूल न किया उनके दिल में यह बात समा रही थी कि फ़ीरोज़पुर के क़िले में अंगरेज़ों ने सुरंगें खोद कर बारूत बिछा रक्खी है जिस वक़्त सिक्ख लोग हमला करेंगे बारूत में आग लगा देवेंगे ग़रज़ कई रोज़ तक सिक्खों की फ़ौज इसी तरह चुपचाप फ़ीरोज़पुर के सामने डेरा डाले पड़ी रही पर जब सुना कि अंगरेज़ी फ़ौज का उनकी तरफ़ कूच हुआ तो वे भी वहां से अम्बाले की तरफ़ रवाना हुए अठारहवीं दिसम्बर को तीसरे पहर जब कि राजा लालसिंह बारह हज़ार सवार और चालीस तोपों के साथ बढ़कर मुदकी से दो कोस के फ़ासिले पर आन

* अम्बाले के पास है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहुंचा अंगरेज़ी फ़ौज बड़ा लंबा कूच तै करके मुदकी में पहुंची थी अभी डेरे भी खड़े नहीं हुए थे सिपाही लोग हाथ मुंह धोने और रोटी पकाने की फिकर में थे गवर्नर जेनरल और कमांडरइन्चीफ़ दोनों यह ख़बर सुनते ही अपने अपने घोड़ों पर हो गये और लश्कर में बिगुल लड़ाई का बजवा दिया निदान जिस समय अंगरेज़ी फ़ौज झपट कर सिक्खों से मुक़ाबिल हुई गर्द उड़ने के कारन अपना और बिगाना कोई भी नहीं सूझता था सिक्ख लोग जो पहिले ही से झाड़ियों की ओट में छुप रहे थे फ़ुर्सत के साथ अंगरेज़ी सवारों को अपनी बंदूक़ का निशाना बनाते थे जेनरल सेल [illegible]ादवाले और और कई बड़े अंगरेज़ इस लड़ाई [illegible] के मुक़ाबि[illegible] आख़िर अंगरेज़ों के सामने सिक्ख लो[illegible] रोका और फैलते थे गीदियों की तरह शेर के [illegible]वा दिया महार लगे और खेत साहिबान आली-शानके हा[illegible] रहा इक्कीसवीं दिसम्बर को अंगरेज़ी फ़ौज ने सिक्खों के मोरचों पर जो उन्हों ने फेरू * के पास जमाये थे हमला कर दिया उस रोज़ रात को भी लड़ाई होती रही और मेजर ब्राडफुट अम्बाले का अजंट उसी लड़ाई में काम आया लेकिन सवेरा होने के पहले ही दुश्मनों से वहां एक भी बाक़ी न रहा बहुत से तो उसी जगह अंगरेज़ी सिपाहियों के हाथ से कट मरकर मिट्टी में मिले और जो बाक़ी रहे सब के सब सतलज की तरफ़ चले सुबरांव के पास हरी के पत्तन पर पहुंचकर डेरा डंडा तो अपना सतलज के दाहने कनारे रक्खा और आप लड़ने के लिये सतलज के बायें कनारे रहे सतलज में नावों का पुल बना लिया था सरकारी फ़ौज भी उसी जगह उनके मुक़ाबिल जा पड़ी और महीने भर से ऊपर दोनों फ़ौजें इसी तरह बे लड़ाई पड़ी रहीं अंगरेज़ी लोग तो अपने बड़े गढ़तोड़ तोपख़ाने जिसे अंगरेज़ी में सीजट्रेन् कहते हैं पहुंचने

* इस गांव का असली नाम फ़ीरोज़शहर बतलाते हैं और इसी को अंगरेज़ फ़ीरोज़शाह कहते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के इन्तज़ार में थे और सिक्ख लोग इस भरोसे पर थे कि अब ये दबकर सुलह कर लेंगे इसी अर्से में जेनरल सर हारीस्मिथ ने लुधियाने के नज़दीक अर्लीवान में सर्दार रंजोरसिंह को जिसने वहां कुछ सिक्ख जमा किये थे शिकस्त दी और राजा गुलाबसिंह तीन हज़ार आदमियों के साथ जम्बू से ... में दाख़िल हो गया निदान दसवीं फ़ेब्रुअरी सन्१८४६ १८४६ ई० ...के सरकारी फ़ौज ने सिक्खों पर जो अपने मोरचों ...ड़े हुए थे हमला किया और थोड़ी ही ...उनका पैर मैदान से उखाड़ दिया ...उनके हजम से पुल भी टूट गया आधे ... में डूबकर मरे ग़रज़ यह लड़ाई ... के हारने से सिक्खों की स्वाधीन सल्तनत ... मिहनत से बनायी थी हमेश के लिये ग़ारत हो ... ...ज उसी रोज़ दूसरे घाट पुल बांधकर सतलज पार उतरी और फिर कोई ग़नीम सामने न रहने से बाफ़रागत मंज़िल ब मंज़िल लाहौर की तरफ़ कूच करने लगी कसूर के डेरों में राजा गुलाबसिंह गवर्नर जेनरल की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और फिर लुलियानी के डेरों में महाराज दलीपसिंह को भी ले आया बीसवीं फ़ेब्रुअरी को सरकारी फ़ौज़ के साथ गवर्नर जेनरल लाहौर में दाख़िल हुए और नवीं मार्च को आम दर्बार में महाराज ने अपने सब सर्दारों समेत आकर नये अहदनामे पर मुहर दस्त-ख़त किये इस अहदनामे की रू से लाहौर के बिल्कुल इलाक़े जो सतलज इस पार थे जलंधर दुआबे समेत सरकार की अम-ल्दारी में आगये व्यासा सरहद्द ठहरी पचास लाख रुपया लड़ाई के ख़र्च की बाबत महाराज ने नक़द अदा किया और एक करोड़ के एवज़ में जम्बू और कश्मीर दे दिया कि वह

* यह ग्रंथकर्त्ता उस समय सिक्खों के मोरचों में था सरकार का भेजा हुआ गया था ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

सरकार ने फिर रुपया लेकर महाराजगी के ख़िताब के साथ गुलाबसिंह को इनायत फ़र्माया जो बात रानी चंदा और उसके यार लालसिंह ने गुलाबसिंह को ख़राब करने की सोची थी उसी से गुलाबसिंह की सारी बात बन गयी क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की! जिस क़दर तोपें लड़ाई में गयी थीं बिल्कुल सरकार के हवाले कर दी गयीं निदान गु[illegible] जेनरल ने महाराज और रानी साहिब के कहने [illegible] कोई भी थोड़ी सी फ़ौज लाहौर में रहने दी [illegible]स झाड़ियों की ओट छावनियों को रवाना हुई महाराज[illegible]ज़ी सवारों को अपनी बंदूक़ में अपना क़ब्ज़ा करने के लिये [illegible] सेल ज़ुआर [illegible]ादवाले और और के सूबेदार शेख़इमाम[illegible] लड़ाई [illegible]ौज के मुक़ाबि[illegible] [illegible]निकाल दिया और कश्मीर के [illegible] लेना का रोका और [illegible] [illegible]हौर के अजंट हेनरी ला[illegible] के [illegible]वा दिया महा[illegible]ड़ी सी अंगरेज़ी फ़ौज लेकर गुलाब[illegible] [illegible]हा इ[illegible]दलाने के लिये पारपंचाल के घाटे के पास जा पहुंच[illegible]मुद्दीन उनके साथ लाहौर चला आया और कश्मीर में बख़ूबी गुलाबसिंह का क़ब्ज़ा और दख़ल हो गया इमामुद्दीन ने गुलाबसिंह को कश्मीर न देने का सबब यह बयान किया कि राजा लालसिंह वज़ीर ने कश्मीर छोड़ने के लिये मना लिख भेजा था बरन लालसिंह का मुहरी ख़त भी इस मज़मून का पेश कर दिया लालसिंह इस क़ुसूर में विज़ारत से मौक़ूफ़ होकर नज़रबंद रहने के लिये आगरे भेजा गया और कारबार रियासत का सर्दार तेज़सिंह सर्दार शेरसिंह सर्दार शमशेरसिंह सर्दार निधानसिंह सर्दार अतर-सिंह सर्दार रंजोरसिंह दीवान दीनानाथ और ख़लीफ़ा नूरुद्दीन के सपुर्द हुआ इस अर्से में मीयाद सरकारी फ़ौज की लाहौर में रहने की पूरी हो गयी थी और नज़दीक था कि लाहौर छोड़कर सतलज इस पार चली आवे लेकिन सर्दारों ने यह बात न होने दी और फ़ौज रहने के लिये सरकार से बहुत मिन्नत की तब नाचार सरकार ने उनकी अर्ज़ क़बूलकरके यह

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तजवीज़ ठहरायी कि जब तक दलीपसिंह १६ बरस का न हो जितनी फ़ौज सरकार मुल्क की हिफ़ाज़त के लिये काफ़ी समझे लाहौर में रक्खे और ख़र्च उसका बाईस लाख रुपया साल लाहौर के ख़ज़ाने से मिला करे और बंदोबस्त और मुल्क का इन्तिज़ाम बमूजिब सलाह और हुक्म साहिब अजंट बहादुर के लाहौर रहे और रानी चंदा के गुज़ारे को डेढ़ लाख रुपया साल को नूर के त... जावे रानी चंदा इख़्तियार घट जाने के बाइस के अंदर * ग़ाफ़िल ...ह के फ़साद उठाने लगी और दलीपसिंह देर की सख़्त लड़ाई में ...लाने लगी यहां तक कि जिस रोज़ ऐसी घबराहट बढ़े और भागे कि ख़िताब देना ठहराया गया था दलीपसिंह ने पंच किया और सतलज ... कि हम इसको राजगी का तिलक न ...ड़ा ...वहां से चलकर ...डाइ ने देखा कि रानी लाहौर में रहकर महाराज ... को ख़बर पहुंची ने इस ... और मुल्क में फ़ुतूर डालेगी साहिब अजंट की सला... गया सर... जेनरल का हुक्म हासिल करके उसे शेख़ूपुरे में जो ... १६ कोस के फ़ासिले पर है नज़रबंद कर दिया सन् १८४७ के आख़िर में १८४७ ई०
दीवान मूलराज मुल्तान के नाज़िम ने लाहौर में आकर अपनी निज़ामत का इस्तेफ़ा दाख़िल किया और सबब इसका यह बयान किया कि जमा बढ़ जाने और परमिट का बंदोबस्त दूसरी तरह पर हो जाने से उसको नुक़सान पड़ता था और मुल्तानियों का मुराफ़ा अर्थात् अपील लाहौर में सुने जाने से उन पर उसका पहला सा दबाव बाक़ी न रहा निदान इस्तेफ़ा मंज़ूर हुआ और अगन्यू साहिब और लेफ़्टिनेंट अंडर्सन साहिब इस मुराद से मुल्तान भेजे गये कि उस सूबे को मूलराज से लेकर सर्दार कान्हसिंह नये नाज़िम के सपुर्द कर दें अढ़ाई हज़ार पियादे और सवार और ६ तोपें उनके हमराह थीं उन्नीसवीं अप्रेल सन् १८४८ को १८४८ ई०
जब दोनों साहिबों ने क़िले के अन्दर जाकर बख़ूबी मुलाहज़ा कर लिया मूलराज ने उसको उनके सपुर्द किया वे गोरखाली पल्टन के दो कप्तानों को क़िले में छोड़कर बाक़ी आदमियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के साथ अपने डेरों की तरफ़ लौटे दीवान मूलराज और सर्दार कान्हसिंह दोनों साथ थे क़िले के दर्वाज़े से बाहर निकलते ही किसी सिपाही ने अगन्य साहिब को बर्छी और तलवार से घायल किया और फिर थोड़ी ही दूर आगे अन्डर्सन साहिब का भी यही हाल हुआ मुजरिम भाग गये साहिबों को उसके आदमी उठाकर डेरे में लाये मूलराज साहिब के पास जाने को तयार था लेकिन इसी अर्से में किसी ने उसके रिश्तदार रंगराम को जिसने उसे साहिब के पास जाने की सलाह दी थी ज़ख्मी कर दिया इस बात से डरकर मूलराज अपने मकान को चला गया दूसरे दिन सुबह को क़िले से अंगरेज़ी लश्कर पर [illegible] चलने लगे शाम तक अंगरेज़ी फ़ौज के सब लोग मूलराज से जा मिले कुल पचास तीस आदमी दोनों साहि[illegible]स रह गये इक्कीसवीं को मूलराज की फ़ौज ने निकल[illegible]र हमला किया और दोनों घायल साहिबों को उसी जग[illegible]र डाला जब कि यह ख़बर लाहौर में पहुंची उसी दम कु[illegible] फ़ौज शेरसिंह के साथ मुल्तान को रवाना की गयी और ब[illegible]पुर के नव्वाब को और ले[illegible] इडवार्डिस को जो उ[illegible]र था और फ़ीरोज़पुर की फ़ौ[illegible] हर तरफ़ से मदद के लिये कूच करने की ताकीद हुई इसी अर्से में लाहौर के दर्मियान रानी के आदमियों ने सरकारी फ़ौज के कुछ सिपाहियों से मिलकर इस तरह की साज़िश की कि एक ही दिन वहां सब साहिब लोगों को क़तल कर डालें लेकिन भेद खुल जाने के सबब रानी चंदा तो चनार के क़िले में क़ैद रहने के लिये * बनारस भेजी गयी और उसके आदमी गंगाराम खानसिंह और गुलाबसिंह फांसी

* चनार के क़िले से नयपाल भागी और वहां बहुत दिनों तक महाराज जंगबहादुर के पास रहकर दलीपसिंह के साथ इंगलिस्तान गयी वहां परलोक प्राप्त होने पर उसकी लाश दाहक्रिया के लिये गोदावरी के तार पंचवटी में आयी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिये गये बाक़ी मुफ़सिदों ने अपने अपने क़ुसूर के मुवाफ़िक़ सज़ा पायी अठारहवीं जून को देरेइस्माईलख़ां के पास लेफ़्टिनेंट इडवार्डिस से जो तीन हज़ार अफ़ग़ान लेकर बहावलपुर और लाहौर की फ़ौज के शामिल हो गया था मूलराज की लड़ाई हुई इस में मुल्तानियों ने शिकस्त खायी फिर इसके बाद अकसर लड़ाई हुआ की सब में बराबर मुल्तानियों की शिकस्त होती रही इस अर्से में सरकारी फ़ौज और तोपख़ाना भी आन पहुंचा और क़िले पर हल्ला होने का सामान बंधा लेकिन हज़ारे की तरफ़ सर्दार चतरसिंह के बाग़ी हो जाने से और मुल्तान में उसके बेटे शेरसिंह के लाहौर का फ़ौज समेत सरकारी लश्कर से जुदा होकर मूलराज के शामिल हो जाने से जेनरल ह्विलर ने जो अंगरेज़ी फ़ौज का कमांडिंग अफ़सर था क़िले पर हल्ला करना कुछ और फ़ौज की कुमक पहुंचने पर [illegible] रक्खा शेरसिंह सच्चे दिल से मूलराज के पास गया था प[illegible] ने इसका एतिबार न किया और क़िले से बाहर निकल[illegible] १६ का हुक्म दिया इस कारन शेरसिंह अपनी फ़ौज के साथ [illegible]ल्तान से निकल कर हज़ारे की तरफ़ अपने बाप चतरसिंह[illegible] पास चला गया इधर गुरु महाराजसिंह ने कुछ सिक्ख[illegible] करके होशयारपुर के नज़दीक लूट मार मचा दी उधर [illegible] के नज़दीक कई छोटे छोटे राजा बाग़ी हो गये पंजाब के दर्मियान हर तरफ़ फ़साद उठा और ग़दर मच गया अमीर दोस्तमुहम्मद के भाई सुल्तान मुहम्मदख़ां ने दग़ा करके मेजर लारंस और कई और साहिबों को सर्दार चतरसिंह के क़ाबू में फंसा दिया निदान बम्बई और सिन्ध इत्यादि से जो सब फ़ौजें जेनरल ह्विलर की मदद के लिये रवाना हुई थीं जब मुल्तान में पहुंच गयीं लड़ाई फ़िर शुरू हुई जिस दम सरकारी फ़ौज शहर के अन्दर दाख़िल हुई और क़रीब था कि क़िले पर हल्ला करे बाईसवीं जनवरी सन् १८४६ को मूलराज ख़ुद बख़ुद अपने आदमियों के साथ क़िला छोड़कर जेनरल १८४६ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहिब की ख़िदमत में हाज़िर हो गया ग़रज़ वह तो क़ैद करके लाहौर की तरफ़ भेजा गया और सरकारी फ़ौज शेरसिंह को सज़ा देने के लिये रवाना हुई रामनगर शाहदूल्हापुर और चेलियानवाले की जिन में फ़तह बराबर सरकार अंगरेज़ी को नसीब रही ऐसी सख़्त लड़ाइयां लड़ी गयीं कि हज़ारों हीं आदमी दोनों तरफ़ के मजरूह और मक़तूल हुए पर पिछली अर्थात् गुजरात की लड़ाई में सिक्खों का ज़ोर बिल्कुल टूट गया अटक की तरफ़ भागे जेनरल गिल्बर्ट साहिब ने ऐसा तेज़ पीछा किया कि चौदहवीं मार्च को सर्दार चतरसिंह और शेरसिंह तमाम मुफ़सिदों समेत उनकी ख़िदमत में चले आये [illegible] चलने लगे [illegible] सब हथियार सरल लोग मूलडने से जा [illegible] इन मुफ़सिदों की मदद के लिये [illegible] इस [illegible] दखां अपने बेटों समेत आया था और चत[illegible] पिशौर और अटक का क़िला उसके हवाले कर दिया था लेकिन सिक्खों के शिकस्त खाने पर क़िला पिशौर छोड़कर वह फिर अपने मुल्क की तरफ़ चला गया एक बेटा उसका गुजरात की लड़ाई में काम आया इसी अर्से में महाराजसिंह भी पकड़ा गया और पहाड़ी राजा भी अपने किये का सज़ा को पहुंचे ग़रज़ फ़साद की आग सब तरफ़ बुझ गयी और सूरत अमन अमान और चैन चान की फिर हर जानिब नमूदार हुई जब गवर्नर जेनरल ने देखा कि ये सिक्ख लोग जब तक ज़रा भी इख़्तियार रक्खेंगे फ़साद उठाने से बाज़ न आवेंगे हमेश की लड़ाई झगड़े में नाहक़ हज़ारों आदमी मारे जावेंगे नाचार पंजाब के मुल्क की ज़ब्ती का हुक्म सादिर फ़र्माया उन्तीसवीं मार्च को लाहौर में जारी और मुश्तहिर किया गया। क़िस्सा कोतह दलीपसिंह पांच लाख रुपया पिंशन मुक़र्रर होकर फ़र्रुख़ाबाद में रहने के लिये भेजा गया *

* वहां से ईसाई होकर इंगलिस्तान को चला गया और उसी जगह का रहना इख़्तियार किया॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और मूलराज अपने क़ुसूर की सज़ा पाने के लिये काले पानी रवाना किया गया * शेरसिंह और चतरसिंह कलकत्ते में नज़र-बन्द हुए और ख़ज़ाना और तोपख़ाना लाहौर का सब सरकार ने लिया कोहनूर हीरा श्रीमती इंगलैंडेश्वरी क्वीन विक्टोरिया के लिये नज़र भेजा गया ॥

लार्ड हार्डिंग इस अर्से में अठारहवीं जनवरी सन् १८४८ को विलायत चले गये थे और उनकी जगह पर लार्ड डलहौसी गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हो आये थे ॥

सन् १८५२ के शुरू में बर्म्हा के राजा के सूबेदार ने रंगून में अंगरेज़ी सौदागरों पर ज़ियादती की पहले उन से महसूल मामूल से ज़िया[illegible] मूलराज क[illegible] [illegible]ान किया और आख़िर [illegible] [illegible]ज़ी फ़ौज [illegible] डील [illegible] कमांडिंग अफ़सर था क़ि[illegible] [illegible] ने सात आठ हज़ार सिपाही जेनरल गाडवि[illegible] [illegible]ने पर [illegible] [illegible]ज़ों पर रवाना किये इन्हों ने पांचवीं अपरेल को [illegible] मूर्तबा[illegible] लिया और सातवीं को रंगून फ़तह किया रंगून में बर्म्हावालों की पच्चीस हज़ार फ़ौज थी और भी कई लड़ाईयां हुईं बर्म्हावालों ने सब जगह शिकस्त खायी सरकार फ़तहमंद रही यहां तक कि अट्ठाईसवीं दिसम्बर सन् १८५२ को गवर्नर जेनरल ने पेगू के सूबे की ज़ब्ती का इश्तिहार जारी कर दिया और फिर कुछ दिनों बाद बर्म्हा के राजा से सुलह का सिलसिला भी जारी हो गया ॥ १८५२ ई०

सन् १८५३ में साबिक़ सनद की मीआद पूरी हो जाने के कारन बादशाह के यहां से ईस्ट इंडिया कम्पनी को फिर नयी सनद मिली इसके बमूजिब तीस की जगह अठारह डैरेक्टर रहे उन में से भी छ बादशाह की तरफ़ से मुक़र्रर हुए और पांच पांच हज़ार रुपया साल उनकी तनख़ाह ठहरायी गयी चेअरमैन और डेपुटीचेअरमैन की दस दस हज़ार हुई बंगाले और पंजाब में एक एक लेफ़्टिनेंट गवर्नर रहने के लिये हुक्म हुआ लेजिसलेटिव कौंसिल के मिम्बरों का शुमार बढ़ाया गया १८५३ ई०

* रास्ते में मर गया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

१८५६ ई० सातवीं फ़ेब्रुअरी सन् १८५६ को जेनरल ऊटरम रज़ीडंट ने सरकार की तरफ़ से लखनऊ की बादशाहत अर्थात् अवध के मुल्क की ज़ब्ती का इश्तिहार जारी किया उसका सबब यह था कि बादशाह से सरकार की मर्ज़ी मुताबिक़ मुल्क का इन्तिज़ाम न हो सका और पहले किसी अहदनामे में यह शर्त दर्ज हो चुकी थी कि जब बादशाह से इन्तिज़ाम न हो सके सरकार अपना इन्तिज़ाम कर ले बहुतों का अब तक भी यही गुमान है कि सरकार को मुल्क लेना मंज़ूर था सबब बाइस कुछ न था मुल्क के साथ माल असबाब महल मकान जो कुछ था वह भी ज़ब्ती में आया और उसका [illegible] बादशाह कलकत्ते में जा बसा खाने के [illegible] लिये विलायत [illegible] लाख रुपया साल पिंशन मुक़र्रर [illegible] में यह [illegible] भाई मलिका से इंसाफ़ चाहने के [illegible] हाने के [illegible] पहुंचे वहां कौन कुछ सुनता था दोनों [illegible] मलिका पर निछावर कर गुज़रे ॥

१८५७ ई० अब कुछ हाल सन् १८५७ के बलवे का लिखा जाता है अंगरेज़ों को इसका बड़ा तअज्जुब है और अब तक उसके असली सबब की तलाश है सच है जिस मुल्क में एक क़ौम और एक मज़हब के आदमी बसते हैं उसी क़ौम और उसी मज़हब का बादशाह है और उसी क़ौम और उसी मज़हब की फ़ौज जहां की रअय्यत बादशाहत करती है और अपने बादशाह के लिये जब काम पड़े फ़ौज बन जाती है जहां की फ़ौज अपनी क़ौम के नाम के लिये सिर दे डालती है जहां के लड़के खेल भी तलवार और बंदूक से खेलते हैं और बहादुरी में दूसरी जगह के जवानों के कान काटते हैं जहां की एक एक बुढ़िया राज काज समझती है और उस में दख़ल देती है जिस काम में देखो "सौ स्याने एक मत" की मसल फबती है वहांवालों के जी में कभी इस बलवे का सबब न जमेगा वे लोग जब सुनेंगे कि बंगाल हाते की प्राय: सारी हिन्दुस्तानी फ़ौज जो नमक के लिहाज़ से सदा सरकारी कामों में जान तक देने को

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तयार रही और जिस अफ़सर ने ज़रा भी उसकी ख़ातिर की वह उसकी गलाम बन गयी एक चर्बी मले कार्तूस पर बिगड़ कर अपने अफ़सरों ही का गला काटने लगी फ़ौज के बिगड़ते ही मुल्क में हर तरफ़ ग़दर मच गया बदमग़ाशों ने लूट खसोट मचायी भले मानसों ने जो सरकार के बनाये बने हैं और सरकार के रक्खे रहे हैं जिनकी ख़ाहिश से सरकार ने इस मुल्क में अमल्दारी शुरू की और जिन्हों ने हमेशा सरकार की बढ़ती दौलत मनायी उसके दबाने में और सरकार को मदद देने में कुछ जवांमर्दी न दिखलायी जहां तन मन धन सरकार को अर्पन करना [illegible] तेरे दुम दबा कर अपने घरों के अन्दर जा दबके [illegible] दे को [illegible] ब करेंगे लेकिन हम हिन्दुस्तानी लोग बख़ूबी जानत [illegible] न भलेमानि [illegible] मुल्कवाले बिल्कुल दुनिया के काम बरन ख़ुद अपनी पूरी बिगड़ी [illegible] हुमा करने के लिये समझते हैं रुपया इज्ज़त के [illegible] वढ़ कर जान है और जान से बढ़कर धर्म्म जैसा हम लोगों की इज्ज़त का बिल्कुल निचोड़ अब औरतों की पर्दादारी पर आ रहा है कि उनको बे पर्दगी से उनका मार डालना बिहतर समझते हैं तीन बार चित्तौड़ के क़िले में जौहर हुआ और तेरह तेरह हज़ार तक औरतों ने एक साथ अपने तईं अग्निकुंड में जलाया उसी तरह हम लोगों के सारे धर्म्म का निचोड़ अब हम लोगों के मुंह में आ रहा है मानों स्वर्ग और नर्क का यही मुंह दर्वाज़ा बन गया है अगर शकरक़न्द खायं स्वर्ग में जायं अगर शलग़म चखें नर्क में पड़ें अगर चूल्हे के गिर्द एक लकीर खींच कर रोटी खावें स्वर्ग पावें अगर कहीं उस लकीर के अन्दर दूसरी क़ौम का पैर पड़ जाय और फिर रोटी गले से नीचे उतरे नर्क में गिरें गाय का गोबर गाय का मूत मुंह में दें सारा पाप धुल जाय उसी गाय की चर्बी कहीं ओंठ से लगे जीता आदमी राचस गिना जाय पस अगर सिपाहियों ने चर्बी मले कार्तूस मुंह में देने से इन्कार किया तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस में तअज्जुब कौन सा है अंगरेज़ी में " ग्रीज़ " चिकनाई को कहते हैं चाहे वह चर्बी की हो चाहे तेल अथवा घी की इंगलिस्तान में चिकनाई की जगह बहुधा चर्बी ही काम में लाते हैं और तेल भी अधिक चर्बी ही का बनाते हैं घी को तो नाम नह जानते मक्खन खाने ही से कब बच सकता है और तीसी सरसों इत्यादि का तेल बहुत महंगा बिकता है निदान जिस तरह पर तोड़ेदार के बदल पथरकला और पथरकला के बदल टोपीदार अर्थात् पटाके की बंदूकें फ़ौज को दी गयी थीं उसी तरह अब एक क़िस्म की नयी बंदूक़ जिसे इंफ़िल्ड रफ़ल कहते हैं और जिसका निशाना सब से ज़ियादा दूर जाता है फ़ौज के लिये विलायत से मंगवायी गयीं उसके चलाने की तर्कीब में यह भी लिखा आया कि बंदूक़ की नली तंग होने के कारन कार्तूस में " ग्रीज़ " अर्थात् कुछ चिकनाई ज़रूर लगानी चाहिये नहीं तो बीच ही में फस रहेगा यहां कलकत्ते की मेगज़ीन के साहिबों ने अपने मुल्क के दस्तूर बमूजिब कार्तूसों में चर्बी की चिकनाई लगवा दी उन बेचारों ने कभी यह न सुना था कि चर्बी नर्क का मूल और मक्खन धर्म्म के जहाज़ का मस्तूल है नहीं तो उनको चर्बी की जगह मक्खन काम में लाना क्या कठिन था जब फ़ौज बिगड़ गयी मुल्क में ग़दर मचा ही चाहे अगर आज फ़रंगिस्तान की किसी विलायत में इस ढब फ़ौज बिगड़ जाय आज इस से अधिक ग़दर देख लो बदमआश सब जगह हैं फिर लूट खसोट में क्या देर थी और यदि पूछो कि भला फ़ौज तो धर्म्म जाने के सच्चे ख़ाह झूठे डर से बिगड़ी और बदमआशों ने लूट खसोट के लिये ग़दर मचाया लेकिन भलेमानसों ने किस लिये उसके दबाने में और सरकार को मदद देने में कुछ जवांमर्दी न दिखलायी तो पहले ज़रा यह सोचना चाहिये कि ये लोग मदद दे क्या सकते थे और जवांमर्दी दिखला क्या सकते थे यह फ़रंगिस्तान थोड़ी है कि जहां की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

औरतें भी तीरंदाज़ होती हैं मर्द तो गोया वहां सिपाही का दूसरा नाम है हमारे भलेमानस भाई बनिये महाजन दूकान्दार मुंशी मुत्सद्दी लाला बाबू यदि लिखना पढ़ना न सीखा कांटा बांट लेकर जिंस तोलने लगे बंदूक़ तलवार का भेद क्या जानें अगर कभी छोड़ें चलवें अपना ही मुंह झुलस दें या अपना ही बदन काट डालें चत्री ब्राम्हण भी जो खाने पीने से खुश हैं पड़े चैन करते हैं या सौ तरह के दूसरे धंधों में फसे हैं हथियार की जन्म भर सूरत न देखी बरन सिपाहगरी को बड़े हतक की बात समझी राजा महाराजों ने अपना काम नाचना गाना या घंटा हिलाना समझा लड़ना भिड़ना पांच रुपये महीने के पियादे को सौंपा जहां दस तिलंगे या दस सवार सरकारी चढ़ जाते इन भलेमानसों का मेले का मेला जूते छोड़ कर भागता पस सरकारी सारी बिगड़ी हुई फ़ौज के मुक़ाबले में यह किस मरज़ की दवा थे इनको तो अपनी जान की पड़ गयी दुम दबा दबा कर घरों में दबके लेकिन सरकार की जय रात दिन मनाते रहे क्योंकि सरकार हा की जय से इनकी जय और इनका कुशल मंगल है हां यह अलबत्ता कह सकते हो कि अगर मार नहीं सकते थे तो मर तो सकते थे कुछ तो सरकार की ख़ैरख़ाही का सुबूत दिखलाते तो उसका यह जवाब है कि जब से मनु ने वर्ण विभाग किया मरने मारने का काम चत्रियों ही का रहा ब्राम्हण वैश्य शूद्र का यह धर्म्म नहीं ठहराया गया इन्हों ने इतना ही उचित समझा कि जब जिस काल में जो राजा हुआ जी से उसका आदेश माना जहां जिसके नाम की डौंड़ी फिरी इन्हों ने अपने तईं उसी की प्रजा गिनी राजा भी इस कलिकाल में चत्रियों से लेकर शूद्र तक इतनी जाति के हो गये और फिर इस हज़ार बरस के अन्दर पठान मुग़ल मरहठे इत्यादि के राज भी ऐसा जल्द जल्द बिगड़े कि उन सब के आधीन रहते रहते इनका यह स्वभाव पड़ गया एक राज का बिगड़ना दूसरे का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनना इनके लिये केवल एक तमाशा हुआ इनका वह हक़ ही नहीं जिसके वास्ते इंगलिस्तानवाले अपने बादशाह चार्लस से लड़े थे इनको उस आज़ादी की चाह ही नहीं जिसके लिये फ़रासीसवाले अपने बादशाह लूई से फिर गये थे यहां उस एके और इत्तिफ़ाक़ का सामान ही संभव नहीं जिसने इटाली की सल्तनत पैदा की हम लोगों की भाषा में उस "पेट्रिआटिज़्म" के लिये कोई शब्द ही नहीं जिसके लिये अब भी पोलैंडवाले कट मर रहे हैं * हम लोगों ने तो अपने सिरों में चुंदियां रखवा ली हैं जिसने चुंदी थाम ली उसी के गुलाम बन गये जब मुहम्मद तुग़लक़ से पागल और नादिरशाह से ज़ालिम बादशाहों की गुलामी से भी इन्हों ने इन्कार न किया तो औरों का तो क्या कहना है यह इसी ग़रीबी और आधीनता का फल है कि मानों भगवान ने हम लोगों पर लहै खाकर जैसे कोई भेड़ को कसाई से छुड़ाता है जाति जाति के अन्यायी निष्ठुर निर्दयी राजाओं से पिंड छुड़ाके [illegible]बहादुर से न्यायी और दयावान के शरण में ला डाला सच जानो [illegible] केवल भगवान की कृपा है इस में हम लोगों को अपने बल [illegible]रुष की कुछ भी शेख़ी नहीं है हम लोगों का बल पौरुष तो हम लोगों की यही ग़रीबी और आधीनता है ॥

निदान बाईसवीं जनवरी सन् १८५७ को सत्तहवीं पलटन के कप्तान रैट साहिब ने अपने कमांडिंग अफ़सर मेजर बांटीन को इस मज़मून का रिपोर्ट लिखा कि यहां दमदमे में † जो इंफ़ील्ड रफ़ल चलाना सिखलाने के लिये हुक्म जारी हुआ है हिन्दुस्तानी सिपाही बहुत घबरा गये हैं किसी बदमआश ने अफ़वाह उड़ा दी कि कार्तूसों में गाय और सूवर की चर्बी लगी है और सिपाहियों को अफ़वाह पर निश्चय

* इन सब बातों का मुफ़स्सल हाल फ़रंगिस्तान का इतिहास पढ़ने से मालूम होगा ॥

† कलकत्ते से तीन कोस पर जहां तोप ख़ाना रहता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आ जाने का यह कारन हुआ कि मेगज़ीन के किसी ख़ल्लासी ने वहां एक सिपाही से पानी का लोटा मांगा सिपाही ने देने से इन्कार किया ख़ल्लासी ने कहा कि भला लोटा देने में तो तुम जात जाने से डरते हो लेकिन जब सूअर और गाय की चर्बी लगे हुए कार्तूस दांत से काटने पड़ेंगे तब तुम्हारी बड़ी जात रहेगी कल रात के अक्सर सिपाही मुफ़ से यह भी कहते थे कि साहिब यह ख़बर हिन्दुस्तान में मशहूर हो गयी अब हम घर जायंगे तो हमारे साथ कोई खायगा पीयेगा नहीं मैं ने उनको समझाया कि चर्बी भेड़ी की है और उस में सिर्फ़ मोम मिला है इस पर उन सिपाहियों ने यही जवाब दिया कि साहिब सच है लेकिन अब हमारे भाई बन्द इस बात पर यक़ीन न लावेंगे आप हम को तर्कीब बतला दीजिये हम बज़ार से मसाला लेकर अपने हाथ से बनालें तो हम को उन से कहने की जगह हो कि इन कार्तूसों में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिस से जात जाय इस रिपोर्ट के दो एक दिन पीछे जब परेड पर पूछा गया तब भी सिपाहियों ने यही कहा कि चर्बी में हम लोगों के शुबहा पड़ गया चर्बी की जगह कार्तूस में तेल और मोम लगाया जाय जेनरल हिअर्सी ने इस बात की इत्तिला डेपुटी एजुटंट जेनरल से की और जो कुछ सिपाहियों ने चाहा था उसकी मंज़ूरी मांगी उन्हों ने तीन रोज़ तो इस मुआमले के ग़ैार में रक्खा उसके बाद मिलिटरी सेक्रिटरी के पास भेजा मिलिटरी सेक्रिटरी ने सत्ताईसवीं जनवरी के जवाब लिखा कि गवर्नर जेनरल बहादुर ने बइज-लास कौंसल जेनरल हिअर्सी की तजवीज़ मंज़ूर फ़र्मायी और सियालकोट और अम्बाले में भी कि जहां ईफ़िल्ड रफ़ल चलाना सिखलाने के लिये हुक्म हुआ है अगर सिपाही चाहें यही तदबीर अमल में लायी जाय अगर कहीं उसी दम इसका गज़ट में इश्तिहार हो जाय और सिपाहियों के यह सारा हाल मुफ़स्सल समझाया जाय हर्गिज़ बलवा न होने पावे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बारहवीं को फ़तहपुर में और पंदरहवीं को पांडू नद्दी के कनारे नान्हा के आदमियों को और सोलहवीं को कानपुर के बाहर खुद नन्हा को शिकस्त देते सत्तरहवीं को कानपुर में दाख़िल हुए और फिर लड़ते भिड़ते हटते और बढ़ते जेनरल ऊटरम के आ जाने पर चौबीसवीं सिप्तम्बर को लखनऊ पहुंच कर बेलीगार्डवालों के शामिल हो गये [illegible] नवम्बर को नये कमांडरइन्चीफ़ सर कालिन्कैम्बल जो [illegible] और [illegible] ने लाते हैं तीन चार हज़ार आदमियों के [illegible] में तिजारत हो कर लखनऊ पहुंचे और जो लोग [illegible] ने इस सारे हिन्दुस्तान बड़ी हिक्मत और [illegible] जहान की [illegible] सल्तनत अपने ऐसे भारी [illegible] मिती इङ्गलैंड [illegible] क्वीन विक्टोरिया को (ईश्वर [illegible] बढ़ावे प्रताप उसका) नज़र की दूसरी अगस्त १८५८ [illegible] यह आज्ञा दी कि अब तेइन्दा ईस्ट इंडिया कम्पनी की [illegible] हिन्दुस्तान [illegible] के ज़ेर करने से फ़ुर्सत [illegible] [illegible] फिर कोई बीस हज़ार सिपाह और दो [illegible] नऊ की तरफ़ रवाना हुए और शुरू मार्च [illegible] उन्होंने मोर्चे जा जमाये उधर नयपाल से महाराज सर [illegible] बहादुर भी कि जिनको सच मुच जंगबहादुर कहना चाहिये सात आठ हज़ार गोरखे सिपाही मरने मारनेवाले लेकर सरकार की मदद के लिये लड़ते भिड़ते सरकार के दुश्मनों को ज़ेर करते वहां आन पहुंचे छठी से लड़ाई शुरू हुई ग्यारहवीं को लोहे के पुल पर सरकारी क़ब्ज़ा हो गया चौदहवीं पंदरहवीं और सोलहवीं को बड़ी कड़ी कड़ी लड़ाई रही घर घर से गली कूचों में गोली चला की इधर सरकारी जवानों को गुस्सा उधर बाग़ियों को नाउमेदी सिवाय कटने काटने के और कुछ बात न थी लूट सरकारी फ़ौज को खूब हाथ लगी बेगम और बिर्जीसक़दर नन्हा समेत नयपाल की तरफ़ भाग गये जो बाग़ी सरकारी सिपाह के हथियारों से बचे तराई में जंगली जानवरों के ग्रास हुए अथवा रोगग्रस्त हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होकर मर गये दिल्ली और लखनऊ के टूटने से मानों बाग़ियों की कमर टूट गयी लड़ाई बहुत हुई लेकिन सरकारी बहादुरों ने हर तरफ़ बाग़ी और बलवाइयों को शिकस्त पर शिकस्त दी निदान जहां जहां फ़साद उठा था १८५८ के आख़िर होते होते सब आख़िर हो गया और सरकारी इन्तिज़ाम और दबदबा जैसा बलवे और गदर के पहले था उस से भी अत्यन्त अधिक और अफ़्रीका और ॥

आधीन है और सों पार्लीमेंटवालों की यह राय ठहरी कि

ज्योंकि कई तरह के [illegible] कम्पनी से ले ली जाय सच है और राज्य स[illegible] प्रधानों और [illegible] लेना था वह पूरा पार्लीमेंट में जमा हुए सलाह और [illegible] के अन्दर है कि हिन्दुस्तान के मुल्क का बंदोबस्त जो हु[illegible] और तक आनरेबल ईस्ट इंडिया कम्पनी को [illegible] था [illegible] में लोग गाय भी [illegible] खेतियां होती हैं जहां ज़मींदार नित [illegible] और [illegible] करते [illegible] इल्लत में पकड़े बांधे जाते थे वहां अब [illegible] के बमूजिब उन्हीं बदौलत क़िस्त ब क़िस्त मालगुज़ारी अदा [illegible] सोते हैं जिन रास्तों में बकरी का गुज़र न था वहां बग्गियां दौड़ती हैं जहां अशरफ़ियों को बहली मयस्सर न [illegible] आनों पर रेल गाड़ियां हाज़िर हैं जहां क़ासिद नहीं चलस[illegible] था वहां तार की डाक लग गयी जहां क़ाफ़िलों [illegible] हिम्मत नहीं पड़ती थी वहां अब एक एक बुढ़िया सोना उछालती चली जाती है जहां हज़ारों की तिजारत होती थी वहां करोड़ों की नौबत पहुंच गयी जिन्हें दिन भर मज़दूरी करने पर भी पाव भर सत्तू या चना मिलना कठिन था उनकी उजरत अब चार आने रोज़ और आठ आने रोज़ से कम नहीं जिन किसानों की कमर में लंगोटी दिखलाई नहीं देती थी उनकी घरवालियां गहने झमकाती फिरती हैं क्या पुल और क्या नहर क्या मुसाफ़िरख़ाने और क्या दारुश्शिफ़ा क्या पुलिस और क्या कचहरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE